परिचय पुस्तिका

राज्य संग्रहालय, लखनऊ

स्थापना वर्ष - 1863
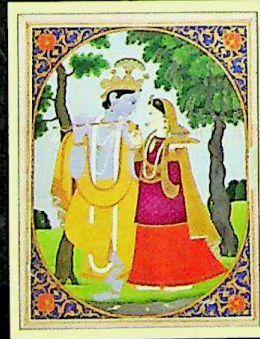
अल शाज़ फ़ात्मी

आनन्द कुमार सिंह

परिचय पुस्तिका

राज्य संग्रहालय, लखनऊ
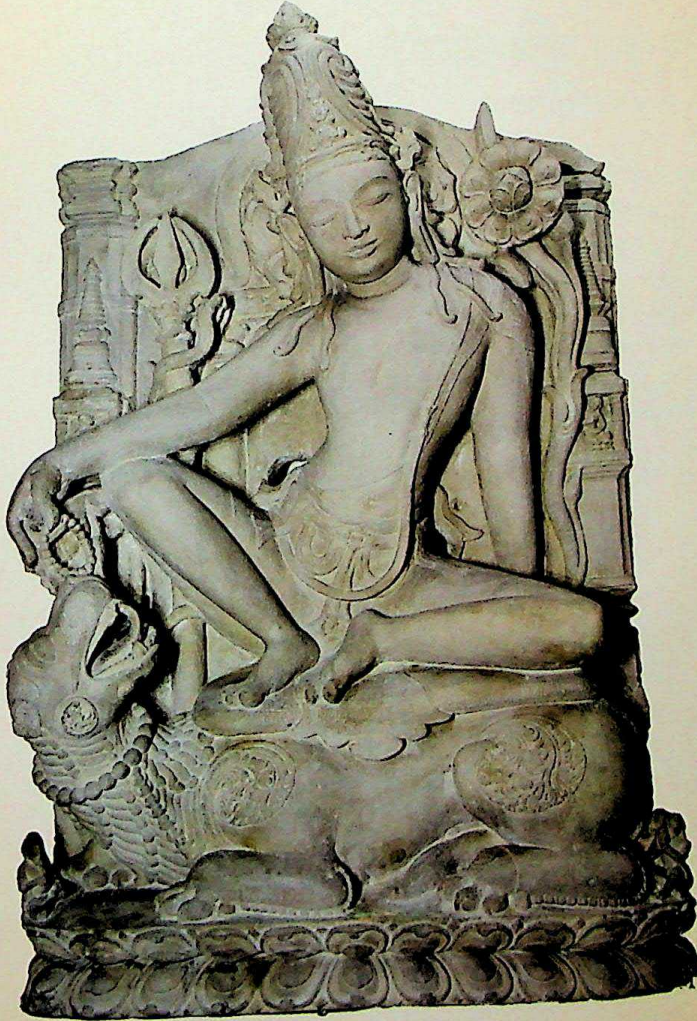
सिंहनाद अवलोकितेश्वर
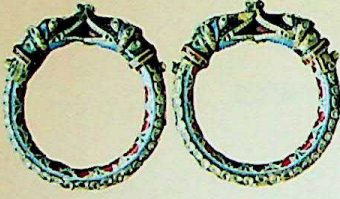
परिचय पुस्तिका

(राज्य संग्रहालय, लखनऊ)

आवरण पृष्ठ चित्र बायें से दायें

सिंहनाद अवलोकितेश्वर

अलंकृत सरौता

भीतरी सील

शिव–नन्दी प्रकार का स्वर्ण सिक्का

लौह निर्मित स्वर्ण पॉलिश युक्त बुद्ध मस्तक

कृष्ण को पान खिलाती राधा, कांगड़ा शैली, लघुचित्र

नवाब आसफ़–उद–दौला, अवध शैली, लघु चित्र

साइबेरियन सारस

धातु का अलंकृत लोटा

प्रकाशक : राज्य संग्रहालय, लखनऊ

प्रकाशन वर्ष : 2019

मूल्य : ₹160.00 (रुपये एक सौ साठ)

मुद्रक :
प्रकाश पैकेजर्स,
257, गोलागंज
लखनऊ–226018
फोन नं. : 0522–2200425

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.

हाथीदांत निर्मित योगमाया

नल-दमयंती विवाह, मुगल शैली, लघु चित्र

लक्ष्मी नारायण चौधरी
मंत्री
दुग्ध विकास, अल्पसंख्यक कल्याण,
मुस्लिम वक्फ, हज, संस्कृति एवं
धर्मार्थ कार्य, उत्तर प्रदेश

कार्या.– 92 बी, मुख्य भवन, उ.प्र. सचिवालय
दूरभाष– 0522– 2238989/ 2213293
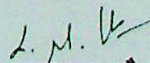
दिनांक–...

संदेश

संग्रहालय हमारी धरोहरों को संजोने, सुरक्षित रखने एवं उनके प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अन्य संग्रहालयों की भांति राज्य संग्रहालय, लखनऊ भी विगत 150 वर्षों से देश–विदेश के विभिन्न क्षेत्रों, सभ्यताओं की सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक धरोहरों को संजोकर सुरक्षित रखते हुए नित–प्रतिदिन सफलता के नये आयाम जोड़ रहा है। संग्रहालय आम जनमानस को उनके इतिहास से परिचित कराने में निरन्तर प्रयासरत् है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु संग्रहालय द्वारा समय–समय पर स्थाई एवं अस्थाई प्रदर्शनी, व्याख्यान, संगोष्ठी, कार्यशालाएं, कला अभिरूचि पाठ्यक्रम आदि आयोजित किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त संग्रहालय का उद्देश्य उन लोगों तक भी पहुँचना होता है, जो संग्रहालय तक नहीं पहुँच पाते हैं, जिनके लिए संग्रहालय द्वारा विविध प्रकाशन भी किये जाते हैं।

मुझे अत्यन्त हर्ष है कि राज्य संग्रहालय, लखनऊ द्वारा संग्रहालय की कलाकृतियों एवं कार्य–कलापों पर आधारित यह परिचय पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तिका के माध्यम से पाठकों को संग्रहालय के विषय में निश्चय ही महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकेगी। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि राज्य संग्रहालय की परिचय पुस्तिका संग्रहालय प्रेमियों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। इस अभिनव प्रयास के लिए मैं राज्य संग्रहालय के निदेशक डॉ0 आनन्द कुमार सिंह एवं सहायक निदेशक (प्राणिशास्त्र) श्रीमती अल शाज़ फ़ात्मी को बधाई देता हूँ।

L. N. K

(लक्ष्मी नारायण चौधरी)

बौद्ध देवता मंजुश्री, धातु

जितेन्द्र कुमार
आई.ए.एस.
प्रमुख सचिव।

अर्द्धशा०प०सं०-1026
संस्कृति, भाषा, उ0प्र0पु0स0 एवं सामान्य प्रशासन
उत्तर प्रदेश शासन
कक्ष सं० 64, नवीन भवन, सचिवालय,
दूरभाष सं0 0522-2239298 फैक्स : 2235453
लखनऊ दिनांक : 29-03-2019

संदेश

देश की नयी पीढ़ी को अपनी सभ्यता, संस्कृति एवं गौरवशाली अतीत से परिचित कराना प्रत्येक जागृत एवं गतिशील समाज का नैतिक दायित्व है। हमारे संग्रहालय प्रकारान्तर से इस दायित्व की पूर्ति का एक विशिष्ट माध्यम रहे हैं। अपने अतीत के गौरवशाली अध्यायों से सुपरिचित कराकर देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करना प्रत्येक लोक कल्याणकारी राज्य का मूलभूत कर्तव्य है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों को विभिन्न माध्यमों से अधिग्रहीत कर संरक्षित और प्रदर्शित करने के उद्देश्य से संग्रहालयों की स्थापना की जाती रही है।

धरोहरों के संरक्षण के उद्देश्य से राज्य संग्रहालय, लखनऊ की स्थापना वर्ष 1863 में की गयी थी। जो देश के प्राचीनतम संग्रहालयों में से एक है। इस संग्रहालय में देश–विदेश की सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों का एक उत्कृष्ट संग्रह संरक्षित है।

संग्रहालय अनौपचारिक रूप से ज्ञान प्राप्त करने का एक अभूतपूर्व साधन है। संग्रहालय भ्रमण पर आने वाले पर्यटक, दर्शक, छात्र यहां की स्मृतियों को संजोये रखने के उद्देश्य से यहाँ की कुछ प्रकाशन सामग्री भी ले जाने की इच्छा रखते हैं। वास्तव में थोड़े समय में संग्रहालय में प्रदर्शित कलाकृतियों के सम्बन्ध में समुचित जानकारी करना और उसे अपनी स्मृतियों में बनाये–बचाये रख पाना संभव नहीं हो पाता है। अतः स्वाभाविक रूप से संग्रहालय आने वाले जिज्ञासु वहाँ उपलब्ध मुद्रित सामग्री अपने साथ ले जाने के इच्छुक होते हैं।

यह अत्यंत सुखद और सन्तोषप्रद है कि पर्यटकों, छात्रों एवं शोधार्थियों की जिज्ञासा को ध्यान में रखकर राज्य संग्रहालय, लखनऊ द्वारा अपने प्रदर्शों पर आधारित एक जनोपयोगी परिचय पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह परिचय पुस्तिका आम पाठकों और छात्रों के साथ ही विशेष जानकारी के इच्छुक शोधार्थियों के लिए भी निश्चित रूप से उपयोगी सिद्ध होगी। इसके प्रकाशन के लिए मैं राज्य संग्रहालय के निदेशक डॉ0 आनन्द कुमार सिंह और सहायक निदेशक (प्राणिशास्त्र) श्रीमती अल शाज़ फ़ात्मी को बधाई और शुभकामना देता हूं।

(जितेन्द्र कुमार)

रागमाला, पहाड़ी शैली, लघु चित्र

शिशिर
आई.ए.एस
विशेष सचिव

संस्कृति विभाग उ0प्र0 शासन
कक्ष सं0 707, बापू भवन
सचिवालय
दूरभाष सं0 0522–2237086

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राज्य संग्रहालय, लखनऊ द्वारा संग्रहालय की एक परिचय पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को एक स्वरूप प्रदान करने में संग्रहालयों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सन् 1863 ई. में अपनी स्थापना के उपरान्त से ही राज्य संग्रहालय, लखनऊ प्रदेश के साथ राष्ट्रीय संस्कृति के विविध स्वरूपों के संरक्षण तथा प्रदर्शन में अपनी भूमिका का सतत निर्वहन कर रहा है।

संग्रहालय द्वारा पर्यटकों एवं बुद्धिजीवियों के उपयोगार्थ इस परिचय पुस्तिका का प्रकाशन कराया जाना एक सराहनीय कदम है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसके माध्यम से संग्रहालय भ्रमण हेतु आने वाले दर्शकों को संग्रहालय के इतिहास, संग्रहीत पुरावशेषों व कलावस्तुओं तथा गतिविधियों की जानकारी सहज रूप में प्राप्त हो सकेगी।

मैं इस परिचय पुस्तिका के प्रकाशन हेतु राज्य संग्रहालय, लखनऊ के निदेशक डॉ आनन्द कुमार सिंह एवं सहायक निदेशक (प्राणिशास्त्र) श्रीमती अल शाज़ फ़ात्मी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

Shishir
(शिशिर)
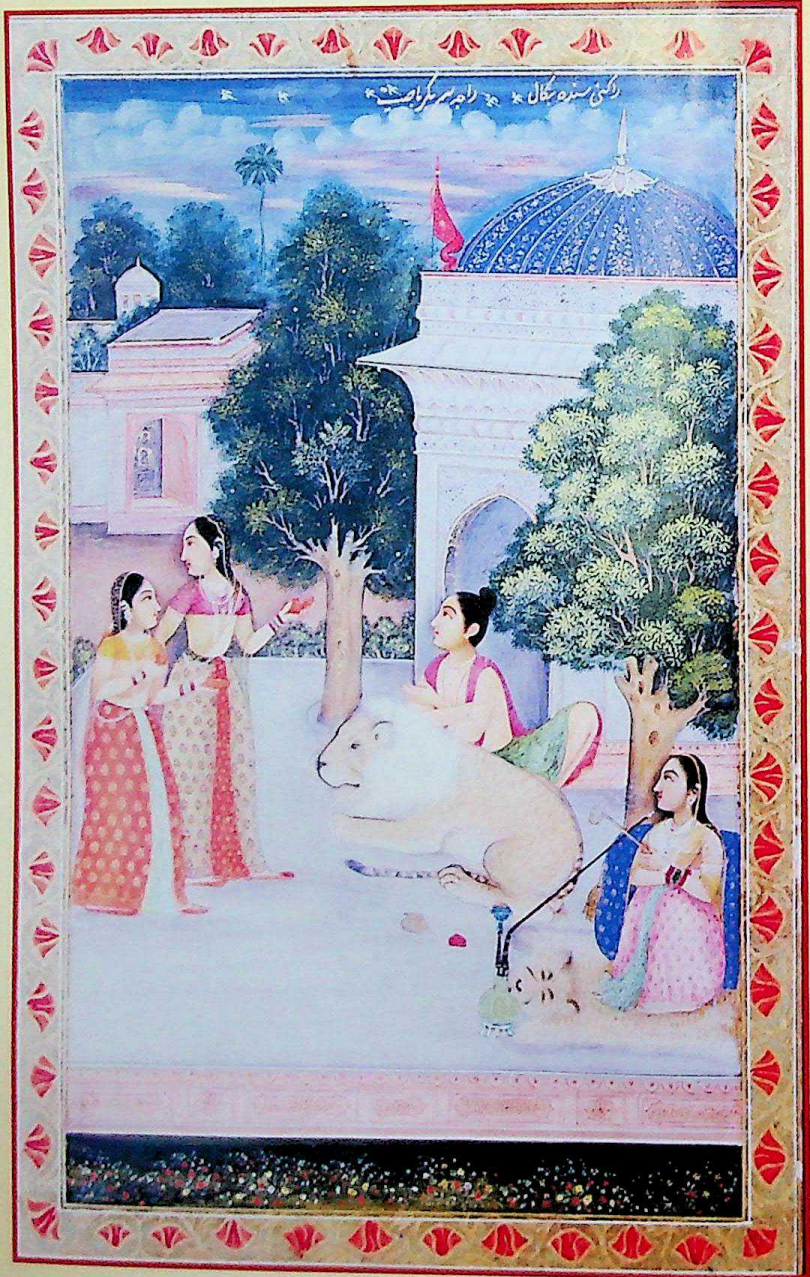
रागिनी सिहुति, पहाड़ी शैली, लघु चित्र

प्राक्कथन

राज्य संग्रहालय, लखनऊ की स्थापना उत्तर पश्चिम प्रान्त एवं अवध के लखनऊ डिविज़न के कमिश्नर कर्नल एब्बोट द्वारा वर्ष 1863 में एक म्यूनिसिपल संग्रहालय के रूप में छोटी छत्तर मंजिल में की गई थी। राज्य के इस बहुउद्देशीय एवं प्राचीनतम संग्रहालय की गणना भारत के प्रमुख संग्रहालयों में की जाती है।

संग्रहालय के संग्रह को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से वर्ष 1880 में म्यूनिसिपल संग्रहालय इलाहाबाद से कुछ कलाकृतियां यहां लायी गयीं। सन् 1883 में इसे प्रान्तीय संग्रहालय घोषित किया गया एवं सन् 1884 में इस संग्रहालय को छोटी छत्तर मंजिल से लाल बारादरी के भव्य भवन में स्थानान्तरित किया गया। 30 मार्च, 1885 को संग्रहालय के प्रथम संग्रहालयाध्यक्ष के रूप में महान पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. ए.ए. फ्यूहरर की नियुक्ति हुई, जिनकी देख–रेख में संग्रहालय के संकलन में पर्याप्त वृद्धि हुई। इसके पूर्व संग्रहालय के प्रशासकीय अधिकारी, अधीक्षक कहे जाते थे। राज्य संग्रहालय, लखनऊ के बनारसीबाग स्थित नवीन भवन का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री प. जवाहर लाल नेहरू द्वारा वर्ष 1963 में किया गया।

वर्तमान में संग्रहालय में निम्नवत संग्रह संग्रहीत हैं–प्राणिशास्त्र, पुरातत्त्व, मुद्राशास्त्र, सज्जाकला एवं कलात्मक वस्तुएं। इस परिचय पुस्तिका के माध्यम से संग्रहालय के सभी अनुभागों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है।

प्राणिशास्त्र संग्रह में दुर्लभ जीव–जन्तु, मानवशास्त्र, भूगर्भ विज्ञान एवं मिस्र की सभ्यता से सम्बन्धित कलाकृति/स्पेसीमेन संरक्षित हैं। अनुभाग में कौतुहल का मुख्य विषय मिस्र देश की 13 वर्ष की लड़की की एक ममी है। जिसके ताबूत पर उत्कीर्ण चित्रलिपि एवं ममी के बनाये जाने की पद्धति (ममीफ़िकेशन) से यह अनुमान लगता है, कि सम्भवतः यह किसी राज परिवार की होगी।

पुरातत्त्व संग्रह के अन्तर्गत प्रागैतिहासिक काल के औज़ार, जीवाश्म, मनके, मुहरें, ताम्र कालीन कलाकृतियां, मृण्पात्र, विभिन्न काल की प्रस्तर एवं मृण्मूर्तियाँ, शिलालेख, ताम्रपत्र आदि पुरावशेष सम्मिलित हैं। संग्रहालय के संकलन में हड़प्पा संस्कृति के कुछ अवशेषों की अनुकृतियाँ भी उपलब्ध हैं। पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त विभिन्न प्रकार के मृण्पात्रों के नमूने यहाँ संग्रहीत हैं। संकलन में मनके एवं मथुरा के कंकाली टीला से प्राप्त कुषाणकालीन मूर्तियों का महत्वपूर्ण संग्रह संग्रहीत है। जैन, बौद्ध एवं हिन्दू देवी–देवताओं की दुर्लभ प्रस्तर प्रतिमाएं एवं मृण्मूर्तियां संग्रहालय में संग्रहीत हैं, जिसमें मथुरा से प्राप्त आदमकद बोधिसत्व, मानकुवंर (श्रावस्ती) से प्राप्त कुमारगुप्त द्वितीय के समय की अभिलिखित बुद्ध प्रतिमा एवं द्वितीय शताब्दी ई. मथुरा से प्राप्त लाल चित्तीदार बलुए पत्थर की बलराम की प्रतिमा विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

गुलाबपाश, धातु

राज्य संग्रहालय, लखनऊ का मुद्रा संकलन अत्यन्त समृद्ध है, जिसमें समय–2 पर प्रदत्त भेंट, क्रय तथा निखात निधियों के माध्यम से संग्रह होता रहा है। वर्तमान में इस संकलन में भिन्न–भिन्न धातुओं के अधसंख्य सिक्के संग्रहीत हैं। प्राचीन आहत सिक्कों के विविध प्रकार, दुर्लभ इण्डोग्रीक सिक्के एवं कुषाण कालीन सिक्कों का समृद्ध संग्रह इस संग्रहालय की शोभा बढ़ाता है। गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्के, सम्राट हर्ष का ताम्र सिक्का, आदिवराह प्रकार का राजा भोज का स्वर्ण सिक्का आदि विशेष रूप से दृष्टव्य है। अकबर की मेहराबी मोहर के कई माप के नमूने संकलन में मौजूद हैं। विभिन्न प्रकार के पदकों का भी इस संकलन में एक विशिष्ट संग्रह है, जिसमें ग़ाज़ि–उद्–दीन हैदर के राज्याभिषेक का पदक विशेष महत्व रखता है।

राज्य संग्रहालय के संकलन में अवध एवं अन्य क्षेत्रों के अस्त्र–शस्त्र, वाद्ययन्त्र, हाथीदांत, काष्ठ एवं धातु निर्मित कलाकृतियाँ, कलात्मक वस्तुएं, अवध क्षेत्र तथा भारत के अन्य भागों में प्रचलित परिधान आदि का अनूठा संग्रह है। जामदानी तथा चिकनकारी के अत्यधिक प्राचीन नमूने भी यहाँ संग्रहीत हैं।

संग्रहालय में शोधार्थियों हेतु एक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसमें कला, इतिहास, पुरातत्त्व, प्राणिशास्त्र, चित्रकला आदि विषयों पर आधारित दुर्लभ पुस्तकें संग्रहीत हैं। देश के अन्य बड़े संग्रहालयों के प्रारूप पर राज्य संग्रहालय, लखनऊ में भी रसायनशाला अनुभाग, छायाचित्र अनुभाग, अनुकृति अनुभाग, संग्रहालय की अमूल्य धरोहरों पर आधारित प्रकाशन हेतु प्रकाशन अनुभाग एवं सोविनियर शॉप की स्थापना की गई है।

संग्रहालय द्वारा अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से इतिहास, कला एवं संस्कृति के ज्ञान को आम जनमानस, शोधार्थियों एवं छात्र–छात्राओं तक पहुँचाने के लिये संग्रहालय सतत् प्रयासरत् रहता है। इस हेतु राज्य संग्रहालय में वर्ष पर्यन्त विभिन्न विषयों पर अधिकृत विद्वानों द्वारा व्याख्यान, समय–समय पर संगोष्ठी / विचारगोष्ठी, कार्यशाला, डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म आदि का आयोजन किया जाता है।

इस परिचय पुस्तिका के माध्यम से पाठकों को संग्रहालय में संग्रहीत कलाकृतियों एवं संग्रहालय के कार्य–कलापों के विषय में एक संक्षिप्त विवरण उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है, ताकि दर्शकों को संग्रहालय के विषय में रूचिकर जानकारी उपलब्ध कराई जा सके।

पुस्तिका के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले सम्बन्धित जनों के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं। पुस्तिका को इस रूप में प्रस्तुत करने में डॉ. मनोजनी देवी, प्रकाशन सहायक, श्री शारदा प्रसाद त्रिपाठी, फोटो अधिकारी, श्री प्रमोद कुमार, फोटोग्राफर, श्री ज्ञान चन्द गोण्ड, रसायन सहायक, श्री सुनील कुमार रावत, श्री अखिलेश कुमार, कनिष्ठ सहायक एवं श्री विजय कुमार मिश्र, कनिष्ठ सहायक का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। हम उनके प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं।

इस पुस्तिका का कोई भी भाग यदि पाठकों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा, तो हम अपने प्रयास में सफल होंगे। यद्यपि इसे प्रकाशित कराने में पूर्ण सावधानी बरती गई है, तथापि कोई त्रुटि शेष हो, तो उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

अल शाज़ फ़ात्मी
सहायक निदेशक (प्राणिशास्त्र)

डॉ. आनन्द कुमार सिंह
निदेशक

मार्च, 2019

राज्य संग्रहालय, लखनऊ-परिचय

उत्तर पश्चिम प्रान्त एवं अवध की धरोहर को संरक्षित (Conserve) एवं परिरक्षित (Preserve) करने के उद्देश्य से कर्नल एब्बोट, तत्कालीन कमिश्नर, लखनऊ द्वारा सींखचे वाली कोठी/छोटी छत्तर मंज़िल में सन् 1863 में प्राकृतिक धरोहरों के संग्रह से एक म्यूनिसिपल संग्रहालय की स्थापना की गई। इस संग्रहालय की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुए सरकार द्वारा सन् 1873 में आगरा के रिडिल संग्रहालय को भी इसमें समाहित कर दिया गया। शनैः–शनैः संग्रहालय में संग्रहों की संख्या में वृद्धि होती रही एवं इसी क्रम में सन् 1880 में कुछ महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ इलाहाबाद संग्रहालय से यहाँ लायी गयीं।

पीतल का अलंकृत सिन्दूरदान

संग्रहालय की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्ता के दृष्टिगत सन् 1883 में इसे "उत्तर पश्चिम एवं अवध प्रान्तीय संग्रहालय, लखनऊ" घोषित किया गया। इसका संग्रह निरन्तर सम्पन्नता की ओर अग्रसर रहा, जिसे सुरक्षित रखने हेतु तत्कालीन भवन में स्थान की कमी को दृष्टिगत रखते हुए इसे सन् 1884 में अपेक्षाकृत बड़े भवन "लाल बारादरी" में स्थानान्तरित कर दिया गया। तत्पश्चात मानवशास्त्र, नृवंश विज्ञान, चित्रकला, सज्जाकला आदि नवीन अनुभागों की संग्रहालय में स्थापना हुई, जिससे संग्रह और भी समृद्ध हुआ। सन् 1907 में संग्रहालय को "गुलिस्तान–ए–इरम" के विशाल भवन में स्थानान्तरित किया गया। इसी वर्ष भारत के विभिन्न संग्रहालयों के संग्रहालयाध्यक्षों की बैठक कलकत्ता (कोलकाता) में आहूत की गयी, जिसमें पुरातत्त्व, मुद्रा एवं प्राकृतिक इतिहास विषयों पर गहन चर्चा हुई। बैठक के निर्णयानुसार प्रान्तीय संग्रहालय में एक नवीन पुरातत्त्व अनुभाग की स्थापना की गयी। इसके पूर्व पुरातत्त्व का एक संकलन "ओल्ड कैनिंग कालेज" में अवस्थित था। समिति ने

अर्द्धबहुमूल्य पत्थर से अलंकृत सिन्दूरदान

प्राकृतिक विज्ञान संग्रह पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हुए एक पृथक प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय की स्थापना का प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया।

सन् 1950 में भारत के गणतंत्र घोषित होने के फलस्वरूप राज्यों का पुनर्गठन प्रारम्भ हुआ। जिसके अन्तर्गत राज्यों की नयी सीमाएं निर्धारित की गयीं एवं कुछ राज्यों का नवीन नामकरण भी हुआ। परिणामस्वरूप उत्तर पश्चिम संयुक्त प्रान्त एवं अवध का नाम उत्तर प्रदेश हो गया। इसी अनुक्रम में प्रान्तीय संग्रहालय, लखनऊ का नामकरण भी राज्य संग्रहालय, लखनऊ किया गया। संग्रहालय में अन्य नये अनुभागों की स्थापना भी हुई एवं कलाकृतियां निरंतर बढ़ती रहीं। इस वृहद संग्रह के उचित रख–रखाव हेतु संग्रहालय के नवीन भवन का शिलान्यास उ0प्र0 के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. सम्पूर्णानन्द के कर कमलों द्वारा सन् 1956 में किया गया। बनारसीबाग स्थित संग्रहालय के नवीन भवन के मुख्य द्वार के दोनो ओर जहाज़ के पंख जैसे दो विंग बनाये गये। इसमें पशु–पक्षियों तथा मानवशास्त्र की कलाकृतियों को प्रदर्शित करती हुई दो नवीन वीथिकाओं का उद्‌घाटन माननीय प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा सन् 1963 में किया गया।

भगवान बुद्ध के जन्म का अंकन–रिपूसे शैली

इसके अतिरिक्त संग्रहालय में पुरातत्त्व, सज्जाकला, अवध की नवाबी कला, चित्रकला, अस्त्र–शस्त्र, मुद्रा एवं पदक, विदेशी शासकों की मूर्तिकला, नेपाली व तिब्बती थंका, बुद्ध जीवन, जैन धर्म आदि पर आधारित विभिन्न वीथिकाएं स्थापित की गयीं।

अलंकृत गंगाजली, पीतल

संग्रहालय के प्रशासकीय निकाय

संग्रहालय आरम्भ में उत्तर प्रदेश के भूमि–अभिलेख विभाग के अधीन रहा तथा आयुक्त, उत्तर पश्चिम एवं अवध प्रान्त संग्रहालय के अध्यक्ष एवं नियंत्रक अधिकारी हुआ करते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त 15 अगस्त, 1947 से जुलाई 1952 के मध्य संग्रहालय मण्डलायुक्त लखनऊ के अधीन रहा एवं अगस्त 1952 में संग्रहालय को निदेशक, शिक्षा विभाग के अधीन किया गया। सरकार द्वारा वर्ष 1957 में सांस्कृतिक कार्य एवं वैज्ञानिक शोध विभाग की स्थापना करते हुए संग्रहालय को इसके अधीन किया गया। कुछ समय पश्चात वर्ष 1975 में वैज्ञानिक शोध को पृथक कर केवल सांस्कृतिक कार्य विभाग की स्थापना हुई जो वर्तमान में संस्कृति विभाग के रूप में स्थापित है। संग्रहालयों के उत्थान एवं विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2002 में संस्कृति विभाग के अन्तर्गत उ.प्र. संग्रहालय निदेशालय की स्थापना हुई। उक्त निदेशालय के नियंत्रणाधीन वर्तमान में कुल 18 (अट्ठारह) संग्रहालय स्थापित हैं इन सभी संग्रहालयों में राज्य संग्रहालय, लखनऊ प्राचीनतम एवं विविधतम बहुउद्देशीय संग्रहालय है। (सूची–IV)

परशुराम–काष्ठ कला

आरम्भ में संग्रहालय के उचित रख–रखाव, विकास, संवर्धन एवं प्रबन्धन हेतु आयुक्त, उत्तर पश्चिम संयुक्त प्रान्त एवं अवध की अध्यक्षता में एक संग्रहालय प्रबन्धन समिति का गठन किया गया एवं डॉ. ई. बुनाविया इसके प्रथम अध्यक्ष तथा श्री एफ.एस. ग्राऊज़ एवं श्री ए. ओ. ह्यूम इसके सदस्य नामित किये गये। समिति में सदस्यों की संख्या में शनैः–शनैः वृद्धि हुई तथा सचिव, संग्रहालयाध्यक्ष एवं तीन और सदस्य नामित किये गये। इस प्रकार पुनर्गठित समिति का ढाँचा निम्नवत था :–

अध्यक्ष– कर्नल जी.ई. इर्सकिन

सचिव– श्री ए.एच. फ़्यूरी

सदस्य–

1. संग्रहालयाध्यक्ष, प्रांतीय संग्रहालय, लखनऊ
2. श्री एच.एस. ब्वायज़,
   आई.सी.एस.
3. कर्नल एम. ज्वेदी
4. श्री ज्यॉर्ज रीड

संग्रहालय प्रशासन को सशक्त बनाने हेतु श्री थोर्पे, पूर्व अधीक्षक, अवध सचिवालय, को वर्ष 1877 में संग्रहालय का प्रथम प्रभारी अधिकारी नियुक्त किया गया, जिनके बाद श्री जोयसे ने कार्यभार ग्रहण किया। डॉ. ए.ए. फ़्यूहरर ने 30 मार्च, 1883 को संग्रहालय के प्रथम संग्रहालयाध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। संग्रहालय के प्रबन्धन में निरन्तर बदलाव के कारण विशेषज्ञ समिति एवं प्रबन्धन समिति धीरे–धीरे भंग हो गई। श्री बाबू गंगाधर गांगुली 01 दिसम्बर, 1888 से 25 मार्च, 1903 तक सहायक संग्रहालयाध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण करने वाले प्रथम भारतीय थे, जो कालान्तर में 26 मार्च, 1903 को उप संग्रहालयाध्यक्ष के पद पर आसीन हुए। डॉ. फ़्यूहरर के 20 मार्च, 1905 को सेवानिवृत्त होने पर श्री गांगुली द्वारा संग्रहालयाध्यक्ष पद पर कार्यभार ग्रहण किया गया। राज्य सरकार द्वारा 03 अक्टूबर, 1953 से संग्रहालय के संग्रहालयाध्यक्ष के पद को उच्चीकृत करते हुए निदेशक का पदनाम प्रदान किया गया। श्री एम. एम. नागर, संग्रहालयाध्यक्ष, प्रांतीय संग्रहालय, लखनऊ को नवीन राज्य संग्रहालय, लखनऊ का प्रथम निदेशक नियुक्त किया गया।

राम, लक्ष्मण एवं सीता, धातु

राज्य संग्रहालय, लखनऊ - उद्देश्य

- राज्य के प्रतीक के रूप में प्रस्तुतीकरण।
- संग्रहालय भ्रमण पर आने वाले दर्शकों में क्षेत्र की संस्कृति एवं धरोहर के प्रति रूचि पैदा करना।
- अनौपचारिक शिक्षा का केन्द्र स्थापित करना।
- संरक्षण (Conservation), प्रदर्शन (Display), रक्षा (Security), व्याख्या (Interpretation) एवं शोध (Research) हेतु ऐतिहासिक तथा कलात्मक कलाकृतियों का संग्रह (acquisition) करना।
- शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को कलाकृतियों से प्रत्यक्ष रूप से अवगत कराना।
- प्राकृतिक (Natural) एवं सांस्कृतिक (Cultural) धरोहर के महत्व एवं इससे सम्बन्धित ज्ञान का प्रचार–प्रसार करना।
- कलात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में लीन समाज के सभी वर्ग को मनोरंजन एवं पारस्परिक विचार–विमर्श हेतु मंच प्रदान करना।
- सामान्य जनमानस में कला एवं इतिहास के प्रति रूचि एवं जागरूकता पैदा करना।
- दर्शकों एवं शोधार्थियों में कला एवं प्रकृति के प्रति उत्सुकता तथा खोज पैदा करने, के साथ ही इसे पूर्ण करने हेतु विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनी व शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित करना।
- विविध विधाओं में शोध की ओर अग्रसर रहना।

हाथीदाँत निर्मित मकरमुखी नौका

संग्रह नीति

विश्व के अन्य संग्रहालयों की भांति राज्य संग्रहालय, लखनऊ की भी अपनी एक विशिष्ट संग्रह नीति है। संग्रहालय की स्थापना प्राकृतिक विज्ञान संग्रह से की गयी थी। यही कारण है कि आरम्भ में संग्रहालय द्वारा मूलरूप से जंगली जानवरों के शिकार तथा चिड़ियाघरों एवं अन्य व्यक्तिगत दान द्वारा कलाकृतियों का संग्रह किया जाता था। जैसे–जैसे संग्रह के रूप, आकार एवं प्रकार में परिवर्तन हुआ वैसे–वैसे संग्रहालय ने अपने संग्रह की नीति में भी परिवर्तन किया।

मीनाकारी कला से अलंकृत धातु का लोटा

संग्रहालय की वर्तमान संग्रह नीति के अनुसार सरकारी एवं निजी संस्थाओं तथा अन्य व्यक्तियों से कलाकृतियाँ उपहार स्वरूप भी प्राप्त की जाती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ कलाकृतियों को थोड़े समय के लिए प्रदर्शित करने हेतु ऋण स्वरूप प्राप्त किया जाता है। उ.प्र. राज्य पुरातत्त्व विभाग एवं भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा समय–समय पर उत्खनन से प्राप्त सामग्रियां भी राज्य संग्रहालय, लखनऊ को उपहार एवं दान स्वरूप प्रदान की जाती हैं।

कलाकृतियों को विश्वसनीयता प्रदान करने, उनके मूल्य का निर्धारण वर्तमान एवं ऐतिहासिक परिपेक्ष में इसके महत्व का आंकलन एवं उक्त कलाकृतियों के क्रय हेतु प्रशासन के समक्ष अपनी सहमति प्रस्तुत करने के उद्देश्य से 23 जनवरी, 1957 को संग्रहालय में ''कला क्रय समिति'' (Art Purchase Committee) की स्थापना की गयी। प्रथम ''कला क्रय समिति'' के माननीय अध्यक्ष एवं सदस्यगण निम्नवत थे :–

अध्यक्ष : श्री रायकृष्ण दास, माननीय निदेशक, भारत कला भवन, वाराणसी।

सचिव : निदेशक, राज्य संग्रहालय, लखनऊ।

सदस्य :

1. डा. वासुदेव शरण अग्रवाल, एम.ए., पीएच.डी., डी. लिट, प्राध्यापक, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं कला विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं पूर्व निदेशक, प्रान्तीय संग्रहालय, लखनऊ।

2. डॉ. एस.सी. काला, एम.ए., डी.फिल., संग्रहालयाध्यक्ष, म्यूनिसिपल संग्रहालय, इलाहाबाद (प्रयागराज)।

3. डॉ. के.डी. बाजपेई, एम.ए. प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग, सागर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश।

4. संग्रहालयाध्यक्ष, पुरातत्त्व संग्रहालय, मथुरा (वर्तमान राजकीय संग्रहालय, मथुरा)

5. किसी अन्य विषय विशेषज्ञ का सरकार के अनुरोध पर समावेश कर समय–समय पर आवश्यकतानुसार समिति का नवीनीकरण किया जाता है।

पीतल का अलंकृत घड़ा

सहयोजित (Co-opted) सदस्य :
(विभिन्न श्रेणियों की कलाकृतियों के परीक्षण हेतु)

1– श्री ए.एल. आल्टेकर, एम.ए., डी.लिट, निदेशक, के.पी. जायसवाल संस्थान, पटना– **मुद्राशास्त्र**

2– प्रधानाचार्य, राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ–**कलात्मक वस्तुएं**

3– डॉ. डी.एन. मजुमदार, पीएच. डी. विभागाध्यक्ष, मानवशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ–**मानवशास्त्र**

राज्य संग्रहालय, लखनऊ में उ.प्र. मुद्रा समिति का कार्यालय भी है एवं निदेशक, राज्य संग्रहालय, लखनऊ मुद्रा समिति के पदेन सचिव होते हैं। निखात निधि अधिनियम–1878 के प्राविधानों के अनुसार, राज्य सरकार के प्रस्ताव पर समिति प्रदेश के विभिन्न भागों से एकत्रित की गयी निखात निधियों को पूरे भारत में किसी भी राजकीय संस्था को हस्तांतरित करने हेतु अधिकृत है।
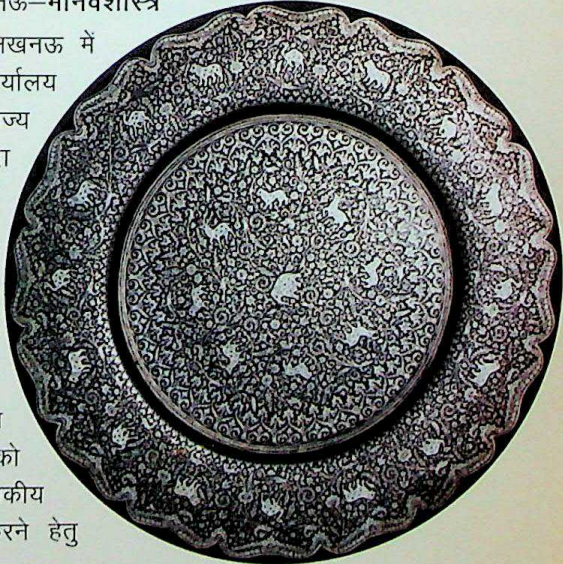
पशु–पक्षियों के अंकन युक्त सीनी–बीदरी कला

संग्रहालय का संग्रह

आरम्भ में राज्य संग्रहालय, लखनऊ केवल प्राकृतिक इतिहास के नमूनों (specimen) को संग्रहीत करता था। क्रमशः संग्रह के आकार व प्रकार में वृद्धि हुई एवं विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ यथा–पुरातत्त्व, मानवशास्त्र, कलात्मक वस्तुएं, मुद्राशास्त्र, नृवंश विज्ञान, धातु मूर्तियाँ, अस्त्र–शस्त्र, चित्रकला, पाण्डुलिपि, परिधान, स्वर्ण, चांदी तथा अन्य बहुमूल्य धातुओं के गहनों का संग्रहण भी किया जाने लगा।

संग्रहालय प्रारम्भ में केवल अधिग्रहण (Acquisition) परिरक्षण (Preservation), संरक्षण (Conservation) एवं प्रदर्शन (Display) के कार्य में संलिप्त था। वर्ष 1964 में एक वृहद अभिलेखीकरण नीति (Major Documentation Policy) के अन्तर्गत संग्रहालय की सभी कलाकृतियों का अभिलेखीकरण (Documentation) किया गया। इसके तहत सम्पूर्ण संग्रह को 5 समूह में व्यवस्थित किया गया।

1. प्राकृतिक इतिहास / प्राणिशास्त्र (Natural History)
2. पुरातत्त्व (Archaeology)
3. मुद्राशास्त्र (Numismatics)
4. सज्जाकला (Decorative Art)
5. कलात्मक वस्तुएं (Art ware)

उपर्युक्त को सुविधानुसार पुनः 26 अनुभागों (Sections) में वर्गीकृत किया गया है :–

अनुभाग संख्या–1: प्राकृतिक इतिहास / प्राणिशास्त्र

अनुभाग संख्या–2: प्रागैतिहासिक काल की कलाकृतियां

अनुभाग संख्या–3: मुद्राएं एवं पदक

अनुभाग संख्या–4: प्रस्तर मूर्ति

अनुभाग संख्या–5: धातु मूर्ति

अनुभाग संख्या–6: मृण्मूर्ति कला

अनुभाग संख्या–7: शिलालेख

अनुभाग संख्या–8: कॉपर एवं अन्य धातुओं की प्लेट

अनुभाग संख्या–9: बर्तन एवं ईंट

अनुभाग संख्या–10: मुहर

अनुभाग संख्या–11: मनके

अनुभाग संख्या–12: पाण्डुलिपि एवं फ़रमान

अनुभाग संख्या–13: छाप एवं मुद्रांकन

अनुभाग संख्या–14: छायाचित्र

अनुभाग संख्या–15: अस्त्र–शस्त्र

अनुभाग संख्या–16: वाद्ययंत्र

अनुभाग संख्या–17: लघुचित्र एवं चित्र

अनुभाग संख्या–18: स्वर्ण आभूषण

अनुभाग संख्या–19: अन्य धातुओं एवं बहुमूल्य पत्थरों के आभूषण

अनुभाग संख्या–20: वस्त्र एवं पोशाक

अनुभाग संख्या–21: कलात्मक वस्तुएं

अनुभाग संख्या–22: हाथीदाँत कला

अनुभाग संख्या–23: काष्ठ कला

अनुभाग संख्या–24: खिलौने

अनुभाग संख्या–25: धातुकला

अनुभाग संख्या–26: मानवशास्त्र एवं नृवंश विज्ञान

राम–सीता विवाह, कांगड़ा शैली, लघुचित्र

अनुभाग-1 : प्राकृतिक इतिहास (Natural History)

राज्य संग्रहालय, लखनऊ में प्राकृतिक धरोहरों का अमूल्य संग्रह संग्रहीत है। आरम्भ में कलाकृतियों का संग्रह जंगली जानवरों के शिकार तथा चिड़ियाघर एवं अन्य इसी प्रकार की संस्थाओं से उपहार स्वरूप प्राप्त स्पेसिमेन द्वारा होता था। इसके अतिरिक्त प्रायः सामान्य जनमानस एवं विद्वानों द्वारा अपने निजी संग्रह को भी संग्रहालय में दान स्वरूप भेंट किया जाता रहा है। भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 के लागू होने के उपरान्त वन्यजीवों का शिकार भारत सरकार द्वारा पूर्ण रूप से प्रतिबन्धित कर दिया गया। फलस्वरूप इस अनुभाग में स्पेसीमेन का अधिग्रहण बहुत कम होता गया। अनुभाग में मुख्य रूप से निम्नलिखित संग्रह है :–

(1) जीव–जन्तु संग्रह (Zoological collection)

राज्य संग्रहालय पशु–पक्षियों के संग्रह की दृष्टि से प्रदेश में ही नहीं अपितु देश में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा संग्रहीत पशु–पक्षी बहुत ही दुर्लभ प्रजाति के हैं। अनुभाग में कशेरूकी (Vertebrate) एवं अकशेरूकी (Invertebrate) दोनों प्रकार के स्पेसिमेन का अद्भुत संग्रह है, जिसमें कुछ स्पेसिमेन (Specimen) लगभग 150 वर्ष पुराने हैं।
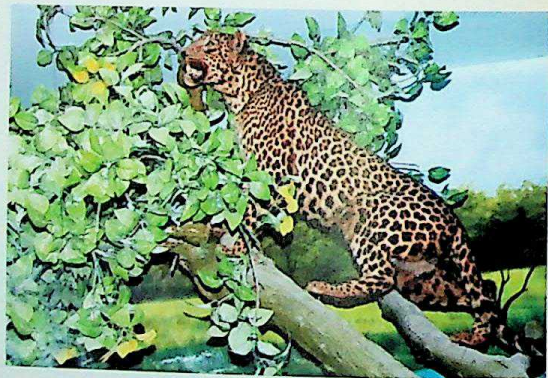
तेंदुआ

इस संग्रह में खारे एवं मीठे पानी की मछलियों का एक दुर्लभ संग्रह है, जिसे वर्ष 1888 में श्री जेम्स मरे, प्रबन्धक, प्राकृतिक विज्ञान संस्थान, मुम्बई द्वारा दान स्वरूप राज्य संग्रहालय को भेंट किया गया था। अनुभाग में बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बी.एन.एच. एस.), मुम्बई की सहायता से कुछ स्पेसीमेन विशेष रूप से स्तनधारी प्रजातियों का क्रय किया गया है।

प्राकृतिक इतिहास अनुभाग के प्रथम प्रभारी श्री ज्यॉर्ज रीड ने पक्षियों एवं सरीसृपों के अण्डों का एक बहुमूल्य निजी संग्रह संग्रहालय को दान स्वरूप भेंट किया। इस के अतिरिक्त अनुभाग में Wet एवं Dry preservation संरक्षण विधियों से संरक्षित स्पेसिमेन स्पेसिमेन संग्रहीत हैं, जिसमें अकशेरूकी (Invertebrate) से लेकर स्तनधारी (Mammal) तक मौजूद हैं। यहाँ संग्रहीत दुर्लभ पशु–पक्षियों के संग्रह में गंभीर रूप से खतरे में (Critically Endangered), लुप्तप्राय (Endangered), संकटग्रस्त / असुरक्षित

(Vulnerable), संवेदनशील (Threatened) एवं संरक्षण की दृष्टि से कमजोर (Near Threatened) प्रजातियाँ सम्मिलित हैं।

संकलन की कुछ दुर्लभ प्रजातियों का विवरण निम्नवत है :–

1– **गुलाबी सिर की बत्तख** (Pink Headed duck)

वैज्ञानिक नाम : *Rhodonesia caryophyllacea*

इस प्रजाति की मादा पूर्ण रूप से भूरे रंग की होती है एवं बिल्कुल गोल अण्डे देती है, जबकि नर अत्यन्त ही सुन्दर गुलाबी सिर एवं गर्दन वाला, मध्यम आकार का लगभग 60 से0मी0 लम्बा और 800 से 1000 ग्रा0 वज़न का होता है। पूर्व में यह प्रजाति पूर्वोत्तर भारत, बांग्लादेश एवं उत्तरी म्यांमार में पायी जाती थी, परन्तु अत्यधिक शिकार के कारण इनकी जनसंख्या तेज़ी से कम हुई है। इसे अन्तिम बार प्रामाणिक रूप से वर्ष 1935 में बिहार के दरभंगा के जंगलों में देखा गया है। यह पक्षी भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम– 1972 की अनुसूची–I में दर्ज है।

2– **बाघ** (Royal Bengal Tiger)

वैज्ञानिक नाम : *Panthera tigris benghalensis*

बाघों की जनसंख्या पूर्व की तुलना में अत्यधिक कम हुई है, इस कारणवश यह प्रजाति लुप्तप्राय प्राणियों की श्रेणी में आ गयी है। इनके निवास स्थान का क्षरण एवं भारी मात्रा में बाघों का शिकार आदि मुख्य समस्या है। यद्यपि भारत सरकार के प्रयत्न से सकारत्मक परिणाम आ रहे हैं। अनुभाग में बाघ के नर–मादा एवं शावक संरक्षित हैं। यह पशु भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम– 1972 की अनुसूची–I में दर्ज है।

3– **एक सींग वाला भारतीय गैण्डा** (One Horned Indian Rhinoceros)

वैज्ञानिक नाम : *Rhinoceros unicornis*

गैण्डा की यह प्रजाति उत्तर एवं पूर्वोत्तर भारत के घने जंगलों में पायी जाती है। इनकी जनसंख्या में आई तीव्र कमी के कारण इसे आई.यू.सी.एन. की असुरक्षित (Vulnerable) श्रेणी में रखा गया है। जनसंख्या में कमी का मुख्य कारण इनके निवास स्थान का क्षरण तथा सींग एवं खाल आदि के लिए इनका अवैध शिकार है। गैण्डे की सींग को ट्राफ़ी के रूप में भी लोग सजाते हैं तथा इससे पारम्परिक औषधियाँ भी बनाई

एक सींग वाला भारतीय गैण्डा

जाती हैं, जबकि दोनों अवैध हैं। इस प्रजाति को भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूची–I में रखा गया है।

4– **सोहन चिड़िया** (Great Indian Bustard)

वैज्ञानिक नाम : *Ardeotis negriceps*

Birdlife International द्वारा वर्ष 2017 में इस पक्षी को आई.यू.सी.एन. की गम्भीर लुप्तप्राय (Critically Endangered) पक्षियों की श्रेणी में रखा गया है। इसका मुख्य कारण इनकी जनसंख्या में तेज़ी से कमी आना है। पूर्व की अपेक्षा इनकी जनसंख्या अपने 90% निवास स्थान से लुप्त हो चुकी है। वर्तमान सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 150 पक्षी ही भारत के जंगलों में शेष हैं। यह पक्षी वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूची–I में दर्ज है।

सोहन चिड़िया

5– **सफेद पीठ वाला गिद्ध** (White rumped Vulture)

वैज्ञानिक नाम : *Gyps benghalensis*

इस पक्षी की भारत एवं पड़ोसी देशों में जनसंख्या बहुत तीव्रता से कम हो रही है, जिसका मुख्य कारण मवेशियों को दिया जाने वाला Non Steroidal Anti Inflammatory Drug (NSAID) - Diclofenac है। यह दवा मवेशियों के मरने के उपरान्त भी उनकी हड्डियों एवं मांसपेशियों में शेष रह जाती है। गिद्ध का भोजन मुर्दा जानवर होते हैं, यही कारण है कि, मरे हुए जानवरों के अन्दर का Diclofenac गिद्ध तक पहुँच जाता है और इन पक्षियों में यह गुर्दे फेल होने का कारण बनता है।

6– **साइबेरियन सारस** (Siberian Crane)

वैज्ञानिक नाम : *Grus antigon*

मूलतः यह साइबेरिया प्रदेश का पक्षी है, शीतकाल में अत्यधिक ठण्ड होने से बर्फ जमने पर भोजन की पूर्ति के लिए यह पक्षी प्रतिवर्ष भारत के केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर, राजस्थान आता था। विगत 16 वर्षों से इन पक्षियों ने यहां आना बन्द कर दिया है। इससे यह प्रतीत होता है कि या तो इन्होंने अपना प्रवास / उड़ने का मार्ग (migratory root) बदल दिया है अथवा इनकी

साइबेरियन सारस

जनसंख्या कम हो गयी है। यह पक्षी लुप्तप्राय (Endangered) श्रेणी का पक्षी है, जिसका स्पेसीमेन संकलन में संरक्षित है।

संग्रह में देश–विदेश के वन्यजीवों की सींग, कोकोज़ फिंच जैसे छोटे पक्षी के अण्डों से लेकर शुतरमुर्ग के अण्डे तथा विभिन्न पशुओं की खाल आदि संग्रहीत हैं। संग्रह में भारत, आस्ट्रेलिया, चीन, दक्षिण अफ़्रीका, मलेशिया, म्यांमार, निउ गिनिया, श्रीलंका, बांग्लादेश, पाकिस्तान, भूटान, नेपाल, इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड आदि देशों का समृद्ध संग्रह है।

(2) वनस्पति विज्ञान संग्रह (Botanical collection)

इस संग्रह में Dry एवं Wet preservation संरक्षण विधि द्वारा संरक्षित पौधे हैं, जिसमें मुख्यतः कैलाश मानसरोवर, अण्डमान–निकोबार एवं भारत के अन्य भागों से प्राप्त पौधे हैं।

(3) मिस्र की सभ्यता का संग्रह (Egyptian collection)

राज्य संग्रहालय, लखनऊ में मिस्र की सभ्यता के अद्‌भुत नमूने संग्रहीत हैं। संग्रहालय की विविधता में वृद्धि करते हुए तत्कालीन संग्रहालयाध्यक्ष श्री एम.एम. नागर ने वर्ष 1952 में संग्रहालय के लिए मिस्र की सभ्यता से सम्बन्धित विविध कलाकृतियों को अधिग्रहीत किया।

इस संग्रह में लगभग 3000 वर्ष पुरानी 13 वर्ष की लड़की की ममी दर्शकों के कौतूहल का मुख्य विषय है। इसके अतिरिक्त संकलन में एक अन्य ताबूत तथा विभिन्न धातुओं की देवी–देवताओं की प्रतिमा भी अति महत्वपूर्ण है। देवी आइसिस, देवता अयो, विभिन्न उषाभ्तियां आदि संग्रह की अमूल्य निधि हैं। वर्ष 2016 में संग्रहालय में एक ममी वीथिका की स्थापना की गयी है, जिसमें ममी, ताबूत, उषाभ्तियों के अतिरिक्त विभिन्न देवी–देवताओं की प्रतिमाओं को पिरामिड एवं डायोरामा के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

(4) भू–विज्ञान संग्रह (Geological collection)

कैलाश मानसरोवर से प्राप्त पत्थरों का एक महत्वपूर्ण संग्रह इस संकलन में संग्रहीत है, जिसमें कैलाश मानसरोवर की विभिन्न दिशाओं से प्राप्त मिट्टी एवं पत्थर हैं। इसके अतिरिक्त प्रयागराज (इलाहाबाद) से प्राप्त उल्का पिण्ड एवं विभिन्न प्रकार के जीवाश्म भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

वृक्ष का जीवाश्म

अनुभाग-2 : प्रागैतिहासिक काल की कलाकृतियाँ
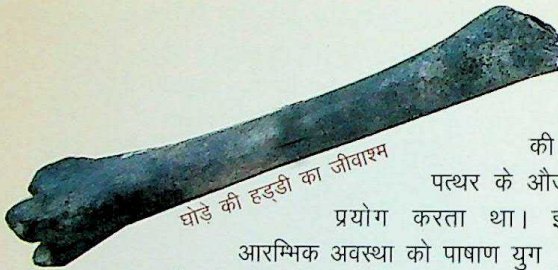
घोड़े की हड्डी का जीवाश्म

मानव संस्कृति का आरम्भ मनुष्य की उस स्थिति में हुआ, जब वह भोजन की व्यवस्था हेतु शिकारी के रूप में पत्थर के औज़ारों का प्रयोग करता था। इस आरम्भिक अवस्था को पाषाण युग कहते हैं एवं इतिहासकारों द्वारा इसे पूर्व पाषाणकाल, मध्य पाषाणकाल तथा नव पाषाणकाल में विभाजित किया गया है। इस अनुभाग में पूर्व पाषाणकाल से सम्बन्धित पत्थर के औज़ार, मृण्पात्र, भण्डारण से सम्बन्धित पात्र, घोड़े की हड्डी, दांत तथा पत्ती के जीवाश्म आदि संग्रहीत हैं।

पत्थर के औज़ार एवं जीवाश्म

मध्य पाषाण युगीन पत्थर के औज़ार अपेक्षाकृत छोटे एवं अधिक विकसित हैं। नव पाषाण युग को छः हज़ार ईसा पूर्व से लेकर दो हज़ार ईसा पूर्व के मध्य माना गया है। इस युग में मानव के जीवन–यापन का आधार पशुपालन व कृषि था। इस समय के पत्थर के औज़ारों पर पॉलिश मिलती है जो मनुष्य की सुरूचि का द्योतक है। उसने वस्तुओं का संग्रह करने हेतु मिट्टी का बर्तन बनाना आरम्भ किया। इस प्रकार उसका सामाजिक जीवन अधिक व्यवस्थित हो गया, किन्तु धातुओं का प्रचलन इस युग में नहीं था। इस संकलन में उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर, वाराणसी, प्रयागराज (इलाहाबाद), बांदा, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर, इटावा और मथुरा से प्राप्त पाषाण युगीन अवशेष संग्रहीत हैं।

पत्थर का औज़ार

घोड़े के दांत का जीवाश्म
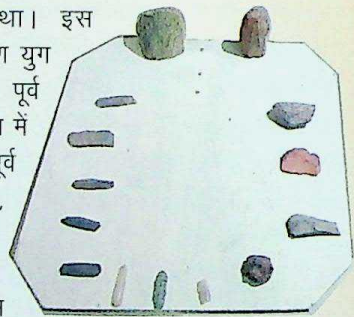
पत्थर का औज़ार

अनुभाग-3 : मुद्राएं एवं पदक

(i) मुद्रा संग्रह

राज्य संग्रहालय, लखनऊ में प्राचीन, मध्यकाल एवं आधुनिक सिक्कों का महत्वपूर्ण संग्रह मुद्रा अनुभाग में संग्रहीत है।

प्राचीनतम सिक्कों में जनपदों एवं जनजातियों के चांदी तथा ताम्र में ढले अनियमित नाप एवं बेडौल आकृति के आहत सिक्के हैं। सातवीं या छठी शताब्दी ई0पू0 से प्रथम शती ईसवी में प्रचलित इन सिक्कों पर प्रायः सूर्य, पर्वत, पशु–पक्षि, वृक्ष, सर्प, मानव तथा विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय चिन्ह अंकित हैं। आहत सिक्के गोल, आयताकार, प्याला आकार, नत शलाका, अनियमित आकार, लम्बे, वर्गाकार होते हैं। इसमें नत शलाका एवं प्यालेनुमा आहत सिक्के अति महत्वपूर्ण हैं। लगभग द्वितीय शती ई0 से चौथी शती ई0 के नगर राज्यों, जनजातीय गणों तथा राजतंत्रों द्वारा चलाये गये स्थानीय सिक्के अभिलिखित एवं अनाभिलिखित दोनों रूप में पाये जाते हैं। ताँबे एवं चाँदी में ढाले गये नगर राज्यों के सिक्कों में अयोध्या–सत्यमित्र, कौशाम्बी–लैंकी बुल, जनजातीय राज्यों के सिक्कों में यौधेय, औदुम्बर–मन्दिर शिखर, राजतंत्री राज्य सिक्कों में पांचाल–अच्युत व अग्निमित्र, उज्जैनी–स्वास्तिक आदि उल्लेखनीय हैं।

पश्चिमोत्तर भारत पर चौथी शती ई0 पू0 से प्रथम शती ई0 पू0 तक भारतीय–यूनानी का शासन रहा, जिन्होंने ठप्पे द्वारा निर्मित सिक्कों का प्रयोग किया। इसके अग्र भाग पर राजा की आकृति के साथ ग्रीक लिपि एवं पृष्ठ भाग पर यूनानी अथवा भारतीय देवी–देवताओं की आकृति तथा सामान्यतः खरोष्ठि अथवा ब्राह्मी लिपि प्रयुक्त हुई है। भारतीय–यूनानी (इण्डोग्रीक) सिक्कों में डियोडोटस, डिमेट्रियस, प्लेटो, स्ट्रेटो, अगाथोक्लिया, मिनेन्डर इत्यादि प्रमुख हैं। गुजरात एवं काठियावाड़ के इण्डो–साइथियन सिक्कों में क्षत्रप–नहपान सिक्के जिस पर ब्राह्मी / खरोष्ठि लिपि एवं प्राकृत भाषा का प्रयोग हुआ है। इण्डो–पार्थियन सिक्के शक शासक एज़ीलिज़ेस एवं एजेस तथा क्षत्रप राजवंश के गोंडोफ़ेरेज द्वारा जारी किये गये। शक–क्षत्रपों में रूद्रदमन, जयदमन आदि महत्वपूर्ण हैं।

वासुदेव–शिव नन्दी प्रकार का स्वर्ण सिक्का

अग्रभाग पृष्ठभाग

कुषाणकाल के प्रमुख शासकों में कुजुल कैडफ़िसेस, विमकैडफ़िसेस, कनिष्क, हुविष्क, वासुदेव आदि के स्वर्ण एवं चाँदी के सिक्के, जिसके पृष्ठभाग पर भारतीय, ग्रीक एवं ईरानी देवी–देवताओं का अंकन है एवं अग्रभाग पर राजा को एक हाथ से आहुति और दूसरे हाथ में दण्ड के साथ, राजा का आवक्ष, हस्ति सवार, राजा पालथी मारे हुए मंचासीन दिखाया गया है।

भारतीय इतिहास में गुप्त शासकों का अभ्युदय लगभग दो सौ वर्षों का एक गौरवशाली अध्याय है। कलात्मकता, मौलिकता एवं विविधता में अग्रणी इन शासकों ने 21 प्रकार के स्वर्ण सिक्के जारी किये, जिनके अग्रभाग पर प्रमुख रूप से शौर्य, मनोरंजन एवं आखेट प्रियता के दृष्य अंकित हैं। इन सिक्कों के अग्रभाग पर ब्राह्मी लिपि संस्कृत भाषा के छन्दोबद्ध लेख तथा पृष्ठ भाग पर देवी लक्ष्मी एवं गंगा और कार्तिकेय का अंकन है। गुप्तकालीन सिक्कों में चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त प्रथम, स्कन्दगुप्त, नरसिंहगुप्त की मुद्राएं विशेष उल्लेखनीय हैं।

लगभग पाँचवीं शती ई0 में गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात उत्तर भारत में हूण एवं इण्डोसासैनियन साम्राज्य का उत्थान हुआ। हूण सिक्कों की विशेषता है कि इनका अपना कोई राजचिन्ह नहीं था। इन्होंने जिन राज्यों पर विजय प्राप्त की वहीं के पूर्व शासकों का राजचिन्ह अपना लिया। इनके अधिकतर चाँदी एवं तांबे के सिक्के मिलते हैं। लगभग चौथी व पाँचवीं श0ई0 में ईरान के सासानी शासकों द्वारा अपने सिक्कों पर एक ओर राजा का आवक्ष और दूसरी ओर यज्ञदेवी तथा दो रक्षकों का अंकन किया गया है। इस तकनीक को भारत के मध्यकालीन गुर्जर प्रतिहार तथा कुछ अन्य शासकों ने अपनाया और सासानी तर्ज़ पर बने होने के कारण इन सिक्कों को इण्डो–सासैनियन शैली के सिक्के कहा जाता है। इन सिक्कों का प्रचलन पाँचवीं श0ई0 से लेकर लगभग तेरहवीं श0ई0 तक राजपुताना, गुजरात, काठियावाड़ तथा कन्नौज के शासकों मे अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। जिनमें कन्नौज के भोजदेव, विग्रहपाल एवं राजपुताना के गदिया के सिक्के प्रमुख हैं। चाँदी, तांबा एवं मिश्रित धातु से निर्मित इन सिक्कों को ''द्रम'' के नाम से भी जाना जाता है। आठवीं श0ई0 के सम्राट हर्षवर्धन ने गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद पहली बार पूरे भारत को एक साथ जोड़ने का काम किया।

राशि प्रकार के चांदी के सिक्के–जहाँगीर

लगभग दसवीं शती ई0 से लेकर तेरहवीं श0ई0 के काल क्रम में पश्चिम एवं मध्य भारत में अनेक छोटे–छोटे राजपूत वंशों ने राज किया। जिसमें दिल्ली एवं अजमेर के तोमर, शाकम्भरी के चौहान, त्रिपुरी के कलचुरि, कन्नौज के गहड़वाल, जेजाकभुक्ति के चन्देल आदि प्रमुख हैं। इन शासकों के नन्दी एवं घुड़सवार प्रकार के सिक्के बहुतायत पाये जाते हैं। जिस पर सम्बन्धित राजा का नाम नागरी लिपि में तिथि के साथ अंकित है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय का सिंह निहन्ता प्रकार का स्वर्ण सिक्का

अग्रभाग पृष्ठभाग

कश्मीर राज्य में छठी श0ई0 से ग्यारहवीं श0ई0 तक अनेक शासकों ने सिक्के जारी किये इसके अतिरिक्त कांगड़ा के रूपचन्द्रदेव के सिक्के भी महत्वपूर्ण हैं।

महमूद गज़नी के सैनिक अभियानों एवं मुहम्मद ग़ोरी द्वारा तुर्क साम्राज्य की स्थापना के फलस्वरूप भारतीय सिक्कों की प्रणाली में एक नया परिवर्तन आया। जिसके अनुक्रम में सिक्कों में ब्राह्मी एवं नागरी लिपि के स्थान पर अधिकांशतः अरबी भाषा एवं लिपि का प्रयोग आरम्भ हुआ। इसमें अरबी एवं संस्कृत भाषा में चाँदी का "दिरहम" महत्वपूर्ण है। मुहम्मद ग़ोरी का लक्ष्मी प्रकार का सिक्का विशेष उल्लेखनीय है। गुलाम वंशीय सुलतान इल्तुतमिश ने स्वर्ण, चाँदी, ताम्र तथा मिश्रित धातु के अरबी तथा नागरी लिपि में सिक्के चलाये। रज़िया सुलतान ने सिक्कों पर अपने पिता का नाम अंकित कराया एवं ख़िलजी वंशीय अलाउद्दीन ख़िलजी ने अरबी एवं नागरी लिपि में "सिकन्दर अल सानी" की उपाधि, अपना नाम व तिथि अंकित करायी। तुग़लक वंश के मुहम्मद बिन तुग़लक ने टकसालों का विस्तार, सिक्कों पर अंकन की पद्धति, समकालीन ख़लीफा के नाम तथा कल्माह का पुनः अंकन, सिक्कों की माप/वज़न में फेरबदल, पिता की स्मृति में सिक्के जारी करना आदि अनूठे प्रयोग किये। प्रान्तीय सुलतानों में बंगाल एवं जौनपुर प्रांत महत्वपूर्ण हैं।

मुग़लकालीन सिक्के धातु की शुद्धता, बनावट, सुडौल आकर, साहित्यिक अभिलेख, सूक्ष्म तकनीक की निपुणता के कारण तत्कालीन विश्व के सुन्दरतम् सिक्कों में गणित हैं। बाबर, हुमायूँ एवं अकबर का चाँदी का शहरूखी सिक्का उल्लेखनीय है। फ़ारसी भाषा का चलन मुग़ल कालीन मुद्रा प्रणाली की विशेषता है। कलमों के रूप में अरबी भाषा का प्रयोग भी रहा परन्तु औरंगज़ेब के समय में कल्माह एवं अरबी भाषा का प्रयोग लुप्त हो गया। मुग़ल कालीन सिक्के अधिकतर गोल हैं परन्तु अकबर ने चौकोर एवं मेहराबी आकार के सिक्के तथा राम–सिया प्रकार के सिक्के जारी किये। जहाँगीर ने अपने नाम के अतिरिक्त अपनी बेगम नूरजहाँ के नाम के साथ संयुक्त नाम के सिक्के तथा शाहजहाँ ने आकृति युक्त राशि प्रकार का सिक्का जारी कराया। मुगलों ने स्वर्ण मुहर, चाँदी का रुपया, ताम्र का दाम/फानूस तथा इससे छोटा "तुर्की" एवं "दमड़ी" नामक सिक्का चलाया।

आहत सिक्का (नत शलाका)

मुग़ल शासन के पतन के बाद नई उभरती शक्तियों ने आरम्भ में मुग़ल मुद्रा प्रणाली पर आधारित अपने सिक्के स्वतंत्र रूप से बनवाये जिसमें 18वीं0–19वीं0 श0ई0 के अवध व समकालीन अन्य रियासतों यथा– सिख शासक, बंगाल नबाव के सिक्के महत्वूपर्ण हैं।

आधुनिक सिक्के 19 वीं0 श0ई0 से अब तक के माने जाते हैं। इसमें डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी, फ्रेन्च ईस्ट इण्डिया कम्पनी, ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी

तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी विभिन्न प्रकार के सिक्के एवं विदेशी सिक्के सम्मिलित हैं।

संग्रह के कुछ दुर्लभ सिक्कों का विवरण निम्नवत है–

1. **चन्द्रगुप्त द्वितीय का धनुर्धारी प्रकार का स्वर्ण सिक्का** : अग्रभाग पर राजा बायीं ओर मुख किये हुए, सिर के पीछे आभा मण्डल, बायें हाथ में धनुष तथा दाहिने हाथ से तरकश से धनुष निकालते हुए दिखाया गया है। इस पर मुद्रालेख *''चन्द्र देवा (महाराजधिराज) श्री चन्द्रगुप्ताह''* अंकित है। सिक्के के पृष्ठ भाग पर कमल पुष्प पर आसीन देवी लक्ष्मी के सिर के पीछे आभा मण्डल, जिनके आगे की ओर फैले हुए बायें एवं दाहिने हाथ में क्रमशः कमल पुष्प तथा दण्ड है उभरे हुए बिन्दुओं से किनारा बना हुआ तथा दाहिनी ओर मुद्रालेख *''श्री विक्रमा''* अंकित है।

2. **विलियम चतुर्थ का डबल मुहर स्वर्ण सिक्का** : अग्रभाग पर राजा विलियम चतुर्थ की प्रति के साथ *''विलियम–IIII राजा 1835''* मुद्रालेख एवं पृष्ठ भाग पर शेर एवं ताड़ का वृक्ष तथा *''ईस्ट इण्डिया कम्पनी''* के साथ सिंह एवं *''दो मुहर''* मुद्रालेख उत्कीर्ण है।

3. **समुद्रगुप्त का धनुर्धारी स्वर्ण सिक्का** : अग्रभाग पर राजा को खड़े होकर यज्ञ वेदिका में आहुति देते हुए तथा बायें हाथ में धनुष लिए हुए दिखाया गया है एवं हाथ के ठीक नीचे *''समुद्रा''* मुद्रालेख उत्कीर्ण है। पृष्ठ भाग पर देवी लक्ष्मी अपने सिंहासन पर बैठी हैं एवं *''समुद्रा''* मुद्रालेख उत्कीर्ण है।

4. **कुमार गुप्त का सिंह निहंता प्रकार का स्वर्ण सिक्का** : अग्रभाग पर राजा को धनुष से सिंह का शिकार करते हुए एवं बायें हाथ के नीचे *''कू''* मुद्रालेख तथा पृष्ठ भाग पर देवी कौमारी, मोर को भोजन देती हुई, के साथ मुद्रालेख *''कुमार गुप्ताधिराज''* उत्कीर्ण है।

5. **समुद्रगुप्त स्टैण्डर्ड प्रकार का स्वर्ण सिक्का** : अत्यन्त दुलर्भ स्वर्ण सिक्का, जिसके अग्रभाग पर राजा को सिक्के के बांयी ओर कान में बाले, हाथ में बाजूबन्द, गले में हार, कमर में कर्धनी, फिटिंग के कोट–पैन्ट पहने हुए, मांस पेशियों युक्त बायें हाथ में दण्ड लिए हुए, दाहिने हाथ से हवन कुण्ड में आहुति देते हुए एवं पीछे गरूण पक्षी के साथ *''समुद्रा''* मुद्रा लेख अंकित है, को दिखाया गया है। पृष्ठभाग पर सिंहासन पर बैठी देवी के साथ *''स्रीविक्र''* मुद्रालेख उत्कीर्ण है। यह उपाधि समुद्रगुप्त के पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा ग्रहण की गयी थी।

6. **चन्द्रगुप्त द्वितीय का सिंह निहंता प्रकार का स्वर्ण सिक्का** : सिक्के के अग्रभाग पर दाहिनी ओर राजा तलवार से सिंह पर वार करता हुआ दिखाया गया है। साथ ही ब्राह्मी लिपि में मुद्रालेख *''ना–रे–ना–च–ना–प्रा–था–ता–रा''* (नरेन्द्र चन्द्र प्रतिहार) अंकित है। पृष्ठ भाग पर सिंह पर बैठी देवी, जिसका मुख सामने की ओर है, बांये हाथ में दण्ड तथा दाहिने हाथ में कमल पुष्प लिये हुए दिखायी गयी है एवं मुद्रालेख *''नरसिंम्हा*

प्रान्तीय संग्रहालय, लखनऊ को प्रदत्त संयुक्त प्रान्त प्रदर्शनी पदक सन् 1910

गाज़ि–उद्–दीन हैदर का राज्याभिषेक पदक *विक्रमाह"* अंकित है।

अग्रभाग पृष्ठभाग

(iii) **कागज़ के नोट** : ऐतिहासिक रूप से चीन के तांग वंश (618–907 ई.) द्वारा सर्वप्रथम कागज़ के नोट का प्रयोग मुद्रा के रूप में किया गया। यूरोप में कागज के नोट का प्रचलन 17 वीं शती ई. में प्रारम्भ हुआ, यद्यपि भारत में 18 वीं. शती ई. में सर्वप्रथम कागज़ के नोट का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। कागज़ के नोट तत्समय के शासक अथवा शासकीय प्रणाली के महत्वपूर्ण साक्ष्य होते हैं। राज्य संग्रहालय लखनऊ में महात्मा गांधी स्मरणीय नोट, जवाहर लाल नेहरू स्मरणीय नोट एवं अन्य महत्वपूर्ण नोट संग्रहीत हैं।

(ii) **पदक संग्रहः** धातु का वृत्ताकार टुकड़ा, जिसकी माप आम तौर पर प्रचलित सिक्कों से बड़ी एवं इसे विशेष स्मरणोत्सव मनाने हेतु अभिलेख अंकन सहित बना होता है, को पदक कहते हैं। सैनिक या अन्य विशिष्ट व्यक्ति को पुरस्कृत करने हेतु जारी किया जाता है। पदक ऐतिहासिक साक्ष्य का अधिकृत माध्यम हैं, जिसकी सहायता से इतिहासकार तत्समय की राजनैतिक परिस्थितियों का सटीक मूल्यांकन करने में सक्षम होते हैं। अंकित लेख से इसे जारी करने वाले का नाम, वर्ष, स्मरणोत्सव का विवरण एवं कभी–कभी भौगोलिक क्षेत्र की भी जानकारी प्राप्त होती है। राज्य संग्रहालय में विभिन्न प्रकार के पदकों का एक अनोखा संग्रह है, जिसकी ऐतिहासिक महत्ता अत्यधिक है, इनमें से कतिपय पदकों का विवरण निम्नवत है–

1. **उत्तर पश्चिम संयुक्त प्रांत पदक** : राज्य संग्रहालय, लखनऊ (तत्कालीन प्रान्तीय संग्रहालय) में संग्रहीत कांसे का पदक जो अंग्रेज़ी शासन द्वारा 1910 ई. में अवध एवं उत्तर पश्चिम संयुक्त प्रान्त को दिया गया था।

2. **गाज़ि–उद्–दीन हैदर का राज्याभिषेक पदक** : अवध के शासक का चांदी का पदक, जिसके अग्रभाग पर राजा का आवक्ष चित्र एवं पृष्ठ भाग पर राजसी चिन्ह, जिसमें दो आक्रामक सिंह झण्डा लिये हुए एवं उनके नीचे दो मछलियां, झण्डे के बीच में कटार, उसके ऊपर एक मुकुट अंकित है। पदक के अग्र एवं पृष्ठ भाग पर फ़ारसी भाषा में क्रमशः *''सिक्का –ज़द–बार–सीमवार–ज़र–अज़–फजल–रब धुल–ई–मुनीम''* एवं *''गाज़ि–उद्–दीन–आला–नस्ब–शाह–ए–ज़मीन–सनाह–अहद''* मुद्रालेख अंकित है।

3. **वाटरलू का चांदी का पदक** : इसके अग्रभाग पर राज प्रतिनिधित्व के रूप में मुद्रालेख ''Geogre P. Regent'' अंकित है एवं पृष्ठ भाग पर पंखों वाली विजय की देवी आसन पर बैठी है, जिसके बायें हाथ में खजूर की पत्ती तथा दाहिने हाथ में ज़ैतून के वृक्ष की पत्ती है। इसके नीचे ''WATERLOO June 18, 1815'' एवं ऊपर ''WILLINGTON'' मुद्रालेख उत्कीर्ण है। ब्रिटिश सरकार द्वारा जारी यह ऐसा प्रथम पदक था, जिसे युद्ध में मारे गये सैनिकों के मरणोपरान्त उनके सम्बन्धियों को दिया गया। इसे ब्रिटिश सरकार द्वारा नेपोलियन के विरूद्ध सन् 1815 में हुए वाटरलू युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार की नेपोलियन पर विजय के उत्सव को मनाने हेतु सैनिकों को भी दिया गया।

अनुभाग-4 : प्रस्तर मूर्ति

संग्रहालय की प्रस्तर मूर्तियाँ गुणात्मक (qualitative) एवं मात्रात्मक (quantitative) दोनों ही दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। संग्रहालय के प्रथम संग्रहालयाध्यक्ष डॉ. ए.ए. फ्यूहरर ने क्रमशः 1888–89, 1889–90 एवं 1890–91 के मध्य तीन चरणों में उ.प्र. के जनपद मथुरा स्थित कंकाली टीला नामक पुरातात्विक स्थल का उत्खनन किया। परिणाम स्वरूप पुरासामग्रियों का बहुमूल्य संग्रह राज्य संग्रहालय को प्राप्त हुआ। इसमें जैन, बौद्ध एवं हिन्दू धर्म से सम्बन्धित मूर्तियाँ एवं अन्य पुरासामग्रियाँ सम्मिलित हैं। कुछ प्रतिमाओं के ऊपर ब्राह्मी लिपि में अभिलेख भी अंकित हैं। कंकाली टीला से प्राप्त सभी कलाकृतियाँ मथुरा कला की हैं एवं लाल बलुए पत्थर से निर्मित हैं। बौद्ध, जैन तथा सनातन धर्म के देवी–देवताओं को मथुरा कला में अत्यन्त ही सुन्दरता से उत्कीर्ण किया गया है।

संग्रहालय में देवी–देवताओं यथा गणेश, विष्णु, लक्ष्मी, सूर्य, अग्नि, कुबेर आदि की अति सुन्दर प्रस्तर प्रतिमाएं संग्रहीत हैं। उ0प्र0 में पत्थर की प्राचीनतम मूर्तियाँ अशोक कालीन (273–232 ई.पू.) मानी जाती हैं। इस काल की मूर्तियाँ चिकने, चमकदार पत्थर द्वारा निर्मित हैं, जिसमें पशु आकृति युक्त अशोक का स्तम्भ मुख्य है।

सम्राट अशोक की मृत्यु के पश्चात् शुंग साम्राज्य की स्थापना दूसरी शती ई.पू. में हुई। शुंग काल में हिन्दू देवी–देवताओं की मानवाकृतियों का तक्षण प्रारम्भ हुआ एवं कला की अभिव्यक्ति पराकाष्ठा तक पहुँची। इसके उपरान्त कुषाण काल में बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय की स्थापना के साथ–साथ बौद्ध देवी–देवताओं की मूर्तियों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। कुषाण काल को "मथुरा कला" का स्वर्ण युग कहा जाता है।

सिंहनाद अवलोकितेश्वर

राज्य संग्रहालय, लखनऊ में उपर्युक्त वर्णित सभी प्रकार की मूर्तियाँ संग्रहीत हैं, जिनमें से कुछ अद्भुत संग्रह का संक्षिप्त विवरण निम्नवत है:–

1. **अभिलिखित स्थानक बुद्ध** : लगभग चौथी शती ई. मथुरा से प्राप्त लाल बलुए पत्थर से निर्मित प्रतिमा के दोनों कंधे उभयन्सिका संघाटी (शाल) से ढके हुए हैं। दायां हाथ जिसकी हथेली में चक्र
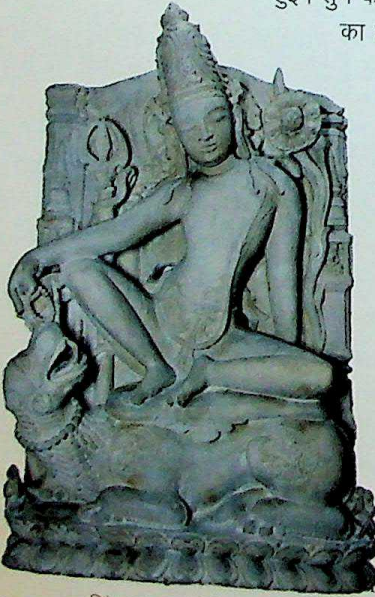
अंकित है, अभय मुद्रा में है, जबकि बायें हाथ से संघाटी को उठाये हुए हैं। चुन्नटदार संघाटी पूरे शरीर को बड़े ही सुन्दर ढंग से ढके हुए है। बुद्ध के बाल घुंघराले हैं एवं सिर के बीच में उष्णीष है। सिर के पीछे भिन्न–2 प्रकार की चित्रकारियों से सज्जित आभा मण्डल है, जिसमें तेज को भी निकलते हुए दर्शाया गया है। पाद–पीठ पर ब्राह्मी लिपि में दो पंक्तियों का लेख है :–

देया धर्मोयम यसाविहारे साक्याभिक्षुणया जया भट्टाया यदात्रा पुण्यम् तधावतु सर्वसा त्वानामनुतरा ज्ञानानावपतये सम्वत्सराह २३०

2. **सिंहनाद अवलोकितेश्वर** : लगभग 11वीं शती ई., बलुआ पत्थर निर्मित हमीरपुर से प्राप्त अति सुन्दर प्रतिमा है। राजसी मुद्रा में कमल पुष्प की पाद–पीठ पर आसीन प्रतिमा के दाहिने हाथ में माला है, दाहिना पैर थोड़ा उठा हुआ है एवं बायें हाथ को पाद–पीठ पर शरीर के संतुलन को बनाये रखने के लिये टिकाया हुआ है। लम्बे बालों के गुच्छे दोनों कंधों पर लटकते हुए दिखाये गये हैं। सिर पर अति सुन्दर मुकुट है एवं सिर के पीछे आभा मण्डल है। दाहिने हाथ के पीछे एक सर्प से लिपटा हुआ त्रिशूल है एवं बायीं ओर से कमल पुष्प की लता ऊपर की ओर जाती हुई है। प्रतिमा दहाड़ते हुए सिंह पर आसीन है। पीछे की ओर स्तूप की प्रतिकीर्ति भिक्षुओं सहित लघुरूप में बनायी गई है। विद्वानों द्वारा इसे चंदेल काल की प्रतिमा बताया गया है। गद्दी पर नागरी भाषा में अंकित लेख से ज्ञात होता है कि सभी कलाओं में पारंगत छित नाका नामक मूर्तिकार द्वारा इसे बनाया गया है।

अभिलिखित स्थानक बुद्ध

3. **मौर्य कालीन सिंह स्तम्भ** : चमकदार पत्थर से बनी महादेवा, जनपद बस्ती से प्राप्त यह बहुत ही सुन्दर कलाकृति है। इसे तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं। सबसे नीचे घण्टे के आकार का उल्टा कमल, उसके ऊपर एक ड्रम के आकार की आकृति एवं सबसे ऊपर एक बाघ उत्कीर्ण है। किन्हीं कारणों से पशु (बाघ) का पूरा शरीर उपलब्ध नहीं है, परन्तु उसके सुन्दर पैर शेष हैं।

4. **मानकुंवर बुद्ध** : इस मूर्ति की विशेषता है कि इसमें कुषाण, गुप्त, मथुरा एवं सारनाथ शैलियों का मिश्रण है। ध्यानस्थ बुद्ध प्रतिमा का दायां हाथ अभय मुद्रा में है, जबकि बायां हाथ पैर के तलवे पर रखा हुआ है। केशविहीन सिर से ऐसा प्रतीत होता है कि, यह कसी टोपी पहने हुए हैं। चुन्नट दार धोती सारनाथ शैली से मेल खाती है। पादपीठ के बीच में धर्म चक्र है, जिसके दोनों ओर ध्यानस्थ बुद्ध एवं एक–2 सिंह उत्कीर्ण है।

सप्त मातृका पट्ट

पादपीठ के दोनों ओर ऊपर एवं नीचे के किनारों पर ब्राह्मी लिपि में अंकित अभिलेख से स्पष्ट होता है कि भगवान बुद्ध की यह प्रतिमा बौद्ध भिक्षु बुद्धमित्र द्वारा राजा कुमारगुप्त के 109 वें वर्ष में स्थापित की गई थी।

5. **मातृकाएं** : वस्तुतः विष्णु, शिव, ब्रह्मा, गणेश, इन्द्र और कार्तिकेय जैसे प्रमुख देवताओं की शक्तियां हैं। सप्तमातृकाओं के शिल्पांकन की परम्परा कुषाणकाल में प्रारम्भ हुई। मध्यकाल के पूर्व तक चामुण्डा के अतिरिक्त अन्य सभी को बालकों के साथ दर्शाया जाता था, परन्तु मध्यकाल तक आते– आते यह परम्परा अनियमित हो गयी। काले पत्थर से निर्मित 61X82 से.मी. माप का यह सप्त मातृका पट्ट बारहवीं शताब्दी ई. की कला का एक सुन्दर प्रमाण है। इस पट्ट में वीणाधारी शिव के साथ दायें से बायें ओर क्रमशः ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, इन्द्राणी, वाराही तथा चामुण्डा प्रतिमाएं स्पष्ट रूप से उत्कीर्ण हैं। संग्रहालय में अन्य महत्वपूर्ण सप्त मातृकाओं के पट्ट भी संग्रहीत हैं।

6. **अयाग पट्ट** : मथुरा के कंकाली टीला से प्राप्त लगभग प्रथम शती ई. का लाल बलुए पत्थर से निर्मित 88x82 से.मी., का यह अयाग पट्ट जैन धर्म में पूजा हेतु प्रयोग में लाया जाता था। यह विभिन्न प्रकार की मूर्तियों, श्रीवत्स एवं स्वास्तिक चिन्हों से अलंकृत है। इस आयताकार कलाकृति में कई वृत्त बने हुए हैं। आयत के चारों कोनों में तीर्थंकर का अंकन है। सबसे बाहरी वृत्त में उड्डीयमान आकाशीय देवों को दर्शाया गया है। इसके
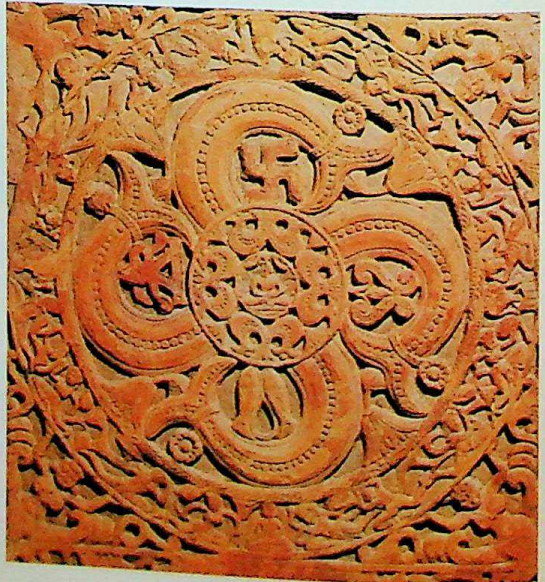
अयाग पट्ट

अन्दर के वृत्त में चार मांगलिक चिन्ह (स्वास्तिक, श्रीवत्स, मत्स्य की एक जोड़ी एवं भद्रासन) एवं कमल पुष्प लताएं हैं। सबसे अन्दर के वृत्त में ध्यानस्थ मुद्रा में तीर्थंकर का अंकन है।

अभिलिखित जैन सरस्वती

7. **जैन सरस्वती** : सरस्वती का उल्लेख पौराणिक कथाओं में ब्रह्मा, विष्णु और गणेश की शक्तियों के रूप में मिलता है। हिन्दू, बौद्ध एवं जैन तीनों धर्मों में सरस्वती को विशिष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त है तथा यह विद्या एवं मेधा की देवी के रूप में स्थापित हैं। कूल्हों के बल पर बैठी प्रतिमा ढ़ीली ढ़ाली ओढ़नी तथा धोती लपेटे हुए है। बायें हाथ में पवित्र धार्मिक पुस्तक है। प्रतिमा का दाहिना हाथ ऊपर की ओर उठा हुआ है एवं हथेली खण्डित है। जैनियों द्वारा जैन मंदिर में अन्य धार्मिक देवी–देवताओं को स्थापित करने की श्रृंखला में यह प्राचीनतम प्राप्त प्रतिमा है। मथुरा के कंकाली टीला से प्राप्त गुप्त काल की यह एक मात्र अभिलिखित जैन सरस्वती की प्रतिमा है। सिंह के सिंहासन पर आसीन सिर विहीन इस प्रतिमा में सामान्य रूप से अंकित श्रीवत्स का चिन्ह छाती पर अंकित है। कमल पुष्प की पादपीठ पर संस्कृति में उद्धृत दो पंक्तियों का अभिलेख इस तथ्य की पुष्टि करता है कि प्रतिमा को कोटियांगना के किसी मन्दिर में दलिताकार्या पर्व पर, भट्टीपावा की पुत्री समाध्या द्वारा कुमारगुप्त के काल में स्थापित किया गया।

दशावतार विष्णु

8. **दशावतार विष्णु** : भगवान विष्णु ने संसार की रक्षा, धर्म की स्थापना तथा असुरों के संहार हेतु समय–समय पर मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण एवं बुद्ध के रूप में अवतार लिया। भागवत् पुराण के अनुसार भविष्य में विष्णु का कल्कि अवतार होगा। अनुभाग में दशावतार विष्णु की अति सुन्दर प्रतिमा है।

अनुभाग-5 : धातु मूर्ति

धातु के आविष्कार से मानव ने प्रस्तर काल से धातु युग में पदार्पण किया। गंगा–यमुना दोआब के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों से ताम्र उपकरण एवं मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।

विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित देवी–देवताओं की मूर्तियाँ एवं संग्रह की अन्य प्रतिमाएं यथा आज़मगढ़ से प्राप्त स्वर्ण पालिश युक्त लौह बुद्ध मस्तक 5 वीं शती ई. की एक दुर्लभ कलाकृति है। प्रतिमा की अध खुली आँखें, अर्द्ध चन्द्राकार भौंहे, सुन्दर होंठ आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। स्वर्ण पत्तर से रिपुसे शैली द्वारा निर्मित सुन्दर आकृतियाँ, आभूषणों से सज्जित स्त्री, गणपति, सिंहवाहिनी दुर्गा, लक्ष्मी, नटराज एवं बौद्ध देवी–देवताओं की धातु प्रतिमाएं इस संग्रह की अनमोल निधियाँ हैं। संग्रह की कुछ दुर्लभ कलाकृतियां निम्नवत हैः–

लौह निर्मित स्वर्ण पॉलिश युक्त बुद्ध मस्तक

(1) यिदम : नेपाल से प्राप्त लगभग 17 वीं शती ई. की इस प्रतिमा के विषय में मान्यता है कि इसके साथ बौद्ध भिक्षुओं का एक गुप्त सम्बन्ध है। यह बौद्ध धर्म के तान्त्रिक देवता हैं, जिनके कई हाथ, पैर एवं सिर हैं। प्रतिमा कमल पुष्प पर आसीन है, जिसके सिर के चारों ओर आग की लपटें निकल रही हैं।

वसुधरा

(2) वसुधरा : लगभग 18 वीं शती ई. की नेपाल से प्राप्त प्रतिमा समृद्धि एवं धन की देवी है। षट्भुजी प्रतिमा के ऊपरी बांये हाथ में पाण्डुलिपि, बीच के हाथ में धान की डंठल एवं सबसे नीचे का कलश युक्त हाथ पैरों के तलवे पर रखा हुआ है। प्रतिमा के सबसे नीचे का दाहिना हाथ वरद मुद्रा में, बीच के हाथ में संगीत का कोई यन्त्र एवं सबसे ऊपर का हाथ नृत्य मुद्रा से तारतम्य बनाते हुए है। प्रतिमा सुन्दर मुकुट, धोती एवं बहुमूल्य गहनों से

बौद्ध देवी तारा, धातु

सज्जित है तथा कमल पुष्प के पाद–पीठ पर आसीन है।

(3) तारा : लगभग 18 वीं शती ई. नेपाल से प्राप्त प्रतिमा के चारों ओर आग की लपटों को दिखाया गया है। दोनों हाथ से कमल की लताएं निकल रही हैं। सुन्दर मुकुट एवं गहनों से सज्जित देवी कमल पुष्प की पाद–पीठ पर आसीन है। लोकोक्तियों के अनुसार तारा की उत्पत्ति अवलोकितेश्वर बोधिसत्व के अश्रुओं से हुई है।

(4) अन्नपूर्णा देवी : दोनों पैरों को मोड़कर पालथी मारकर बैठी अन्नपूर्णा देवी, बायें हाथ में चम्मचों के सेट, चूड़ियाँ और गले में हार से सज्जित है। सिर के पीछे दाहिनी ओर अर्द्धचन्द्र एवं बायीं ओर सूर्य का अंकन है।

(5) बोधिसत्व मंजुश्री : नेपाल से प्राप्त लगभग 18 वीं शती ई. की बोधिसत्व मंजुश्री की प्रतिमा के दाहिने हाथ में अज्ञानता को नष्ट करने वाली ज्ञान रूपी तलवार है एवं बाएं हाथ में पाण्डुलिपि है। ऊपर के बांये हाथ में धनुष तथा नीचे के दाहिने हाथ में बाण है। कमल पुष्प पर आसीन प्रतिमा आभूषण एवं मुकुट से सज्जित है तथा इसके चारों ओर पेड़ की लताएं हैं।

धातु निर्मित गणेश

अनुभाग-6 : मृण्मूर्ति कला

लोक कला के रूप में मृण्मूर्तियों का प्रचलन अत्यन्त प्राचीन काल से चला आ रहा है। इस संग्रह में मुख्य रूप से भीटा, भीतर गांव, कौशाम्बी, संकिसा, अहिच्छत्र, मथुरा आदि स्थानों से प्राप्त कलाकृतियाँ हैं।

मृण्मूर्ति कला अनुभाग में मथुरा के आस–पास से प्राप्त मौर्य काल की सलेटी रंग की पशु–पक्षी की मुखाकृति, जिन्हें पूर्णतया हाथ से डौलिया कर बनाया गया है, शुंग काल की सांचे में ढली मृण्मूर्ति तथा कुषाण काल की हाथ से निर्मित मृण्मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

भीम जरासन्ध युद्ध

मौर्यकालीन पशु–पक्षियों की प्रतिमाएँ एवं कुषाण काल की अधपकी त्रिमुखी देवी की प्रतिमा तथा भीतरगांव से प्राप्त गुप्तकालीन मृण्फलक एवं गणेश से मोदक छीनते हुए कार्तिकेय अति दुर्लभ कलाकृतियों में से एक है। कुषाण काल में मृण्मूर्तियाँ हाथ से डौलियाकर बनायी जाने लगीं, यद्यपि आकार में पहले की अपेक्षा इस काल की मूर्तियाँ बड़ी हैं। कुछ मूर्तियों को ठीक से पकाया भी नहीं गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि कलाकारों का ध्यान प्रस्तर मूर्तिकला की ओर अधिक केन्द्रित था। शुंग काल में मृण्मूर्तियों का सर्वांगीण विकास हुआ। हाथ से बनी मूर्तियों के स्थान पर सांचों द्वारा आकृतियां ढाली जाने लगीं और विषय–वस्तु के निदर्शन में भी विविधता आयी। संकलन में संग्रहीत मिट्टी के सांचे, दम्पति, मिथुन, मिट्टी की गाड़ी आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इन मूर्तियों में गति एवं भाव दोनों ही अवलोकनीय है।

मिट्टी के सांचे

कुषाण काल में मृण्मूर्ति कला में गिरावट आई। सम्भवतः मृण्मूर्ति कलाकारों की ओर ध्यान कम दिया गया। यद्यपि एक बड़े समूह द्वारा स्थानीय देवी–देवताओं को बनाने हेतु मृण्मूर्ति कला का प्रयोग किया जाता रहा। पुनः हाथ से डौलियाकर मूर्तियों का
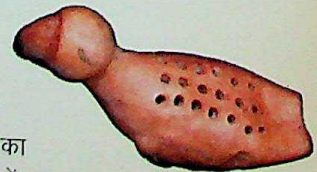
मिट्टी का तोता

गणेश से मोदक छीनते कार्तिकेय

बनाना प्रारम्भ हुआ। इस समय की बनी हुई मृण्मूर्तियाँ प्रायः भद्दी अपरिष्कृत (crude) एवं असंगत (disproportionate) हैं। कुषाण काल के महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल महादेवा, धुरहु (बस्ती), झूंसी (प्रयागराज), हुलास खोड़ा (लखनऊ), घोसी (मऊ), मथुरा आदि हैं। महायोगी शिव, मातृदेवी, खिड़की से झांकती स्त्री की आवक्ष प्रतिमा, यक्ष आदि मृण्मूर्ति संग्रह की अतिमहत्वपूर्ण कलाकृतियाँ हैं। गुप्तकालीन मृण्मूर्तियां सौन्दर्य की दृष्टि से अधिक सुडौल एवं आकर्षक हैं। सांचों में ढली इन कृतियों में कला की सजीवता के दर्शन होते है।

अनुभाग-7 : शिलालेख

शिलालेख ऐतिहासिक स्रोत के महत्वपूर्ण साधन हैं। भारत में यह तीसरी शती ई.पू. से प्राप्त होना प्रारम्भ होते हैं। उत्तर भारत की तुलना में दक्षिण भारत में शिलालेखों का अधिक विविध संग्रह प्राप्त हुआ है, जिसमें मुख्य रूप से मंदिरों की दीवारें, गुफाएं एवं अन्य महत्वपूर्ण इमारतों से प्राप्त शिलालेख हैं। लगभग एक लाख से अधिक शिलालेख अब तक प्राप्त हुए हैं, जिनका सूचीकरण एवं अनुवाद किया जा चुका है। इन शिलालेखों के माध्यम से प्राप्ति स्थान, स्मरणोत्सव, राजवंशावली, राजनैतिक ढाँचा, तत्कालीन न्यायिक व्यवस्था अथवा न्याय प्रणाली, धार्मिक प्रथाओं आदि के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होती है। इन पर उद्धृत लेख से तत्समय में प्रचलित भाषा एवं लिपि का भी ज्ञान होता है। प्राचीनतम शिलालेखों में अशोक कालीन शिलालेख अति महत्वपूर्ण हैं। शिलालेखों पर उद्धृत लेख को जब लोकोक्तियों, पुरावशेषों एवं यात्रा वृत्तांत के साथ अध्ययन किया जाता है, तो तत्कालीन समाज से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। राज्य संग्रहालय, लखनऊ के शिलालेख संग्रह में बाराबंकी के हड़हा गांव से प्राप्त मौखरी राजा ईशानवर्मन का विक्रम संवत् 611 का शिलालेख अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार यह राजा सूर्यवर्मन द्वारा किसी प्राचीन मंन्दिर के जीर्णोद्धार से सम्बन्धित है।

करमदण्डा (अयोध्या) से प्राप्त शिवलिंग जिस पर कुमारगुप्त प्रथम का अति महत्वपूर्ण लेख उत्कीर्ण है, जिसमें महाबलाधिकृत पृथ्वीषेण द्वारा अयोध्या के कुछ ब्राह्मणों को दान दिये जाने का उल्लेख है।

कन्नौज के राजा भोजदेव के काल का अति महत्वपूर्ण शिलालेख, जिस पर हर्ष संवत् 259 उत्कीर्ण है तथा मथुरा एवं बुन्देलखण्ड से भी प्राप्त कुछ शिलालेख संकलन की अनमोल निधि हैं।

अनुभाग-8 : कॉपर एवं अन्य धातुओं की प्लेट

प्राचीनतम लेख ताड़पत्र पर प्राप्त होते हैं, तदोपरान्त शिलाओं पर लेख अंकित किये जाने लगे। कालान्तर में ताम्रपत्र एवं अन्य धातुओं पर उत्कीर्ण लेखों का प्रचलन हुआ। इन ताम्रपत्रों को सुरक्षित रखने के आशय से इन्हें दीवार, नींव अथवा मिट्टी के नीचे दबा दिया जाता था। एक ही ताम्रपत्र को एक से अधिक बार प्रयोग करने हेतु उस पर पूर्व में उत्कीर्ण अभिलेख को काट दिया जाता था एवं उस पर एक नया अभिलेख अंकित कर दिया जाता था। भारतीय उप महाद्वीप के ताम्रपत्र प्रथम शती ई. से मिलते हैं। प्रायः यह ब्राह्मी, खरोष्ठी आदि लिपि एवं संस्कृत, कन्नड़ आदि भाषा में मिलते हैं। इन पर जारी करने वाले के नाम के साथ कभी–कभी मुहर एवं तिथि का भी अंकन होता है।

इतिहास के पुनर्निर्माण में ताम्रपत्रों (कॉपर प्लेट) का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पत्थर के अतिरिक्त विभिन्न धातुओं यथा कॉपर, पीतल, चांदी आदि से निर्मित ताम्रपत्रों पर उद्धृत लेख भारत के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं, जिनके माध्यम से हमें तत्कालीन समाज की सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति, राजवंशों की वंशावलियां, किसी महत्वपूर्ण स्मरणोत्सव एवं राजा द्वारा दिये गये विभिन्न प्रकार के दान आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है, दक्षिण भारत से प्राप्त होने वाले ताम्रपत्रों की संख्या अधिक है। ताम्रपत्र मुख्यतः राजा, महाराजा एवं अन्य विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा जारी किये जाते थे।

सूर्यवंश के हरिराज का ताम्रपत्र

संकलन में गहड़वाल वंश के राजा मदन चन्द्र, गोविन्दचन्द्र, विजयचन्द्र, जयचन्द्र एवं हरिश्चन्द्रदेव, चहमान वंश, राष्ट्रकूट वंश, चन्देल वंश, एवं कुमाऊं के विभिन्न राजाओं के ताम्र लेख संग्रहीत हैं। उ.प्र. के फर्रूखाबाद के जिरगुआर से प्राप्त 78.7 x 42.0 से.मी. माप का ताम्रपत्र, जिस पर एक सील भी उद्धृत है, संग्रह की अनमोल निधि है। इस पर चतुर्भुजी देवी एवं राजा देवशक्ति (ताम्र पत्र जारी करने वाले) की वंशावली का अंकन है। सातवीं शती ई. का सिमेरिया से प्राप्त पाण्डुवर्मन का ताम्रपत्र, जिस पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार राजा पाण्डुवर्मन द्वारा ब्राह्मणों को दान में दी गयी भूमि का उल्लेख है एवं बांसखेड़ा, मधुबन से प्राप्त ताम्रपत्र जिस पर राजा हर्ष का

कुमाऊँ के कल्याणचन्द का ताम्रपत्र

कुमारचन्द्र देव (ताम्रपत्र)

लेख भी है एवं चाण राजा भारती चन्द (कुमाऊँ) के समय का ताम्रपत्र (8"×5½") जिस पर देवनागरी लिपि में रूद्र दामोदर द्वारा सम्भू एवं कीनू को भूमि दान का उल्लेख है अति महत्वपूर्ण हैं।
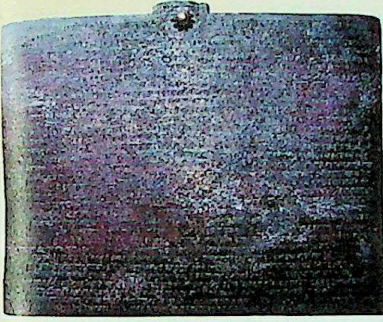
(क) मौखरी नरेश ईशानवर्मन का देवकली ताम्रपत्र लेख : यह ताम्रपत्र उत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर जिले में स्थित देवकली नामक गांव से नहर उत्खनन के दौरान प्राप्त हुआ है। इस आयताकार ताम्रपत्र (29.0 x 22.5 से.मी.) के ऊपरी मध्य भाग में मुद्रा अंकित है। मुद्रा पर मानव सिर युक्त पक्षी के रूप में गरूड़ आकृति है। लेख लगभग आठवीं शताब्दी की संस्कृत भाषा में अंकित है। इस लेख का उद्देश्य ईशान वर्मा द्वारा अपने माता–पिता के पुण्य हेतु ग्राम दान का उल्लेख करना है।

(ख) जयचन्द्रदेव का कमौली ताम्रपत्र लेखः कमौली, वाराणसी से प्राप्त 1171 ई. का यह तामपत्र लेख वर्ष 1893–94 में संग्रहालय को प्राप्त 25 ताम्रपत्र लेखों में से एक है, जिसकी माप 49 x 37 से.मी. है। प्लेट के ऊपर 25 पंक्तियों में नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में लेख उद्धृत है।

(ग) पीतल की प्लेट : कुरान की आयत युक्त पीतल की प्लेट जिसकी परिधि 13½ इंच है सम्भवतः बुरी नज़र एवं प्रेत आत्माओं से रक्षा हेतु प्रयुक्त होती रही होगी, संग्रह में संग्रहीत है।

अनुभाग–9 : बर्तन एवं ईंट

मनुष्य ने जब कृषि कर्म करना प्रारम्भ किया, तो सर्वप्रथम अनाज को इकट्ठा करके सुरक्षित रखने के लिये उसने मिट्टी का बर्तन बनाना प्रारम्भ किया।

पिछले कुछ दशकों में उत्खनन में प्राप्त बर्तनों का अध्ययन विशेष महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि इनके माध्यम से पुरातत्वविदों को ऐतिहासिक कालक्रम, व्यापार एवं तकनीक के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। आधुनिक वैज्ञानिक विकास एवं सांख्यिकीय तकनीक के माध्यम से बर्तनों का विश्लेषण और भी अधिक रोचक एवं आसान हो गया है। किसी भी उत्खनन में प्राप्त बर्तनों के
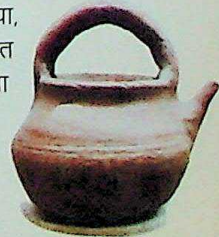
गुप्त कालीन पात्र

हड़प्पा कालीन पात्र

अध्ययन से तत्कालीन सभ्यता की कला अभिरूचि का ज्ञान प्राप्त होता है। चित्रित पात्र पर अंकित कलाकारी एक विशिष्ट सभ्यता को इंगित करती है। कभी–कभी बर्तन के साथ कुछ अनाज के दाने भी चिपके हुए मिलते हैं, जिसका वैज्ञानिक शोध करने पर तत्समय में प्रचलित फसल के विषय में भी जानकारी प्राप्त होती है। बर्तन बनाने में प्रयुक्त मिट्टी के अध्ययन से उसके रासायनिक घटकों का भी पता लगता है, जिसके माध्यम से उसकी उत्पत्ति एवं स्थान के विषय में सूचना प्राप्त होती है।

एन.बी.पी. पात्र
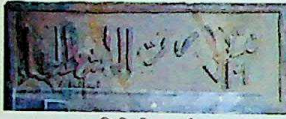
अभिलिखित ईंट

संग्रहालय के संग्रह में ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण नवपाषाण युगीन बर्तन, सिन्धु घाटी सभ्यता के क्षेत्रों से प्राप्त मृण्पात्र, अलंकृत पात्र, लाल चित्रित पात्र, उत्तरी काले चमकदार पात्र हैं। इसके अतिरिक्त सुन्दर कलाकृतियों युक्त जार, प्लेट एवं अन्य बर्तन यथा–मौर्यकालीन काले चमकदार मिट्टी के बर्तन तथा काले–सलेटी बर्तन आदि संग्रहीत हैं।

संग्रहालय में प्राचीन ईंटों का भी उत्कृष्ट संग्रह है। अधिकतर ईंट अभिलिखित नहीं है, परन्तु मौर्यकालीन अभिलिखित ईंट, जिस पर ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण है, अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अभिलिखित ईंटें (8x5") अहिच्छत्र, रामनगर, जनपद बरेली से भी प्राप्त हुई हैं, इस पर प्रथम शती ई.पू. का ब्राह्मी लिपि में लेख उत्कीर्ण है जिसमें एक नये राजवंश ''गोपालिसा राजना कौटसी'' का उल्लेख है। इस संग्रह में जाजमऊ (कानपुर) में उत्खनन से प्राप्त कुषाण काल की ईंटो का महत्वपूर्ण संग्रह भी संग्रहीत है।

अभिलिखित ईंट

अनुभाग–10 : मुहर

प्राचीन काल से ही मुहरों का प्रचलन विभिन्न रूप में किया जाता रहा है। विविध ऐतिहासिक साक्ष्यों के साथ–साथ मुहर का अपना अलग ही महत्व है। इसके माध्यम से तत्कालीन सभ्यताओं के विस्तार का मूल्यांकन किया जा सकता है। कभी–कभी उस पर जारी करने वाले का नाम भी अंकित होता है, जिससे तत्कालीन शासक के विषय में भी अनुमान लगाया जा सकता है। मुहर पर अंकित लेख एवं आकृतियों से तत्कालीन सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के साथ–साथ तत्समय में प्रचलित भाषा की जानकारी भी प्राप्त होती है।

राज्य संग्रहालय में मिट्टी, चांदी, स्वर्ण, लौह, ताम्र, पीतल, कार्नेलियन आदि की मुहरों का अदभुत संग्रह है। कुछ मिट्टी की मुहरें प्राचीन काल के राजनैतिक एवं धार्मिक इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं। संग्रहालय में संग्रहीत अधिकतर मुहरें क्रय की गई हैं। संग्रह में उपलब्ध कुछ दुर्लभ मुहरों का विवरण निम्नवत है:–

स्वर्ण मुहर : स्वर्ण मुहर जिसे शाह आलम द्वितीय के नाम से मुर्शिदाबाद मिंट से ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा जारी किया गया एवं शाहजहाँ, जहाँगीर एवं औरंगजेब द्वारा जारी 200 तोले की स्वर्ण मुहर अति महत्वपूर्ण है।

चांदी की मुहर : उर्दू एवं फ़ारसी भाषा में उत्कीर्ण मुग़ल कालीन मुहर तथा कुमारगुप्त दितीय की मुहर, जिस पर गुप्तकाल की वंशावली उत्कीर्ण है एवं 9 पीढ़ियों का वर्णन है, महत्वपूर्ण है।

कार्नेलियन मुहर : सीतापुर के उचगांव से प्राप्त 1287 हिजरी की मुहर, जिस पर ''नवाब आफ़ाक बहु वज़ीर बेगम साहेब'' उत्कीर्ण है।

ताम्र की मुहर : बादशाह सुल्तान सुलैमान ख़ान की लगभग 1350 ई. की मुहर, जिसमें उर्दू भाषा में लेख उत्कीर्ण है, विशेष उल्लेखनीय है।

ताम्र की मुहर

मिट्टी की मुहर : गुप्त काल (चौथी शती ई.पू.) की मुहर, जिस पर एक सांड़ सिर ऊपर करके बैठा है एवं इसके बगल में एक पुरूष आकृति है। एक अण्डाकार मुहर, जिसके अग्र भाग में अंकित गरूण पक्षी के बायीं ओर यूपा और दायीं ओर धर्म चक्र युक्त स्तम्भ है एवं एक अन्य गुप्तकालीन अभिलिखित अण्डाकार 4x3 से.मी. माप की मुहर, जिस पर सिंह से युद्धरत मानव अंकित है, संग्रह में संग्रहीत हैं। सीतापुर के हरगांव से प्राप्त मिट्टी की मुहर, जिसके अग्रभाग पर एक ओर सूर्य की किरण, दूसरी ओर पेड़ तथा स्वास्तिक चिन्ह एवं पृष्ठ भाग पर ब्राह्मी लिपि में *''नेगामा''* उत्कीर्ण है, अति महत्वपूर्ण है।

गोविन्द चन्द्रदेव की मिट्टी की मुहर

(घ) मिश्रित धातु की मुहर : गुप्तकालीन **14.5×11.5** से.मी. माप की उत्तर प्रदेश के भीतरी (गाज़ीपुर) से प्राप्त लगभग 5 वीं शती ई. की कुमारगुप्त द्वितीय की मुहर महत्वपूर्ण है। इस अण्डाकार मुहर के ऊपरी भाग पर कल्पित गरूण पक्षी उत्कीर्ण है, जिसका मुख मनुष्य का एवं शरीर पक्षी का है। इसके सिर पर घुंघराले बाल, गर्दन के चारों ओर लिपटा नाग, दाहिने एवं बायें पंख के ऊपर धुंधला शंख तथा चक्र का चिन्ह अंकित है। पक्षी के नीचे दो क्षैतिज (आड़ी) रेखाएं है, जिसके नीचे ब्राह्मी लिपि में गुप्त राजा नरसिंहगुप्त एवं कुमारगुप्त प्रथम की वंशावली अंकित है। लेख में तीन रानियों– अनन्ता देवी, वत्सादेवी एवं महालक्ष्मी का भी उल्लेख है।

भीतरी सील (कुमारगुप्त द्वितीय)

अनुभाग–11 : मनका

मनकों का प्रचलन सर्वप्रथम अफ्रीका महाद्वीप में आरम्भ हुआ। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इसकी तिथि लगभग 10 हज़ार ई.पू. तक है। मनकों को बनाये जाने में प्रयोग में लायी जाने वाली सामग्री के अध्ययन से तत्कालीन सभ्यता का प्रौद्योगिकीय विकास, तिथि निर्धारण, कला एवं संस्कृति में योगदान की जानकारी प्राप्त होती है। किसी भी अन्य पुरावशेष की तुलना में मनके को बनाने में प्रयुक्त होने वाली सामग्री विविधतम है। मनके मुख्य रूप से हड्डी, कांच, विभिन्न धातुओं, हाथीदांत, पत्थर व मिट्टी आदि से बनाये जाते हैं। विभिन्न रंग एवं आकार के मनकों की महत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि वह समाज के किस वर्ग द्वारा एवं किस प्रयोजन हेतु प्रयोग में लाया जा रहा है। मनकों से विभिन्न प्रकार के गहने एवं साज–सज्जा की सामग्री बनायी जाती हैं। राज्य संग्रहालय में कांच, कार्नेलियन, मिट्टी, स्वर्ण, पत्थर आदि के मनकों का विविध संग्रह है।

कौशाम्बी से प्राप्त दूसरी शती ई0पू0 के पशु–पक्षियों की आकृतियुक्त मनके अत्यन्त ही सुन्दर एवं उत्कृष्ट कोटि के हैं। संग्रह के कुछ मनकों का विवरण निम्नवत है:–

वाराणसी के राजघाट से प्राप्त बैल, धर्मचक्र, गाय, एवं तोते की आकृति के काँच से निर्मित मनके, बाघ आकृति का कार्नेलियन का मनका, मकरमुखी मिट्टी का मनका आदि। बस्ती का कोपिया टीला जो कि सम्भवतः कांच बनाने का कारखाना लगता है, से प्राप्त कुछ कांच के मनके विदेशी डिजाइन के हैं एवं अत्यन्त ही सुन्दर हैं। मुज़फ़्फ़रनगर के माण्डी से प्राप्त सोने के बहुमूल्य एवं अर्द्धबहुमूल्य धातु, विभिन्न रंग के पत्थरों, पट्टीदार (काला–सफेद) अगेट तथा स्वर्ण के सुन्दर मनके विशेष उल्लेखनीय हैं। मिट्टी के प्राचीन मनके का जाजमऊ (कानपुर), घोसी (मऊ), कोसम (प्रयागराज), तक्षशिला, रावलपिण्डी, (पाकिस्तान) से प्राप्त एक अनोखा संग्रह संग्रहालय में संरक्षित है।

मिट्टी के मोती

कार्नेलियन का मोती

अनुभाग-12 : पाण्डुलिपि एवं फ़रमान

मनुष्य प्राचीन काल से ही ताड़पत्र, चरवा (जानवर की खाल) एवं पेड़ों की छाल पर विभिन्न लिपि एवं भाषा में लेख अंकित करता आया है। आगे चलकर कागज के आविष्कार से और भी परिष्कृत पाण्डुलिपियां तैयार की जाने लगीं। कुछ पाण्डुलिपियों को अधिक सुन्दर एवं आकर्षक बनाने हेतु उसे विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक रंगों एवं स्वर्ण से चित्रित भी किया जाता था। राज्य संग्रहालय के संकलन में अवध क्षेत्र एवं भारत के अन्य भागों से प्राप्त सनद, क़िता, फ़रमान, रूक्क़ा, हुकुमनामा, मुख़्तारनामा एवं अन्य पाण्डुलिपियां संग्रहीत हैं। स्वर्ण एवं प्राकृतिक रंगों से चित्रित पश्तों भाषा की अमूल्य पाण्डुलिपि ''यूसुफ़ जुलैख़ा'', फारसी भाषा में पहाड़ी शैली की नसीब खां रचित चित्रित महाभारत (1845 ई.) तथा रामायण, अकबर कालीन हरिवंश पुराण, मीर हसन रचित मसनवी शेरूलबयां, फिरदौसी रचित शाहनामा (1845 ई.) आदि फ़ारसी भाषा की उत्कृष्ट कलाकृतियां हैं। संग्रह में वाराणसी से प्राप्त पंचरत्नी गीता लगभग 1850 ई., सचित्र रामायण लगभग 17 वीं शती ई. एवं श्रीमद्भगवतगीता लगभग 1850 ई. आदि महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ संग्रहीत हैं।

अकबर कालीन हरिवंश पुराण

हस्तलिखित ग्रन्थों के दुर्लभ संग्रह में लगभग 250 वर्ष पुरानी संस्कृत भाषा में चित्रित श्रीमद्भगवतगीता, चित्रित जैन कल्पसूत्र, चित्रित उत्तराध्ययन सूत्र (अपभ्रंश प्रकार), संग्रहणी सूत्र, सुरसुन्दरी संकलन की शोभा बढ़ाते हैं। तिब्बत की पाण्डुलिपियाँ यथा तिब्बती देवता यिदम पर आधारित पाण्डुलिपि एवं पाण्डुपत्र तथा ताड़पत्र पर लिखी नेपाली पाण्डुलिपि भी संकलन में सुरक्षित है।

अरबी भाषा के महान चिंतक वहा-उद्-दीन अमली रचित ''शहर-ए-अरबैन'' एवं हिरण की खाल (चरवा) पर लिखा कुरान अरबी भाषा की विशेष उल्लेखनीय पाण्डुलिपियां हैं।

उर्दू भाषा की प्रमुख पाण्डुलिपियों में कृष्ण लीला, कश्मीरी पण्डित तोताराम रचित कांगड़ा शैली की चित्रित सुख सागर, जिसमें 1004 पृष्ठ हैं एवं 59 लघुचित्र बने हैं, मलिक मोहम्मद जायसी रचित पदमावत् (18 वीं शती ई.), जिसमें 42 लघुचित्र हैं, संग्रह की अनमोल निधि हैं। महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द की व्यक्तिगत पत्रावली एवं सेवा पुस्तिका भी इस संग्रह में संग्रहीत है।

अनुभाग-13 : छाप एवं मुद्रांकन

राज्य संग्रहालय में उडीसा के उदयगिरि का हाथीगुम्फा लेख, अशोक स्तम्भ का लेख एवं कुछ अन्य महत्वपूर्ण शिलालेखों के छाप संग्रहीत हैं। इसके अतिरिक्त एक अति सुन्दर 22 प्रकार के टिकटों / मुद्रांकन का संग्रह भी संकलन में संग्रहीत है।

अनुभाग-14 : छायाचित्र

किसी सभ्यता के अतीत को वर्तमान से जोड़ कर इतिहास के पुनर्निर्माण में छायाचित्रों का महत्वपूर्ण योगदान है तथा यह मूर्त धरोहर का एक रूप है। छायाचित्र ऐतिहासिक तथ्यों को प्रामाणिकता प्रदान करने के साथ ही तत्कालीन सामाजिक परिवेश पर भी प्रकाश डालते हैं। इनके माध्यम से तत्कालीन वेशभूषा, रहन-सहन, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, भौगोलिक परिदृश्य आदि का आंकलन किया जा सकता है। राज्य संग्रहालय में अवध प्रान्त के महत्वपूर्ण स्थानों तथा इमारतों के कुछ दुर्लभ छायाचित्रों का संकलन संग्रहीत है।
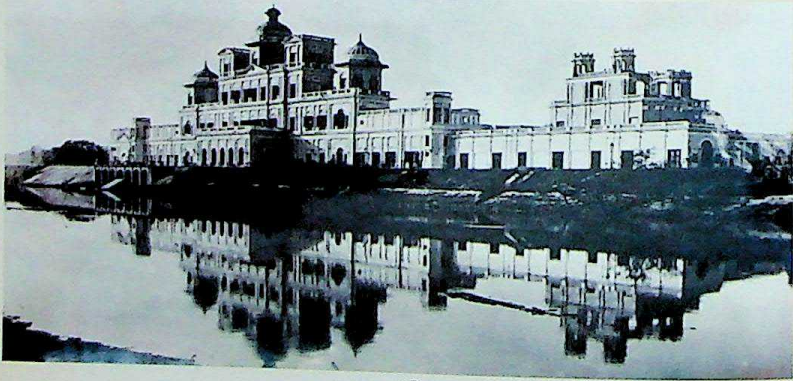
छत्तर मंज़िल

किंग्स् पैलेस-कोठी रौशनुददौला

रूमी दरवाज़ा

अनुभाग-15 : अस्त्र-शस्त्र

राज्य संग्रहालय में प्राचीन काल से लेकर मुग़ल, मराठा, नवाब एवं ब्रिटिश काल के विभिन्न प्रकार के अस्त्र–शस्त्र संग्रहीत हैं। इस संग्रह में पाषाण एवं ताम्रयुगीन शस्त्र यथा सेल्ट, शार्पनर, हारपून, कटार, बरछी, कुल्हाड़ी, भाला, बाण फलक आदि संग्रहीत हैं। मध्यकालीन अस्त्रों में तलवारें, भाला, बरछा, फरसा, बल्लम, बन्दूक, कुल्हाड़ी, गड़ासा, तीर–धनुष, आधुनिक युग की बायोन्ट पिस्तौल, जापानी एन.जी.पी, तोप, खन्जर आदि मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के शस्त्र यथा–ज़िरह बख़्तर, ढाल, टोपी, आदि संग्रह में संरक्षित हैं।

ताम्र निर्मित प्रागैतिहासिक अस्त्र

प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान समय तक प्रयोग में लाया जाने वाला अस्त्र फरसा है, जो नुकीली चोंच के समान अर्धचन्द्राकार अथवा कुल्हाड़ी की भांति होता है। कुछ फरसे अलंकृत भी होते थे। संकलन में एक अलंकृत फरसा राधा–कृष्ण के अंकन युक्त है। धातु का बना मानवाकृतियों से सज्जित यह फरसा सज्जाकला का उत्कृष्ट नमूना है। इसमें महल की आकृति को उद्धृत किया गया है, जिसमें चारों ओर पुष्प एवं लताओं से सज्जित श्री कृष्ण के एक ओर राधा एवं दूसरी ओर हाथ में कलश लिये गोपी खड़ी है।

लौह धातु निर्मित कटार

अभिलिखित फरसा

एक अति सुन्दर अलंकृत तलवार, जिसमें विभिन्न पशु–पक्षियों यथा बाघ, हिरण, भेड़, घोड़ा, हाथी आदि को आक्रामक रूप में एक दूसरे के पीछे दौड़ते हुए दिखाया गया है, अति महत्वपूर्ण है। मराठा घुड़सवारों में लोकप्रिय लम्बी, लचीली, तेज़ धार वाली, मज़बूत मूंठ के साथ–2 कुहनी तक के भाग को ढंकने के काम आने वाली पट्टा तलवार, तेज़ धार युक्त फारस निर्मित धातु की शमशीर तलवार, जिसका मूंठ पिस्टल की तरह हल्का होता है, संकलन में काफी संख्या में है। यद्यपि शमशीर तलवार पैदल सेना के लिए बनाई गई थी, परन्तु घुड़सवारों द्वारा भी उपयोग में लाई जाती थी।

किलिज एक अन्य प्रकार की तलवार है, जिसकी धार चौड़ी एवं शमशीर की तरह थोड़ा टेढ़ापन लिये होती है। इसका मूंठ पिस्टल की तरह हल्का तथा सींग हाथीदांत, धातु एवं कभी–कभी प्रस्तर द्वारा गढ़ा हुआ होता है। खड्ग तलवार बहुत चौड़ी एवं काफी भारी होती है। इसका प्रयोग पशुबलि के जानवरों को काटने के लिये किया जाता था। ब्रिटिश काल में सबसे लोकप्रिय तलवार किर्च थी, जो बिल्कुल सीधी, पतली दुधारी एवं नुकीली होती थी। संग्रहालय के संग्रह में उपरोक्त वर्णित सभी प्रकार की तलवारें संरक्षित हैं।

सैनिक ज़िरह बख़्तर की पोशाक में

सोने के पत्तर से मढ़ा हुआ फूल–पत्तियों से अलंकृत खंजर जिसके खोल पर एक सील भी अंकित है अतिमहत्वपूर्ण है। इसके साथ ही हाथीदांत के मूंठ वाली कटार, ज़म्बिया, पेशेकब्ज़, जेड निर्मित एवं रत्न जड़ित कटार संकलन की अमूल्य निधि हैं। अरब निर्मित ज़म्बिया कटार थोड़ा टेढ़ापन लिए हुए एवं तेज़ धार वाली है तथा पेशेकब्ज़ प्रकार की कटार बिल्कुल सीधी, केवल एक ओर धार वाली, पतली, मूंठ की ओर चौड़ी, अग्रभाग तक आते–2 सुई की नोक की तरह पतली हो जाती है। इसका बकरी अथवा भेड़ के आकार का मूंठ प्रायः लकड़ी, हाथीदांत, सींग एवं अन्य धातु निर्मित होता है, संकलन में एकफलकीय, द्विफलकीय एवं त्रिफलकीय कटारों का विविध संग्रह है। लौह निर्मित एकफलकीय नुकीली कटारों का मूंठ कभी–2 बहुमूल्य पत्थर का भी बना होता है।

पिस्टल

प्राचीन भारतीय युद्ध परम्परा में तीर–धनुष युद्ध के मुख्य शस्त्र थे। तीर–धनुष, बांस अथवा काष्ठ निर्मित धनुष के दोनों सिरे एक दूसरे से कसे रहते थे। अर्थशास्त्र के मतानुसार धनुष की लम्बाई लगभग 7.5 फुट होनी चाहिये। तीरों की गति अधिक तीव्र करने के उद्देश्य से उन पर कभी–कभी पक्षियों के पंख भी लगे रहते थे। इन तीरों को जिस थैले/आदान में रखा जाता था, उसे तरकश कहते हैं, जो योद्धाओं की पीठ पर लदा रहता था। राज्य संग्रहाय के संकलन में विभिन्न आकार व प्रकार के तीर–धनुष तथा तीरों को रखने वाले तरकश संग्रहीत हैं।

अनुभाग–16 : वाद्ययंत्र संग्रह

अवध के चौथे नवाब आसफ़–उद्–दौला की ताजपोशी के उपरान्त अवध की राजनीति में एक बड़ा परिवर्तन आया। इनके शासन काल में लखनऊ के शाही दरबार पर विशेष ध्यान दिया गया। लखनऊ के महत्व को बढ़ाते हुए सन् 1775 में अवध की राजधानी फ़ैज़ाबाद (अयोध्या) से लखनऊ स्थानांतरित कर दी गयी। फलस्वरूप लखनऊ शहर ने प्रसिद्धि एवं समृद्धि प्राप्त की। नवाब आसफ़–उद्–दौला ने संगीत एवं नृत्य को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया। नवाबों के मनोरंजन का मुख्य स्रोत नृत्य एवं संगीत था।

वीणा

शाही दरबार में कुछ बहुत ही निपुण नर्तक–नर्तकियाँ एवं संगीतकार दरबार की शोभा थे। लखनऊ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के लिये विश्व विख्यात है। यहाँ के कई राग, रचनाएं, ताल प्रसिद्ध कवियों की कविताओं पर आधारित हैं। लखनऊ घराने की गायन कला बहुत ही परिष्कृत है एवं इसकी प्रत्येक बारीकी को संगीतकारों द्वारा बड़ी ही गम्भीरता से लिया गया है, ताकि संगीत सुनने वाले संगीत का पूरा आनन्द उठा सकें। प्रसिद्ध लखनऊ घराने की नींव नवाबों के शाही दरबार में पड़ी। नवाबों द्वारा कथक, ठुमरी आदि के विकास में विशेष योगदान दिया गया। संग्रहालय में लखनऊ एवं उत्तर प्रदेश के अन्य भागों से प्राप्त विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्र संग्रहीत हैं। कुछ वाद्ययंत्र यथा– तबला, वीणा, शहनाई, बांसुरी, आशिक– माशूक, पखावज, सारंगी आदि संकलन में संरक्षित हैं।

आशिक–माशूक

अनुभाग–17 लघुचित्र एवं चित्र संग्रह

संग्रहालय में लगभग 30 विभिन्न शैलियों के लघुचित्र एवं पट्ट चित्रों का उत्कृष्ट संग्रह है। चित्रकला की विभिन्न शैलियों में कांगड़ा, बसोहली, चम्बा, दिल्ली, कम्पनी, अवध, मुगल, सिख, बूंदी, राजस्थानी, आधुनिक कला, इण्डो–पर्शियन, पर्शियन, बीकानेर, दक्कन, मेवाड़, राजपूत, उदयपुर आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। विभिन्न शैलियों में राग–रागिनी, बारहमासा, रसिक प्रिया, फड़, पिछवई, तिब्बती कला–थंका, गंजीफा (नेपाल एवं तिब्बत) बंगाल शैली का पट्ट, जिसमें रामायण की विभिन्न कथाओं का चित्रण है, संकलन की शोभा बढ़ाते हैं।

मुग़लकाल में चित्रकला को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला। शाही संरक्षण में इस कला को प्रत्येक क्षेत्र में फलने–फूलने का अवसर प्राप्त हुआ। संग्रहालय के संग्रह में मुग़ल शैली का अनोखा संग्रह संग्रहीत है, जिसके चित्रों की विशेषता चित्र के चारों ओर फूल–पत्ती तथा पशु–पक्षियों युक्त स्वर्ण किनारा है। इन चित्रों में परिधान तथा प्रकृति के विभिन्न अंगों जैसे कि पेड़–पौधों एवं स्थानीय पशु–पक्षियों का भी अत्यन्त ही सुन्दर एवं सजीव चित्रण है। इस शैली के कुछ उत्कृष्ट लघुचित्र : योगिनी (लगभग 1800 ई.), शाहजहाँ की शबीह (लगभग 1725 ई.), मुग़ल सुन्दरी (लगभग 1725 ई.), लैला–मजनू (लगभग 16 वीं शती ई.), नवाब एवं संगीतकार (लगभग 1760 ई.), चौगान खेलती स्त्रियाँ (लगभग 1750 ई.), रागिनी रामकली (लगभग 1825 ई.) आदि हैं।

राजस्थानी शैली का प्रतिनिधित्व करने वाले चित्रों में राग–रागिनी, नायिका भेद, बारहमासा, रामायण, भागवत् व देवीमहात्म्य दृष्टव्य हैं। इन चित्रों में प्रायः लाल, हरे, पीले, नीले, रंगों का प्रयोग हुआ है एवं टोपी, पायजामा, लंहगा, ओढ़नी वस्त्र आदि चित्रित किये गये हैं। राजस्थान में विकसित मेवाड़, आमेर, मारवाड़, कोटा, बूंदी, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, नाथद्वारा, दिलवाड़ा, सिरोही, नागौर एवं किशनगढ़ आदि विभिन्न शैलियों के लघु चित्र संग्रह में संरक्षित हैं। इनमें
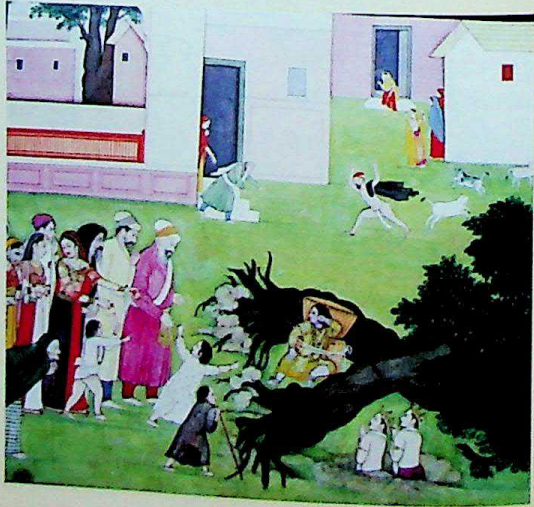
यमला–अर्जुन उद्धार–कागड़ा शैली

नृत्यरत् कृष्ण, मारवाड़ शैली
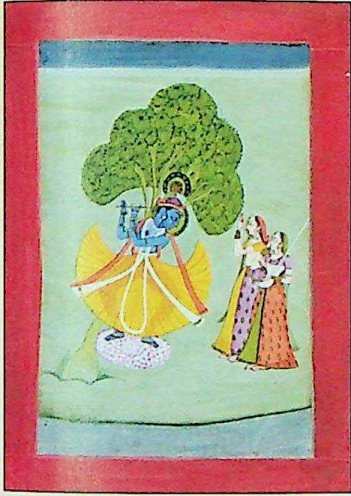
गज–युद्ध (लगभग 1735 ई.), वंशीधर एवं गोपिकाएं (लगभग 1750 ई.), अश्विन मास (दशहरा) (लगभग 1800 ई.) आदि बूंदी–कोटा शैली के चित्र हैं। होली खेलते नेमि और कृष्ण (लगभग 1825 ई.), द्रौपदी स्वयंवर (लगभग 1800 ई.), गोपिकाओं से होली खेलते कृष्ण (लगभग 1775 ई.), आमोदरत राजकुमारी (लगभग 1710 ई.) आदि जयपुर– जोधपुर शैली के चित्र हैं। नवाब और संगीतकार (लगभग 1760 ई). दक्किनी शैली; कृष्ण लीला (लगभग 1775 ई.) मेवाड़ शैली; राम के जन्म का दृश्य (लगभग 1775 ई.), मारवाड़ शैली; नर्तन मुद्रा में नवयौवना लगभग 1825 ई., नाथद्वारा शैली; राधा–कृष्ण (लगभग 19 वीं शती ई.) किशनगढ़ शैली; दानवों का वध करती माँ दुर्गा (लगभग 18 वीं शती ई.) सिरोही शैली; राजा अनूप सिंह (लगभग 1700 ई.) बीकानेर शैली; केशी वध (लगभग 1700 ई.) मालवा शैली; राधा–कृष्ण मिलन (लगभग 1775 ई.) एवं युद्धरत झांसी की रानी (लगभग 17 वीं शती. ई.) दतिया शैली के लघुचित्र संकलन में संग्रहीत हैं।

राज्य संग्रहालय में पहाडी शैली का अनूठा संग्रह है। मुगल शासन के पतन के उपरान्त कुछ चित्रकार जम्मू, पंजाब, हिमांचल प्रदेश उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के पहाड़ी अंचलों में स्थित शाही दरबारों की शरण में चले गये। उन्होंने बसोहली, जम्मू, कांगड़ा, छम्ब, कुल्लू, मण्डी, बिलासपुर और गढ़वाल आदि चित्रकला की प्रशंसनीय पहाड़ी शैली को जन्म दिया। इस शैली के कलाकारों ने पौराणिक एवं धार्मिक दृश्य, नायक–नायिका, राग–रागिनी, बारहमासा आदि कथानकों को विषय–वस्तु बनाया। व्योमासुर वध (लगभग 1750 ई.), बसोहली शैली, ऊखल बंधन (लगभग 1760 ई.) कांगड़ा शैली; राजा के समक्ष कलश नृत्य (लगभग 1780 ई.) जम्मू शैली; शिव से मिलते बलराम एवं कृष्ण (लगभग 1700 ई.) कुल्लू शैली; कृष्ण को मोहित करती राधा (लगभग 1900 वीं शती ई.) गढ़वाल शैली आदि दुर्लभ कलाकृतियाँ संग्रह में संग्रहीत हैं।

विराट रूप विष्णु, पहाड़ी शैली

पट्ट चित्रों का आरम्भ भारत में (लगभग 18 वीं शती ई.) में हुआ, जिसमें नायक को केन्द्र मानकर कथावस्तु का चित्रण किया जाता है। इसमें प्रमुख चित्र राजस्थान से प्राप्त पाबू जी की फड़ है। तिब्बत के बौद्ध मठों में स्थापित मूर्ति के पीछे टांगे जाने वाले पट्ट–चित्र को ''थंका'' कहते हैं। राज्य संग्रहालय लखनऊ के संकलन में तिब्बत के देवी–देवताओं के अंकन युक्त नेपाल एवं तिब्बत की थंका चित्रकला का समृद्ध संग्रह है। इसके अतिरिक्त चित्रकला अनुभाग में संकलित मुहर्रम का जुलूस (लगभग 19 वीं शती ई.), अवध शैली; कबूतर (लगभग 1700 ई.) कम्पनी शैली; केवट अनुराग (लगभग 20 वीं शती ई.) मधुबनी शैली लघुचित्र विशेष अवलोकनीय हैं।

संग्रह में लगभग 150 रागमाला लघुचित्र हैं, जिसमें बीकानेर शैली, पहाड़ी शैली, आमेर शैली एवं बूंदी शैली के चित्र अधिक में हैं। इसके अतिरिक्त मालवा, मेवाड़ कोटा, जयपुर तथा अन्य शैलियों के लघुचित्र भी हैं। संकलन में Marquis of Kedleston द्वारा Daniell water colors के लघुचित्र, जिसमें प्राचीन इमारतों एवं स्थानों को दर्शाया गया है, का महत्वपूर्ण संग्रह है।

संकलन के कुछ दुर्लभ लघुचित्रों का विवरण निम्नवत है:–

1. बलराम द्वारा यमुनाकर्षण (लगभग 1800 ई.), गढ़वाल शैली, चित्रकार मोलाराम

चित्र में बलराम अपने आयुध हल द्वारा रूक्ष पहाड़ की चट्टान से पानी निकाल रहे हैं। पर्वत की गुफा से एक स्त्री निकल रही है, जिसके हाथ में जल पात्र है। बलराम यमुना नदी का मार्ग बदल रहे हैं, वे केवल अधोवस्त्र पहने हुए हैं तथा उनका तीन कल्गियों वाला मुकुट अति सुन्दर है। ऊँची पहाड़ी पर राज प्रासाद है तथा नीचे यमुना नदी है, जिसमें चक्रवातीय लहरें तथा जलचर बड़ी ही कुशलता से बनाये गये हैं। उर्ध्वगामी शाखाओं वाले पुष्पित मन्दार के वृक्ष इस चित्र के विशेष आकर्षण हैं।
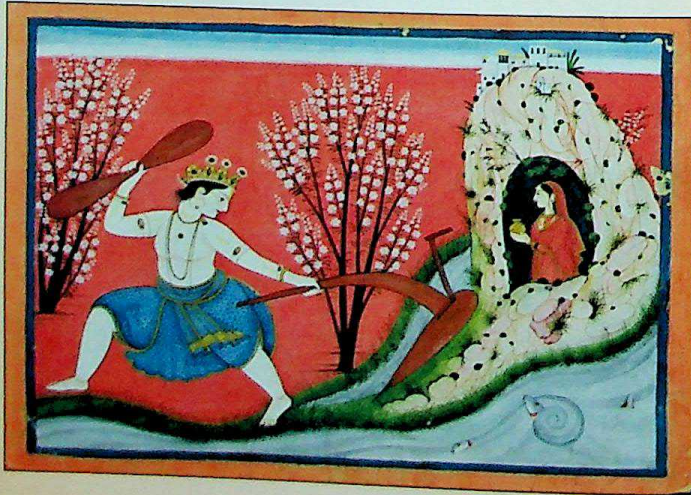
बलराम द्वारा यमुनाकर्षण, गढ़वाल शैली

2. **राधा–कृष्ण (लगभग 1875 ई.), गढ़वाल शैली**

उत्कृष्ट कोटि के इस चित्र में कृष्ण राधिका को एक टक निहार रहे हैं तथा उनके साथ गोप ग्वाल सखा भी हैं। राधा की झीनी ओढ़नी, बड़ी नथ, मोतियों की माला विशेष रूप से दृष्टव्य है। भवन की बाहरी सज्जा तथा छत अत्यन्त बारीकी के साथ बनाई गई है तथा एक पत्तियों रहित वृक्ष भी सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है। पहाड़ियों की ऊँचाई पर सुरक्षा द्वार दिखाये गये हैं, चित्र के पीछे महाकवि बिहारी के दोहे अंकित हैं।

3. **राधा के पैर से कांटा निकालते कृष्ण (लगभग 1825 ई.), कांगड़ा शैली**

तीन दृष्यों को समावेषित करते इस चित्र के प्रथम दृश्य में राधा और कृष्ण विपरीत दिशाओं में जाते हुए दिखाए गए हैं। इसमें स्पष्ट रूप से प्रेम की प्रगाढ़ता को चित्रकार दर्शाना चाहता है। दूसरे दृश्य में कृष्ण को राधा के पैरों से कांटा निकालते हुए दर्शाया गया है और अन्तिम दृश्य में राधा अपनी सखी से कृष्ण प्रेम का वर्णन करती दिखाई दे रही हैं।

4. **कृष्ण को पान खिलाती राधा (लगभग 1750 ई.), कांगड़ा शैली**

चित्र में वंशीधर कृष्ण को एक पैर मोड़ कर खड़े बांसुरी बजाते हुए, प्रेम भाव से राधा की ओर देखते हुए चित्रित किया गया है। राधा के बायें हाथ में पानदान है एवं दाहिने हाथ से कृष्ण को पान खिला रही हैं। नीलवर्ण कृष्ण ने पीले रंग की धोती पहन रखी है। राधा एवं कृष्ण दोनों एक दूसरे से सामन्जस्यपूर्ण संवाद मुद्रा में दिख रहे हैं। चित्र को अण्डाकार रूप देते हुए इसके चारों कोनों पर सुनहरें रंग से सुन्दर पुष्प एवं लताओं का अंकन है।

5. **गोपियों के साथ कृष्ण, बूंदी शैली** : केशव रचित रसिक प्रिया में विप्रलंभ श्रृंगार के पूर्वान राग वर्णन नामक अध्याय में वर्णित श्री कृष्ण के प्रकाश गुण कथन सवैया से युक्त चित्र के चारों ओर तूली बार्डर है एवं ऊपर के भाग में पीले आधार पर काले से सवैया अंकित है। यह चित्र बूँदी शैली की कलागत विशेषताओं के अनुरूप बना है। नीलवर्ण कृष्ण के साथ केले के पत्ते एवं अन्य पेड़ों की आकृति छरहरी, लावण्यमय एवं आकर्षक चित्रित हैं। चित्र पर अंकित सवैया, कवित्तों एवं दोहों में भाषागत दोष है, जो सम्भवतः लिपिकार की अज्ञानता के कारण है।
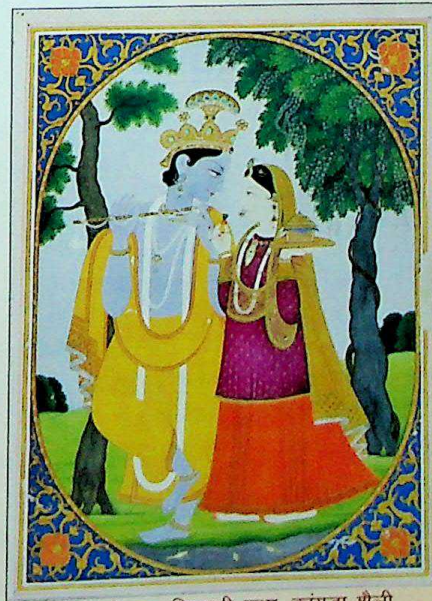
कृष्ण को पान खिलाती राधा, कांगड़ा शैली

अनुभाग–18 : स्वर्ण आभूषण

लगभग 5000 वर्ष पूर्व मानवजाति ने विभिन्न प्रकार के आभूषणों से स्वयं को सज्जित करना प्रारम्भ किया। प्रागैतिहासिक काल में सीप, हाथीदांत, हड्डी एवं विभिन्न पत्थरों के गहने प्रचलित थे। धीरे–2 धातु के अविष्कार के बाद स्वर्ण सबसे महत्वपूर्ण धातु के रूप में स्थापति हुआ, जिसके बने गहनों को तत्कालीन सभ्यता में कभी–कभी मृतक के साथ भी दफना दिया जाता था। ऐसी मान्यता थी कि यह गहने उसे अगले जन्म में काम आयेंगे। किसी स्थान के उत्खनन से प्राप्त गहनों से तत्समय की सामाजिक एवं आर्थिक अवस्था की जानकारी प्राप्त होती है।
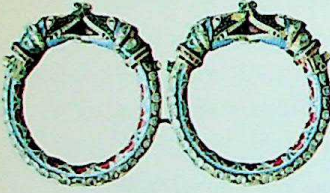
मीनाकारी कला से युक्त मकरमुखी स्वर्ण कंगन

रत्न जड़ित हार

प्राचीन काल से ही उत्तर प्रदेश विभिन्न सभ्यताओं का केन्द्र रहा है। अलग–अलग स्थानों के उत्खनन से इन सभ्यताओं के गहने तथा अन्य पुरावशेष प्राप्त हुए हैं, जिसमें से कुछ यथा सोने की अंगूठी, छल्ला, कान की झुमका, नाक की नथुनी, हार, पेन्डेन्ट आदि संग्रह में संग्रहीत हैं। जनपद मुज़फ्फ़रनगर के माण्डी से वर्ष 2000 में प्राप्त स्वर्ण आभूषण किसी भी हड़प्पा सभ्यता के स्थल से प्राप्त आभूषणों में सबसे समृद्ध संग्रह है। इसका कुछ भाग राज्य संग्रहालय, लखनऊ में संग्रहीत है, शेष राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली में संग्रहीत है। इसके अतिरिक्त लाल–हरी मीनाकारी के उत्कृष्ट नमूनों में मकरमुखी हंसुली एवं मोर तथा फूल–पत्तियों से अलंकृत पन्ना जड़ित सरपेंच महत्वपूर्ण हैं।
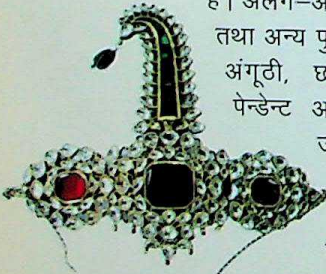
सरपेंच

अंगूठी

कल्गी

अनुभाग -19 : अन्य धातुओं एवं बहुमूल्य पत्थरों के आभूषण

अन्य धातुओं से बने आभूषणों में भगवान गणेश उत्कीर्णीत मूंगे, रत्न जड़ित हार, कड़े, चूड़ियाँ, मुकुट, अंगूठी विशेष रूप से दर्शनीय हैं। मुग़लकाल में विकसित हुई मीनाकारी कला राजस्थान के जयपुर एवं उत्तर प्रदेश के वाराणसी की विश्व प्रसिद्ध कलाओं में से एक है। इसे धातुओं पर रंग भर कर बनाया जाता है। मीनाकारी कला के अनेक सुन्दर आभूषण संग्रहालय के संकलन में संग्रहीत हैं।

पाज़ेब

पैरी
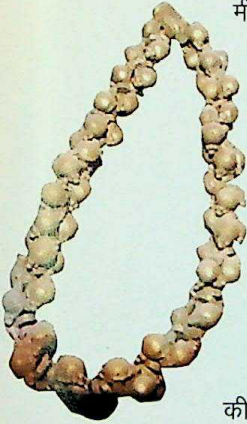
भूटिया जनजाति की महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला कस्तूरी हिरन की पाँच सींगों से युक्त चांदी का हार तथा चांदी के अन्य आभूषण यथा कड़ा, हंसुली, बाजूबन्द, माला, नाक की नथुनी, मुकुट, अंगूठी आदि संकलन में संरक्षित हैं। मिर्जापुर जनपद की दुद्धी तहसील की गोण्ड जनजाति के आभूषण यथा गिलट के पाज़ेब, हंसुली, कड़ा, पायल, छागल तथा एक अन्य स्थान से प्राप्त मूंगा एवं चांदी पर स्वर्ण पालिश युक्त अंगूठी संकलन की अनमोल निधि है। उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति थारू जो लखीमपुर, बलरामपुर, गोरखपुर, बहराइच, पीलीभीत, गोण्डा आदि जनपदों में निवास करती है, के मनके, सीप, सिक्कों से निर्मित सुन्दर आभूषण भी संकलन में संरक्षित हैं।

झुमकी

ब्रेसलेट

कंगन

अनुभाग-20 : वस्त्र एवं पोशाक

संग्रहालय में भारत एवं अन्य देशों की पोशाकों का अद्भुत संग्रह है, जिसमें शेर, मेमना, हिरण आदि की खाल से बनी पोशाक, राजसी पोशाकें, कढ़ाईदार बनारसी सिल्क, चंदेरी सिल्क, मस्लिन, बंगाली कांथा, जामदानी, कढाई, मीनाकारी, औरंगाबादी ज़री का काम, मुर्शिदाबादी कढाई, ब्रोकेड एवं राजस्थानी सुजनी कढाई आदि विभिन्न प्रकार के वस्त्र एवं पोशाकें उपलब्ध हैं। कुछ पोशाकें जैसे–राजस्थानी लहंगा, बनारसी चादर, स्वर्ण कढाई युक्त दुपट्टा, सोने के पानी से चित्रित वस्त्र, स्वर्ण तार से निर्मित कांथा एवं मीना के काम युक्त पोशाकें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

जामदानी से बना कुर्ता

राज्य संग्रहालय देश–विदेश में आयोजित होने वाली विशिष्ट प्रदर्शनियों में भी अपनी सहभागिता करता है। इसी श्रृंखला में रियाद, सऊदी अरब में आयोजित कपड़ों पर आधारित प्रदर्शनी ''लिबास'' में राज्य संग्रहालय की कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गयी थीं।
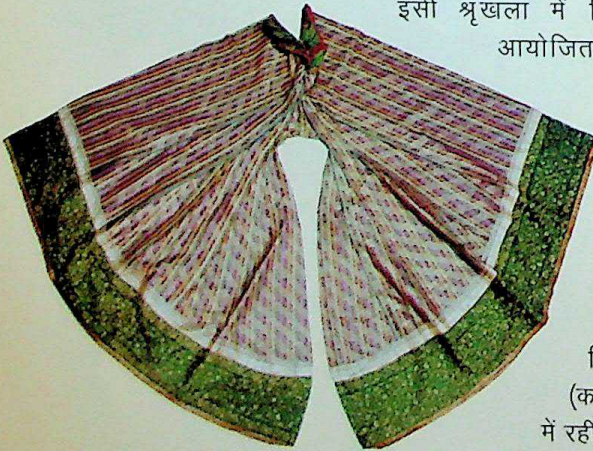
जरी के काम से युक्त गरारा

लखनऊ अवध संस्कृति का केन्द्र रहा है तथा अवध क्षेत्र में भिन्न–भिन्न प्रकार की कशीदाकारी (कढ़ाई) आरम्भ से ही प्रचलन में रही हैं, जिसके अधिकतर नमूने संग्रह में संरक्षित हैं। लखनऊ चिकन की कढ़ाई के लिए विश्व प्रसिद्ध है। संग्रहालय के संग्रह में विभिन्न प्रकार की चिकनकारी युक्त कुर्ता, शलवार सूट, चोगा,

रेशम की कशीदाकारी युक्त शाल

रूमाल आदि संरक्षित हैं। मुग़लकाल में विकसित जामदानी कढ़ाई मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल में प्रचलन में है। इस अनुभाग में फारसी में लेख युक्त जामदानी कढ़ाई का अंगरखा विशेष उल्लेखनीय है।

लखनऊ की पारम्परिक कशीदाकारी में ज़रदोज़ी का महत्वपूर्ण स्थान है। ज़रदोज़ी शब्द मूलरूप से फ़ारसी के ज़र एवं दोज़ी शब्दों से बना है, जिसमें ज़र का अर्थ स्वर्ण एवं दोज़ी का अर्थ कढ़ाई से है। सुन्दर ज़रदोज़ी की कढ़ाई युक्त टोपी एवं अन्य पोशाकें राज्य संग्रहालय के संकलन में संग्रहीत हैं।
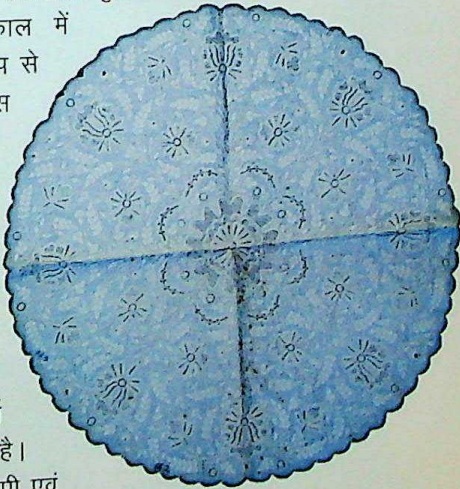
चिकनकारी युक्त रूमाल

अनुभाग–21 : कलात्मक वस्तुएं

अवध के नवाबों की राजधानी लखनऊ कला एवं संस्कृति का केन्द्र रही है। राज्य संग्रहालय में अवध क्षेत्र एवं देश–दुनिया की विभिन्न संस्कृतियों से सम्बन्धित कलाकृतियां संग्रहीत हैं। यहां बीदरी कला से अलंकृत कलात्मक पात्रों का भी रोचक संग्रह है।

हुक्का–बीदरीकला

इन पात्रों पर तारकशी, ज़रनिशान, आफ़ताबी तथा ज़रबुलन्द सभी प्रभावों का प्रयोग सम्मिलित अथवा स्वतंत्र रूप में मिलता है। संग्रहालय में संग्रहीत हुक्के की फ़र्शी, सुराही, पानदान, गुलदस्ता, मोमबत्ती स्टैण्ड आदि पर बीदरी एवं इसकी उच्चीकृत कला ज़रबुलन्द उत्कीर्ण है। दक्षिण भारत से प्राप्त एक फर्शी जिस पर बेल अलंकरण के साथ विभिन्न पशु आकृतियों जैसे हाथी, बाघ, चीता, तेंन्दुआ, हिरण, नीलगाय, कुत्ता, बकरी, भेड़, मोर, कबूतर, कोयल आदि को तहनिशान शैली में दर्शाया गया है, अति सुन्दर है। फर्शी के ऊपर दो मोर की चोंच के मध्य तिथि 1221 हिजरी (1841 ई.) अंकित है तथा इसमें फूलों की पतली शाखाओं एवं बार्डर पर तारकशी का काम है। फर्शी की गर्दन पर मिश्रित रूप में ज्यामितीय रेखाओं का तारकशी में अलंकरण है।

पेपरमैशी तकनीक से बना पात्र

एक अन्य फर्शी ज़रबुलन्द काम की है, जिस पर जल परियों का एक जोड़ा अंकित है। सम्भवतः यह नवाब वाजिद अली शाह की व्यक्तिगत फर्शी रही होगी, इसका अपना ऐतिहासिक महत्व है। इस फर्शी पर कमल के पुष्प का भी सुन्दर अलंकरण है।

आफ़ताबी काम का मुकाबा संकलन का अत्यन्त महत्वपूर्ण पात्र है, इस पर सुन्दर ढ़ंग से नक्काशी कर पत्तरों की मढ़ाई की गई है तथा अभिप्राय काले रंग की सतह में बने लगते हैं। बीदरी कला की कलाकृतियों में सबसे पुरानी वह प्लेट है, जिस पर मछली का एक जोड़ा है। इसे मुहम्मद अली बिदरसाज़ ने 1886 ई. में बनाया था एवं

हुक्के की फ़र्शी–ज़रबुलन्द कला

इसका संदर्भ आइने बिदरसाजी नामक पुस्तक में भी है।

अभिलिखित कांच का कटोरा

सफेद पोरसलीन निर्मित जार, जिस पर फ़ारसी भाषा में *"आलमगीर शाह हिजरी 1070"* लिखा है, इसे औरंगज़ेब आलमगीर द्वारा जार को दान करने वाले व्यक्ति के पुरखों को उपहार स्वरूप भेंट किया गया था।

रत्न जडित कटोरी, इन्लेवर्क

मूंगे का बना कास्केट तथा जेड के फूलदार फ्रेम का शीशा, कप, तश्तरी, दवात, कमल, अमूल्य रत्न जड़ित अन्य कलाकृतियाँ संग्रह की शोभा बढ़ाते हैं। सफ़ेद जेड की चम्पाकली आकार की सुन्दर कलाकृति जिस पर *"जहाँगीर–शाह–अकबर–शाह–याशेम–निलाब–समा–जलूस–21 हिजरी शाह–1036 हिजरी संवत्* फ़ारसी भाषा में उत्कीर्ण है विशेष उल्लेखनीय हैं।

अर्द्ध बहुमूल्य रत्न जड़ित जेड की कटार

संग्रह में पोरसलीन, काँच, जेड, पत्थर, लकड़ी, पेपरमैशी, चीनी मिट्‌टी, पीतल, तांबा आदि विभिन्न धातुओं से निर्मित विविध प्रकार के बर्तन संग्रहीत हैं। इस संग्रह में अवध क्षेत्र के बर्तनों का एक अनूठा संग्रह है।

नवाबों के काल में कांच के बर्तनों के बनाने की कला अत्यधिक विकसित थी। संग्रहालय में कांच के संग्रह में कुरान की आयत युक्त कटोरा, अभिलिखित गिलास, लोटा, विभिन्न आकार एवं प्रकार के हुक्के, घड़े, प्लेट, तश्तरी, कप, सजावट की वस्तुएं आदि संरक्षित हैं।

पीतल जड़ित अलंकृत शंख

अनुभाग-22 : हाथीदांत कला

अफ्रीका एवं एशिया महाद्वीप के विभिन्न भागों में हाथीदांत निर्मित आभूषण, देवी-देवताओं की प्रतिमा तथा सजावट एवं दैनिक जीवन में प्रयोग में लायी जाने वाली वस्तुएं लगभग 14 वीं शती ई. से प्रचलित हैं। इन को बनाने के लिए प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में हाथियों का शिकार किया जाता था। अत्यधिक शिकार के कारण हाथियों की जनसंख्या में तीव्र कमी आयी, जिसके कारण भारत सरकार द्वारा वर्ष 1989 से हाथियों के शिकार एवं हाथीदांत के व्यापार पर पूर्ण रूप से प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

शिव पार्वती

संग्रहालय में पूर्व में प्राप्त हाथीदाँत की नक्काशी युक्त कलाकृतियाँ संग्रहीत हैं, जिनमें से कुछ का विवरण निम्नवत है:- सुन्दर नक्काशी युक्त डिब्बा, कछुआ, मुग़ल कालीन तलवार का मूठ, इतरदान, गुलाबपाश, पांच मनुष्याकृति युक्त घोड़ा, कुत्ता, राधा-कृष्ण, गणेश, शिव-पार्वती आदि। जनपद कानपुर के जाजमऊ से हाथीदांत की बनी चूड़ियों का एक अमूल्य संग्रह प्राप्त हुआ है। हाथीदांत निर्मित छड़ी जिस पर नस्तालीख में *"सैय्यद रज़ा हुसैन, तालुकदार, कुटवारा"* उत्कीर्ण है, अति महत्वपूर्ण है।

हाथीदांत निर्मित अति सुन्दर युवती संभवतः योगमाया की प्रतिमा अत्यन्त ही सराहनीय है। कमल पुष्प पर आसीन प्रतिमा का दाहिना हाथ अभय मुद्रा में है एवं बायें हाथ में चक्र है तथा मुकुट में ध्यान मुद्रा में एक पुरूष आकृति उत्कीर्ण है।

हाथीदांत निर्मित गणेश प्रतिमा चतुर्भुजी स्थानक है। प्रतिमा की ऊँचाई 19.5 से.मी. तथा पाद-पीठ जिस पर गणपति स्थानक हैं की माप 6.00 से.मी. है। प्रतिमा बड़ी ही दक्षता से गढ़ी गई है एवं अत्यन्त सुन्दर है। वीणा, यज्ञोपवीत, धोती, कंगन, दोनों कंधों पर वस्त्र, दुपट्टा, पैरों में खड़ाऊँ, गले में वैजन्ती माला आदि विभिन्न वस्त्राभूषणों से सज्जित प्रतिमा के सिर के पीछे बालों का जूड़ा एवं पाद-पीठ के नीचे चार मूषक प्रदर्शित हैं। इस मूर्ति की विशेषता है कि गणेश को दो दाँतों से युक्त प्रदर्शित किया गया है।

चतुर्भुजी गणेश

अनुभाग–23 : काष्ठ कला

उत्तर प्रदेश सुन्दर नक्काशी युक्त काष्ठ कला के लिये विश्व विख्यात है। प्रदेश में सहारनपुर एवं बरेली जिला काष्ठ कला के मुख्य केन्द्र हैं, जहाँ जालीदार नक्काशी की सुन्दर कलाकृतियाँ निर्मित की जाती हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही इस कला के

विभिन्न देवी–देवताओं के अंकन युक्त पट्ट

साज–सज्जा के सामान, दरवाज़े, मेहराब, मेज़, कुर्सी आदि शीशम, नीम, सागौन एवं साखू की लकड़ियों द्वारा निर्मित किये जाते हैं।

काष्ठ कलाकार अपनी कल्पना के अनुसार फूल–पत्ती, देवी–देवता व अन्य कलात्मक नमूने बनाते हैं। कभी–2 सुन्दरता को बढ़ाने के लिये रंग–बिरंगे अथवा सफ़ेद पत्थर भी लकड़ी पर जड़े जाते हैं। इसके अतिरिक्त कलाकारों द्वारा लकड़ी पर नक्काशी के बाद उसे विशिष्टता प्रदान करने के लिए उसके ऊपर धातु का पतला पत्तर भी जड़ा जाता है।

काष्ठ कला के कुछ उत्कृष्ट नमूने राज्य संग्रहालय के संग्रह में संग्रहीत हैं। बुद्ध जन्म के अंकन युक्त पीतल का पत्तर जडित काष्ठ पट्ट अति सुन्दर है। इसमें भगवान बुद्ध की माता शाल वृक्ष पकड़े खड़ी हैं, जिनके दाहिनी ओर सेविकाएं तथा बायीं ओर बुद्ध को लेने के लिये खड़ी तथा आकाश से कुछ देवता बुद्ध को आशीर्वाद दे रहे हैं। दृश्य के ठीक नीचे हिरण, गज, पेड़–पौधे, पहाड़ आदि उत्कीर्ण किये गये हैं तथा पट्ट चारों ओर से दैव आकृतियों से सज्जित है। एक अन्य पट्ट, जिस पर भगवान श्रीराम के राज्याभिषेक का वर्णन है, विशेष उल्लेखनीय है।

लकड़ी की नक्काशी युक्त दरवाज़ा

संग्रह में सुन्दर नक्काशी युक्त देवी–देवताओं की मूर्तियां जैसे–पलाश की जड़ से निर्मित 13.8 इंच की गणेश प्रतिमा, दशावतार विष्णु, स्वर्ण पॉलिश युक्त सरस्वती, महिषासुर मर्दिनी, नटराज, लड्डू गोपाल, स्वर्ण पॉलिश युक्त बुद्ध मस्तक मूर्तिकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

अवध क्षेत्र से प्राप्त फ़ारसी भाषा में अंकित नवाब कालीन लेख, महीन नक्काशी युक्त दरवाज़े, झरोखे, मेज़ आदि संग्रह में संग्रहीत हैं।

अनुभाग-24 : खिलौने

गवर्नमेन्ट ब्याज नॉर्मल स्कूल, लखनऊ में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय खिलौने की प्रदर्शनी में प्रदर्शित खिलौने 24 अप्रैल, 1953 को राज्य संग्रहालय को दान स्वरूप प्राप्त हुए। कुछ लकड़ी के खिलौने को म्यूनिसिपल संग्रहालय, फ़ैज़ाबाद (अयोध्या) से भी प्राप्त किया गया है। संग्रहालय में लकड़ी के खिलौनों का एक अद्‌भुत संग्रह है, जिसमें चार पशुओं द्वारा खींचने वाला रिक्शा, इक्का, डिब्बों सहित रेल का इंजन, कार, हवाई जहाज़, कुत्ता, बत्तख, घोड़ा, शेर आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। भारत के अतिरिक्त तिब्बत तथा जापान के खिलौने भी संकलन में संग्रहीत हैं।

सूफ़ी सन्त, मृणमूर्ति

गुड़ियों के अनोखे संग्रह में रूई की गुड़िया, बैलगाड़ी पर बैठी प्लास्टिक की गुड़िया, प्रयागराज (इलाहाबाद) से प्राप्त कांच की गुड़िया तथा बरेली शाहजहांपुर एवं वाराणसी से प्राप्त विभिन्न प्रकार की गुड़िया संकलन में संरक्षित हैं। अवध क्षेत्र मृण्मूर्ति कला का महत्वपूर्ण केन्द्र है। संकलन में विभिन्न धार्मिक मतों के साधु–सन्यासी, योगी, फ़कीर आदि की छोटी–छोटी प्रतिमाएं, फल फ़रोश, सब्जी फ़रोश की प्रतिकीर्ति एवं फलों तथा सब्जियों के मॉडल संग्रहीत हैं।

मिट्टी से निर्मित फल

सन्यासी

अनुभाग–25 : धातुकला

इस संकलन में विभिन्न प्रकार की महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ यथा गाय एवं बैलों की सींग को विशेष कार्यक्रम के समय सजाने हेतु सिंगौटी, अष्टभुजी अवलोकितेश्वर, विभिन्न आकार–प्रकार के दीपक, मानवाकृति युक्त सरौता, सिलफ़्ची, कजरौटा, गुलाबपाश, पशु–पक्षियों की प्रतिमाएं आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

स्त्री–पुरूष आकृति युक्त सरौता

संकलन की उत्कृष्ट कलाकृतियों में पीतल धातु निर्मित दीप लक्ष्मी की प्रतिमा है, जिसके दाहिने हाथ पर तोता बैठा है। सिर पर चन्द्रमा एवं सूर्य से अलंकृत मुकुट है एवं प्रतिमा अतिसुन्दर आभूषणों, यथा हार, कड़े, चूड़ियाँ, बाजूबन्द, करधनी तथा वस्त्रों से सुशोभित है। साड़ी की चुन्नट अत्यन्त सराहनीय है एवं देवी के दोनों हाथ में दीप है।
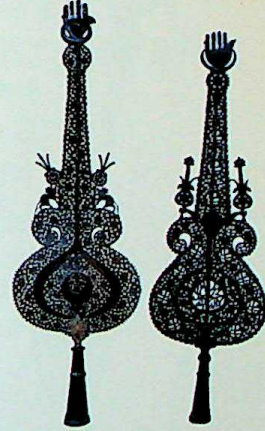
आलम का पंजा

संग्रह में संग्रहीत मीनाकारी युक्त पीतल का लोटा, पशु–पक्षियों के अंकन युक्त सेनी, जालीदार शैली से बना गुलाबपाश, अलंकृत घड़ा, ऊंट की सवारी करते दम्पति, विभिन्न पशु–पक्षियों की प्रतिमाएं, दैनिक जीवन में उपयोग किये जाने वाले बर्तन यथा कटोरा, चम्मच, प्लेट आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। शिया सम्प्रदाय से सम्बन्धित अलम का पंजा एवं रिपूसे शैली द्वारा निर्मित ताज़िया तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में प्रयुक्त होने वाली विविध कलाकृतियां संग्रह की शोभा हैं।

ताज़िया–रिपूसे शैली

अनुभाग-26 : मानवशास्त्र एवं नृवंश विज्ञान

उत्तर प्रदेश में विभिन्न जनजातियां निवास करती हैं, जिसमें थारू, गोण्ड, भूटिया आदि प्रमुख हैं। इस संग्रह में उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड एवं अण्डमान निकोबार की जनजातियों द्वारा उनके दैनिक जीवन में उपयोग की जाने वाली हाथीदांत, हड्डी, जानवरों की खाल, लकड़ी, पंख, सीप, सूत, धातु निर्मित गहने, कपड़े वस्तुएं इत्यादि हैं।

उत्तर प्रदेश की विशालतम जनजाति थारू प्रदेश के बहराइच, गोण्डा, बलरामपुर, लखीमपुर एवं गोरखपुर जनपद के जंगलों में निवास करती है। राज्य संग्रहालय में थारू जनजाति द्वारा दैनिक जीवन में उपयोग में लायी जाने वाली वस्तुओं का उत्कृष्ट संग्रह संग्रहीत है।

बांस की टोपी लकड़ी का हुक्का

थारूओं का मुख्य व्यवसाय मछली मारना है। संकलन में विभिन्न प्रकार के मछली मारने के जाल एवं मछली रखने के पात्र उपलब्ध हैं। थारूओं द्वारा कृषि में प्रयोग किये जाने वाले औज़ार यथा हल, हंसिया, कुदाल, कुल्हाड़ी, खुर्पी आदि का आकर्षक संग्रह है। इसके अतिरिक्त गहने, वस्त्र एवं परिधान, टोपी, जूता, चोटी, तीर-धनुष तरकश सहित, वाद्ययंत्र, खड़ाऊँ, चारपाई, छाता आदि का उत्कृष्ट संग्रह संकलन में संरक्षित है।

उत्तर प्रदेश के जनपद मिर्ज़ापुर, उत्तराखण्ड के विभिन्न भाग एवं अण्डमान निकोबार के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त अन्य जनजातियों के गहने, वस्त्र इत्यादि भी संग्रहीत हैं।

राजस्थानी पगड़ी

मछली रखने का पात्र

संग्रहालय भवन मुख्यतः तीन क्षेत्रों में विभाजित है

1. सार्वजनिक क्षेत्र (PUBLIC AREA)
2. सेवा क्षेत्र (SERVICE AREA)
3- प्रशासनिक क्षेत्र (ADMINISTRATIVE AREA)

1- सार्वजनिक क्षेत्र (PUBLIC AREA)

(क) स्थायी वीथिका (PERMANENT GALLERY)

(i) भारत की शिल्प यात्रा वीथिका– ।

इस वीथिका में पाषाण काल से गुप्तकाल तक की कलाकृतियाँ प्रदर्शित हैं। आरम्भ में प्रस्तर के अस्त्र, पत्ती तथा घोड़े की हड्डियों का जीवाश्म एवं अन्य प्रागैतिहासिक काल की कलाकृतियाँ प्रदर्शित हैं। वीथिका में पशु–पक्षियों की मृण्मूर्तियाँ, बाट, मृण्पात्र, अलंकृत पात्र, लाल चित्रित पात्र, उत्तरी काले चमकदार पात्र (एन.बी.पी. डब्ल्यू) आदि प्रदर्शित हैं।

गंगा–यमुना के दोआब क्षेत्र से प्राप्त मानवाकृति युक्त (Anthropomorphic) कलाकृति, जिस पर मछली की आकृति उत्कीर्ण है, भी प्रदर्शित है। इसका उपयोग अभी तक पूर्ण रूप से ज्ञात नहीं हुआ है, कदाचित यह पूजा करने अथवा अस्त्र के रूप में प्रयोग किया जाता था।

वीथिका में प्रदर्शित भीटा (प्रयागराज) से प्राप्त अभिलिखित पंचमुखी शिवलिंग (शुंग काल) जिसके पांच मुख–तत्पुरुष, अघोर, वाम पुरुष, सद्योजात तथा ईशान पांच दिशाओं

को दर्शाते हैं। यह शिवलिंग की प्राचीनतम ज्ञात प्रतिमा है। इस पर ब्राह्मी लिपि में *"खंजुहती पुतनं लंगो पतिथापितों, वासठी पुतेन नाग सिरीनां पियतं देवता"* लेख अंकित है।

महादेवा, जनपद बस्ती से प्राप्त पॉलिश युक्त पत्थर का स्तम्भ, जिस पर सिंह के पैरों के अवशेष शेष हैं, दूसरी शती ई.पू. की लाल चित्तीदार पत्थर की बलराम की प्रतिमा, बुद्ध जीवन से सम्बन्धित घटनाओं के शिलापट्ट, शाल भंजिकाएं, स्तूप, बोधिसत्व, यक्ष–यक्षी के अंकन युक्त विभिन्न वेदिका स्तम्भ आदि प्रस्तर कलाकृतियां प्रदर्शित हैं।

वीथिका के दूसरे हाल में मथुरा के कंकाली टीला से प्राप्त लाल चित्तीदार पत्थर की कलाकृतियाँ यथा–आदम कद सिर विहीन बुद्ध, श्रावस्ती से प्राप्त अभिलिखित बुद्ध, बुद्ध जीवन को दर्शाते शिलापट्ट, गांधार कला की उत्कृष्ट कलाकृतियाँ, मैत्रेय, बोधिसत्व एवं अन्य विभिन्न प्रतिमाएं प्रदर्शित हैं।

(ii) भारत की मूर्तिशिल्प यात्रा वीथिका–II (गुप्तकाल से मध्यकाल तक)

वीथिका में विष्णु (मथुरा), सूर्य, भीम जरासन्ध युद्ध, अभिलिखित स्थानक बुद्ध (यशविहार, मथुरा), अभिलिखित शिवलिंग तथा अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की प्रतिमा आदि प्रदर्शित हैं। अन्य प्रदर्शित कलाकृतियाँ 5 वीं से 9 वीं शती ई. की है, जिसमें सप्तमातृका शिलापट्ट, उमा–महेश्वर, बलराम एवं कृष्ण, दशावतार विष्णु, कार्तिकेय एवं अन्य वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित प्रतिमाएं तथा पकी हुई मिट्टी की दुर्गा, 5 वीं शती ई. की मिट्टी की प्रतिमा आदि वीथिका में प्रदर्शित हैं।

स्त्री व पुरूष की समानता की प्रतीक प्रतिमा, जिसमें शिव पुरूष लिंग एवं शक्ति स्त्री लिंग की द्योतक है, को अर्धनारीश्वर कहते हैं। यह प्रकृति व पुरूष के ऐक्य का सूचक भी मानी जाती है। अर्धनारीश्वर स्वरूप से भगवान शिव ने सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा को प्रजननशील प्राणी के सृजन की प्रेरणा दी थी। वीथिका में अतिसुन्दर अर्द्धनारीश्वर प्रतिमा दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र है।

पद्मपाणि, अभिलिखित सिंहनाद अवलोकितेश्वर (महोबा), तारा आदि की प्रतिमाएं शैव एवं बौद्ध दोनों सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसके अतिरिक्त अन्य प्रतिमाएं बौद्ध देवी मारीचि, भूमि स्पर्श मुद्रा में बुद्ध, बोधिसत्व, बुद्ध जीवन प्रदर्शित करते शिलापट्ट, सर्वतोभद्रिका, अजितनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ हैं।

भगवान विष्णु के वराह अवतार को दर्शाती पत्थर की वराह प्रतिमा में विभिन्न देवी–देवताओं, भगवान विष्णु के अवतार एवं भूदेवी का अंकन है। प्रतिमा शेष नाग जिसका आधा शरीर मनुष्य एवं आधा सर्प का है पर आसीन है।

10 वीं एवं 12 वीं शती ई. का चतुर्मुखी शिवलिंग, चतुर्मुखी सिंह, कुबेर, दशावतार विष्णु, ऋषभ चौबीसी, सूर्य एवं बटुकेश्वर आदि कुछ महत्वपूर्ण प्रतिमाएं वीथिका में प्रदर्शित हैं।

(iii) जैन कला वीथिका

राज्य संग्रहालय के प्रथम संग्रहालयाध्यक्ष डॉ. ए.ए. फ़्यूहरर द्वारा मथुरा के कंकाली टीला का उत्खनन तीन चरणों में किया गया। यहो से प्राप्त जैन प्रतिमाएं संकलन में संग्रहीत हैं। आम जनमानस एवं शोधार्थियों की रूचि के अनुकूल जैन कलाकृतियों के प्रदर्शन हेतु एक पृथक जैन कला वीथिका का अक्टूबर 2002 में तत्कालीन मुख्य मंत्री द्वारा उद्घाटन किया गया। जैन धर्म से सम्बन्धित विभिन्न कलाकृतियां यथा अयागपट्ट, तीर्थंकर मस्तक, चौबीसी, सर्वतोभद्रिका एवं विभिन्न तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ वीथिका में प्रदर्शित हैं, जिसमें कुछ अभिलिखित भी हैं। महत्वपूर्ण प्रस्तर मूर्तियों में मल्लिनाथ, अम्बिका, ऋषभनाथ (नवग्रहों से सुशोभित), पार्श्वनाथ आदि मुख्य हैं।

(iv) ममी वीथिका

राज्य संग्रहालय के तत्कालीन निदेशक डॉ. एम. एम. नागर के प्रयत्न से वर्ष 1952 में संग्रहालय के विविध संग्रह में एक नया रत्न मिस्र की ममी के रूप में सम्मिलित किया गया। उनके द्वारा 13 वर्ष की लड़की की एक ममी एवं इसका ताबूत जिस पर ममी से सम्बन्धित सूचनाएं चित्रलिपि में अंकित है, संग्रहालय हेतु क्रय किया गया। इसके अतिरिक्त सेमापीटोसेरिस का ताबूत तथा लकड़ी एवं धातु की बनी उषाभित्तियाँ, विभिन्न देवी–देवताओं की मूर्तियाँ आदि भी क्रय की गयीं। ये सभी कलाकृतियाँ ममी वीथिका में एक पिरामिड एवं डायोरामा के माध्यम से रोचक ढंग प्रदर्शित की गयी हैं।

(v) अवध की नवाबी कला वीथिका

अवध के चौथे नवाब आसफ़–उद्–दौला ने 1775 ई. पू. में अवध प्रान्त की राजधानी फ़ैजाबाद से लखनऊ स्थानान्तरित करते हुए लखनऊ को एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया। नवाबों की राजधानी स्थायी रूप से घोषित होने के फलस्वरूप लखनऊ कला एवं संस्कृति का मुख्य केन्द्र बना। राज्य संग्रहालय, लखनऊ में नवाबी संस्कृति से सम्बन्धित सज्जाकला की कलाकृतियां, वस्त्र एवं परिधान, अस्त्र–शस्त्र, मुद्रा, मुहर, पाण्डुलिपियाँ, लघुचित्र, वाद्ययंत्र, खिलौने आदि संरक्षित हैं। इन कलाकृतियों की महत्ता के दृष्टिगत संग्रहालय में अवध की नवाबी कला वीथिका का गठन किया गया है।

इस वीथिका में हुक्के की फ़र्शी, आफ़ताबा, सिलफ़ची, तश्तरी जिस पर विभिन्न प्रकार की बीदरी कलाकारी जैसे कि जर्निशां, ज़रबुलन्द, तहनिशां, तारकशी बनी है प्रदर्शित हैं। रिपुसे कला के उत्कृष्ट नमूनों को प्रदर्शित करता हुआ अतिसुन्दर ताज़िया एवं अभिलिखित हाथीदांत निर्मित नवाब वाजिद अली शाह की छड़ी तथा चौकी विशेष उल्लेखनीय है। नवाबी काल में कांच का काम अपनी चरम सीमा पर था। वीथिका में कांच की अभिलिखित कलाकृतियाँ यथा–कटोरा, प्लेट, गिलास, लोटा, हुक्का, फर्शी तथा घड़ा आदि प्रदर्शित हैं।

मुग़ल काल में विकसित इनैमल कला को नवाबों के समय में भी प्रोत्साहन मिला। इनैमल कला में धातु, कांच, मिट्टी की बनी कलाकृतियों पर विभिन्न प्रकार के रंगों से भराई करके भिन्न–भिन्न प्रकार के पशु–पक्षी एवं फल–फूलों की आकृतियाँ उत्कीर्ण की जाती हैं। विभिन्न प्रकार की इनैमल कला यथा पेन्टिंग इनैमल, चार खाना या चेस इनैमल, कैविटी इनैमल युक्त सीनी, सुराही, गिलास, आफताबा, सिलफ़्ची एवं शतरंज का बोर्ड आदि वीथिका में प्रदर्शित हैं।

उत्तर प्रदेश के लखनऊ, वाराणसी, टांडा एवं बांग्लादेश की प्रसिद्ध जामदानी कला का अंगरखा जिस पर **''बकर अली अहमद खाँ''** कढ़ाई करके लिखा हुआ है एवं चिकनकारी की अन्य महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ यथा रूमाल, अंगरखा, टोपी, कुर्ता आदि वीथिका में प्रदर्शित हैं। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण शासकीय अभिलेख, सुख सागर, मसनवी शेर–उल्–बयाँ, गुलिस्तान–ए–सादी आदि पाण्डुलिपियाँ भी वीथिका की शोभा बढ़ाती हैं।

अवध काल में चित्रकला को शाही प्रोत्साहन मिला, इसके फलस्वरूप अवध शैली के लघुचित्र बड़ी संख्या में बनाये गये। जिसमें राज परिवार, विभिन्न प्रकार के उत्सव, समारोह एवं प्रकृति आदि को विषय वस्तु बनाया गया। अवध शैली के सुन्दर लघुचित्र, गाज़ि–उद्–दीन हैदर का राज चिन्ह एवं राज घराने में प्रयुक्त वाद्ययंत्र वीथिका में प्रदर्शित हैं। अवध क्षेत्र का मृण्मूर्ति कला में विशेष योगदान है, जिनके उत्कृष्ट नमूने यहां प्रदर्शित हैं। वीथिका के अंत में प्रदर्शित लकड़ी की सुन्दर नक्काशी दरवाज़े, तीदरी, झरोखा, आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

(vi) मुद्रा वीथिका

संग्रहालय में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के सिक्कों तथा पदकों का अमूल्य संग्रह है। वीथिका में 8 वीं शती ई. के आहत सिक्कों से लेकर आधुनिक काल के सिक्के तथा पदक प्रदर्शित हैं। प्रदर्शन को आकर्षक एवं रोचक बनाने हेतु वीथिका में वस्तु विनिमय प्रणाली (बार्टर सिस्टम) तथा टकसाल को डायोरामा के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। वीथिका में प्रथम एवं द्वितीय शती ई.पू. के उज्जैन, अयोध्या, तक्षशिला आदि स्थानों से प्राप्त सिक्के तथा यूनानी डायोडोटस, डिमेट्रियस, प्लेटो, मिनेन्डर आदि के सिक्के भी प्रदर्शित हैं। कुछ विदेशी ,शासकों यथा–रूद्रसेन, यशोदमन, नहपान, जैयदमन एवं भद्दमन के सिक्के तथा कुषाण राजा कुजुल कैडफ़िसेस, विम कैडफ़िसेस, कनिष्क, हूविष्क तथा नाग वंश आदि के सिक्के भी प्रदर्शित हैं, जिसमें कुछ स्वर्ण सिक्कों की अनुकीर्ति हैं।

गुप्तवंश के दुर्लभ सिक्कों में चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त द्वितीय, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त प्रथम, स्कन्दगुप्त, नरसिंम्हागुप्त आदि के सिक्के विशेष उल्लेखनीय हैं। वीथिका में अन्य राजवंशों जैसे–हूण, सलतनत, लोधी, तुग़लक, मुग़ल आदि काल के महत्वपूर्ण सिक्कों का अच्छा प्रदर्शन है। मुग़लकालीन सिक्कों में अतिमहत्वपूर्ण राम–सिया प्रकार एवं राशि प्रकार का सिक्का भी मुद्रा वीथिका की शोभा बढाता है।

(vii) सज्जाकला एवं अस्त्र–शस्त्र वीथिका

राज्य संग्रहालय में धातु निर्मित कलाकृतियों का एक अद्भुत संग्रह है। धातु की बनी सज्जाकला की कलाकृतियों एवं अस्त्र–शस्त्र को प्रदर्शित करते हुए एक सम्पूर्ण वीथिका समर्पित है। वीथिका के प्रथम कक्ष पाषाणकालीन शस्त्र के साथ में विभिन्न प्रकार की बंदूक, ढाल, तलवार, परशु, कुल्हाड़ी, धनुष–बाण, तरकश, मशीन गन, पिस्टल, सुरक्षा कवच (चार आइना), बाजूबन्द, भाला, बरछा, मांड़ू, खंजर, गुप्ती, विभिन्न प्रकार की कटार आदि के साथ किले का एक प्रतिरुप भी प्रदर्शित है।

अस्त्र शस्त्र वीथिका के द्वितीय कक्ष में विभिन्न प्रकार की कलात्मक एवं गृहोपयोगी वस्तुएं यथा–स्त्री और पुरुष आकृति युक्त सरौता, फूल–पत्ती एवं पशु आकृति उत्कीर्ण तश्तरी, चम्मच जिसके ऊपरी भाग पर रुद्र रूप में गदा और त्रिशूलधारी हनुमान का अंकन है। गज आकार का सिंदूरदान, गंगाजली, पवित्र मंत्र युक्त जलपात्र, दशावतार विष्णु एवं राम मंत्र उत्कीर्ण गंगाजली आदि विशेष अवलोकनीय हैं। पेपरमैशी तकनीक से बनी वस्तुएँ तथा विभिन्न उपयोगी कलात्मक वस्तुएँ यथा मणिबन्द, गुलाबपाश, अलंकृत शंख, अर्द्धबहुमूल्य पत्थर से जड़ित डिब्बा आदि वीथिका में प्रदर्शित हैं। भगवान बुद्ध की जन्म कथा से अंकित पीतल जड़ित काष्ठ पट्ट एवं विभिन्न देवी–देवताओं के अंकन युक्त काष्ठ पट्ट गणपति, गज, दुर्गा, विष्णु, बौद्ध देवता वज्रपाणि, बौद्ध देवी विजया, खदिरावनि तारा, तिब्बती लामा, मंजूश्री स्वर्ण पॉलिश युक्त लौह बुद्ध मस्तक सज्जा कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। फूल–पत्तियों के अंकन युक्त धातु निर्मित छोटी–बड़ी आकार की सीनी, जिसका प्रयोग नवाबों एवं राजाओं द्वारा विभिन्न उत्सवों, समारोह में किया जाता था तथा फूल–पत्ती, पक्षी आदि से अलंकृत टाइल वीथिका में प्रदर्शित हैं।

(viii) बुद्ध वीथिका

राज्य संग्रहालय में भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित एक विशिष्ट वीथिका स्थापित है, जिसमें बुद्ध जन्म, धर्म चक्र प्रवर्तन, हाथी का शमन, सारनाथ में बुद्ध का प्रथम उपदेश, भार विजय आदि कथानक को फाइबर कास्ट मॉडल तथा तैल चित्रों के

माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। चार दृश्य जिनसे राजकुमार सिद्धार्थ को भिक्षु बनने की प्रेरणा मिली, शाक्य परिषद में सिद्धार्थ, मायादेवी का स्वप्न तथा महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण आदि से सम्बन्धित घटनाओं को अनुकृतियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

(ix) चित्रकला वीथिका

तिब्बती भिक्षुओं के अनुसार थंका चित्रकला शैली लगभग 10 वीं शती ई. से प्रचलन में है। ऐसी मान्यता है कि यह चित्र शैली चीन से तिब्बत एवं नेपाल के रास्ते भारत आई है। राज्य संग्रहालय में तिब्बत एवं नेपाल से प्राप्त थंका चित्रकला का एक अनूठा संग्रह है। थंका कलाकार प्राकृतिक खनिजों से रंगों को तैयार करते थे। इनके द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले मुख्य रंग, लाल, सफेद, पीला, समुद्री नीला, नारंगी आदि हैं। यह सभी रंग हिमालय पर्वत के तराई क्षेत्र में पाये जाते हैं। सुनहरा रंग (स्वर्ण निर्मित) भी प्रयोग में लाया जाता था, परन्तु काला रंग कभी प्रयोग नहीं किया गया।

भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 2550 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में वर्ष 2006 में राज्य संग्रहालय द्वारा एक पृथक थंका चित्रकला वीथिका स्थापित की गई। इस वीथिका में हरित तारा, डोलजंग, बौद्ध सिद्ध वज्रसत्व, शक्ति (तिब्बत 19वीं शती ई.), जम्भल (धन के देवता), मनीशी बुद्धा, चम्पा आदि प्रदर्शित हैं।

चित्रकला वीथिका के दूसरे भाग में अवध शैली के लघुचित्रों को प्रदर्शित किया गया है। राज्य संग्रहालय, लखनऊ में अवध शैली के लघुचित्रों का अनूठा संग्रह है, जिसके कुछ नमूने यथा–नवाब आसफ़–उद्–दौला, नवाब सफ़दर जंग, नवाब वाजिद अली शाह, मेंहदी बेगम (अवध की अन्तिम ताजदार) नवाब आसफ़–उद्–दौला का मोहर्रम का जुलूस, नस्तालीख, नवाब वाजिद अली शाह का हरम, पशु–पक्षियों के अंकन युक्त लघुचित्र आदि प्रदर्शित हैं।

(x) प्राकृतिक विज्ञान वीथिका

उत्तर प्रदेश जैव विविधता से परिपूर्ण प्रदेश है। Important Bird Areas (IBA), राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव विहार, बाघ संरक्षण केन्द्र तथा कई प्रजनन केन्द्र प्रदेश के वन्यजीवों को संरक्षित करने के उद्देश्य से स्थापित हैं। राज्य के वन्य जीवन को प्रदर्शित करने हेतु एक वीथिका राज्य संग्रहालय में स्थापित है, जिसमें विभिन्न प्रजातियों के पशु–पक्षी की डमी डायोरामा के माध्यम से प्रदर्शित है।

इस वीथिका में पशु–पक्षियों के टैक्सीडर्मी किये हुए स्टफ़्ड माडल, प्लास्टर कास्ट, फाइबर कास्ट तथा रबर कास्ट माडल आदि प्रदर्शित हैं। कशेरूकियों (Chordate Phylum) के सभी पांच वर्गों को यहाँ प्रदर्शित किया गया है। वीथिका के विभिन्न डायोरामा में शेर द्वारा हिरण का शिकार तथा अजगर की चपेट में हिरण का दृश्य अत्यन्त रोचक है।

वीथिका में कुछ लुप्तप्राय प्रजाति यथा मगर, हिमालयन काला भालू, चरत, एशियाई बब्बर शेर तथा एक सींग वाला गैण्डा आदि के टैक्सीडर्मी किये हुए स्टफ़्ड माडल प्रदर्शित हैं। इसके अतिरिक्त पेड़ पर बैठा तेन्दुआ, मुसंग, बाघ (नर, मादा एवं शावक), दलदली एवं पेड़ों पर रहने वाले पक्षी तथा विभिन्न प्रकार के सरीसृप भी वीथिका में आकर्षण का केन्द्र हैं। इस वीथिका में प्रदेश के प्राणी उद्यान, राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव विहार की स्थिति को दर्शाता हुआ मानचित्र भी अति महत्वपूर्ण है।

वीथिका में उ.प्र. के तराई क्षेत्र तथा दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में निवास करने वाली थारू जनजाति एवं उनके द्वारा दैनिक जीवन में प्रयोग में लायी जाने वाली वस्तुएं भी डायोरामा के माध्यम से प्रदर्शित हैं।

(xi) विदेशी मूर्तिकला वीथिका

राज्य संग्रहालय, लखनऊ में ब्रिटिश शासकों की धातु एवं प्रस्तर निर्मित कुछ दुर्लभ प्रतिमाएं संरक्षित हैं, जिनको विदेशी मूर्तिकला वीथिका में प्रदर्शित किया गया है। कुछ मूर्तियों पर एच.राय चौधरी नाम अंकित है। इन मूर्तियों में संगमरमर की रानी विक्टोरिया, राजा जार्ज पंचम, बटलर की संगमरमर की प्रतिमा एवं रानी विक्टोरिया की सिंहासन पर विराजमान धातु की अतिसुन्दर प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय है।

(xii) अतिविशिष्ट रूसी विमान राजहंस–TU124

यह अतिविशिष्ट राजहंस विमान भारत–रूस की मैत्री योजना के अन्तर्गत रूसी सरकार द्वारा तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू को [illegible] उपहार स्वरूप भेंट किया गया था। इसे कई वर्षों तक प्रधानमंत्री की शासकीय यात्राओं हेतु प्रयोग में लाया

राज हंस विमान

गया। निष्प्रयोज्य घोषित होने के फलस्वरूप इसे प्रधानमंत्री कार्यालय, भारत सरकार द्वारा राज्य संग्रहालय को भेंट स्वरूप प्रदान किया गया। वर्तमान में इसे संग्रहालय परिसर में दर्शकों के अवलोकनार्थ प्रदर्शित किया गया है।

(ख) अस्थाई प्रदर्शनी (TEMPORARY GALLERY)

दर्शकों की इतिहास एवं प्रकृति के प्रति जिज्ञासा, प्रेरणा, नयी खोज, शिक्षा आदि को प्रोत्साहित करने हेतु राज्य संग्रहालय, लखनऊ सदैव तत्पर है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु संग्रहालय द्वारा निरंतर विभिन्न अनुभागों– पाण्डुलिपि, चित्रकला, सज्जाकला, मूर्तिकला, प्राकृतिक इतिहास, कलात्मक वस्तुएं, मानवशास्त्र की कलाकृतियों पर आधारित अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है।

2- सेवा क्षेत्र (SERVICE AREA)

(i) पुस्तकालय

विश्व के अन्य महत्वपूर्ण संग्रहालयों की भांति राज्य संग्रहालय लखनऊ में भी एक वृहद संदर्भ पुस्तकालय स्थापित है। वर्ष 1890 में स्थापित संग्रहालय के इस पुस्तकालय में
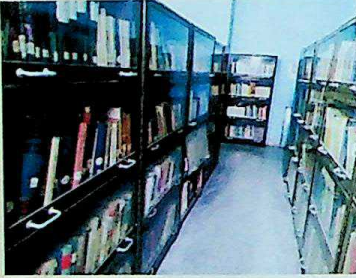
कला, इतिहास, पुरातत्त्व, प्राकृतिक विज्ञान आदि विषयों पर आधारित पुस्तकों का समृद्ध संग्रह है। इसके अतिरिक्त अवध क्षेत्र की ऐतिहासिक इमारतों के छायाचित्र, क्रोनिकल्स, गैज़ेटियर, जर्नल्स एवं विभिन्न विधाओं की पत्रिकाएं भी यहां संरक्षित हैं। पुस्तकालय में पंजीकृत शोधार्थी निःशुल्क अध्ययन कर ज्ञानार्जन करते हैं। संग्रहालय द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले विभिन्न अनुभागों पर आधारित प्रकाशन भी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

(ii) संरक्षण प्रयोगशाला / रसायनशाला

संग्रहालय में पूर्ण रूप से विकसित एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित है, जिसका मुख्य उद्देश्य राज्य संग्रहालय, लखनऊ के विभिन्न आरक्षित संकलन, वीथिकाओं एवं राज्य के अन्य संग्रहालयों में संग्रहीत कलाकृतियों का संरक्षण तथा परिरक्षण करना है। प्रयोगशाला में संरक्षण से सम्बन्धित मशीनें एवं अन्य आवश्यक उपकरण उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला, लखनऊ द्वारा संग्रहालय के कर्मचारियों, पुरातत्वविदों, शोधार्थियों, छात्रों एवं निजी प्रतियोगियों हेतु आयोजित ट्रेनिंग में संग्रहालय द्वारा सहयोग प्रदान किया जाता है।

मूर्ति का संरक्षण करते कर्मी

(iii) प्रकाशन अनुभाग

संग्रहालय भ्रमण पर आये दर्शक समयाभाव के कारण विभिन्न वीथिकाओं में प्रदर्शित कलाकृतियों की जानकारी पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर पाते हैं। अतः उन दर्शकों, जो कला एवं संस्कृति में विशेष रुचि रखते है तथा उसके सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, की जिज्ञासा के दृष्टिगत राज्य संग्रहालय, लखनऊ में एक प्रकाशन अनुभाग स्थापित है। जिसका मुख्य उद्देश्य शोधार्थियों, सामान्य दर्शकों एवं कला प्रेमियों हेतु संग्रहालय से

सम्बन्धित कलाकृतियों की जानकारी से युक्त लीफलेट, पम्फलेट, फोल्डर, मोनोग्राफ, ब्रोशर, परिचय पुस्तिका, कैटेलॉग, पिक्चर बुक, जर्नल आदि प्रकाशित करना है। समय–समय पर संग्रहालय के विभिन्न अनुभागों के संग्रह पर आधारित कैटेलॉग का प्रकाशन भी इस अनुभाग द्वारा कराया जाता है।

संग्रहालय के प्रकाशन

विक्रय हेतु संग्रहालय प्रकाशन

	पुस्तक	लेखक	मूल्य
1.	Catalogue of Saka Pahlava Coins of Northern India in the State Museum, Lucknow	Dr. A.K. Srivastava	16.00
2.	Brahmanical Sculptures in the State Museum, Lucknow Part-2, Vol. I	Dr. N.P. Joshi	250.00
3.	Brahmanical Sculptures in the State Museum, Lucknow Part-2, Vol. II	Dr. N.P. Joshi	200.00
4.	Master pieces in the State Museum, Lucknow	Dr.S.D. Trivedi	200.00
5.	उपदेवता : एक स्वतंत्र अध्ययन	डॉ. एन.पी. जोशी	60.00
6.	A Guide Book to the Archaeological Section in the State Museum, Lucknow	Dr. S.D. Trivedi	50.00
7.	Catalogue of Copper Plates in the State Museum, Lucknow	V.N. Srivastava	80.00
8.	राज्य संग्रहालय स्थित बौद्ध प्रतिमाओं का सूची पत्र	डॉ. चन्द्र मोहन वर्मा	80.00
9.	पुरातत्त्व एवं कला की दृष्टि में कन्नौज	डॉ. प्रभाकर पाण्डेय	200.00
10.	Master pieces of Kannouj Museum	Dr. A.K. Pandey	175.00

(iv) छायाचित्र अनुभाग

राज्य संग्रहालय, लखनऊ में संग्रहीत कलाकृतियों के अध्ययन हेतु देश–विदेश से शोधार्थी आते हैं, जिनके आग्रह पर चयनित कलाकृतियों के छायाचित्रों की हार्ड एव सॉफ्ट

कॉपी उपलब्ध करायी जाती है। राज्य संग्रहालय, लखनऊ के विभिन्न अनुभागों में संग्रहीत कलाकृतियों का फोटो डाक्यूमेन्टेशन भी इस अनुभाग द्वारा किया जाता है। विभिन्न दिवसों पर आयोजित होने वाले फिल्म शो में भिन्न–भिन्न प्रकार की फिल्में भी बच्चों तथा सामान्य दर्शकों को दिखायी जाती हैं।

(v) अनुकृति अनुभाग

देश–विदेश से प्रति वर्ष सैकड़ों की सख्या में दर्शक संग्रहालय भ्रमण पर आते हैं। भ्रमण पर आये दर्शकों हेतु जीवन पर्यन्त संग्रहालय की स्मृति अपने साथ रखने के उद्देश्य से संग्रहालय द्वारा उत्कृष्ट कलाकृतियों की फाइबर/ प्लास्टर कास्ट अनुकृति तैयार कर विक्रय की जाती है। इसके अतिरिक्त संग्रहालय द्वारा समय–समय पर देश एवं प्रदेश के विभिन्न भागों में आयोजित भिन्न–2 प्रकार के समारोह/प्रदर्शनियों में संग्रहालय द्वारा प्रतिभाग किया जाता है। जिसमें अनुकृतियों के माध्यम से दर्शकों को संग्रहालय की कलाकृतियों के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध कराई जाती है।

3– प्रशासनिक क्षेत्र (ADMINISTRATIVE AREA)

डॉ. आनन्द कुमार सिंह
निदेशक, राज्य संग्रहालय, लखनऊ

संग्रहालय के प्रथम तल पर निदेशक कक्ष, कार्यालय एवं लेखानुभाग स्थित है। इसके अतिरिक्त विभिन्न तलों पर संग्रहालय के अधिकारियों एवं कर्मचरियों के शासकीय कक्ष, विभिन्न अनुभाग एवं आरक्षित संकलन स्थित हैं।

संग्रहालय प्रबन्धन

संग्रहालय सुरक्षा

संग्रहालय की बहुमूल्य कलाकृतियों की सुरक्षा हेतु संग्रहालय भवन में यथा स्थान अग्निशमन यंत्र, सी.सी.टी.वी. कैमरा, मेटल डिटेक्टर, स्मोक डिटेक्टर आदि स्थापित किये गये हैं। संग्रहालय मानकों के अनुसार दर्शकों के आवागमन हेतु एक ही गेट मौजूद है तथा आपातकाल की स्थिति से निबटने के लिये एक आपात कालीन गेट भी उपलब्ध है। संग्रहालय भवन की सुरक्षा हेतु रोटेशन पर चौकीदारों की ड्यूटी लगाई जाती है तथा पुलिस गार्ड भी तैनात रहते हैं। वीथिकाओं की सुरक्षा हेतु उनमें वीथिका परिचर तैनात रहते हैं। इसके अतिरिक्त संग्रहालय की सुरक्षा व्यवस्था को चुस्त–दुरुस्त रखने के उद्देश्य से संग्रहालय प्रशासन द्वारा एक टीम भी गठित की गयी है।

शोध कार्य

संग्रहालय अनौपचारिक शिक्षा का माध्यम होने के साथ ही शोध का केन्द्र भी हैं। राज्य संग्रहालय लखनऊ के विभिन्न अनुभागों में संग्रहीत पुरातत्त्व, प्राकृतिक इतिहास, मुद्राशास्त्र, सज्जाकला, कलात्मक वस्तुएं आदि का अमूल्य संग्रह है। तमाम शोधार्थियों द्वारा इन पर आधारित विभिन्न प्रकार के शोध कार्य सम्पन्न किये जाते हैं।

शोध के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करते हुए छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा राज्य संग्रहालय को वर्ष 1975 में शोध संस्थान घोषित किया

आरक्षित संकलन में शोध कार्य

गया। इसके अन्तर्गत राज्य संग्रहालय के पुरातत्त्व संग्रह पर आधारित कलाकृतियों से सम्बन्धित विषयों में विश्वविद्यालय में पंजीकृत शोधार्थियों द्वारा संग्रहालय के निदेशक के सहपर्यवेक्षण में शोध कार्य किया जाता है।

राज्य संग्रहालय द्वारा वर्ष 2011 में शोध की ओर एक और कदम बढ़ाया गया, जिसके अन्तर्गत राज्य संग्रहालय, लखनऊ के प्राकृतिक इतिहास, पुरातत्त्व, कला का इतिहास, मुद्राशास्त्र तथा चित्रकला आदि अनुभागों को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ की अधिशासी समिति द्वारा शोध हेतु चयनित किया गया है, साथ ही साथ राज्य संग्रहालय को शोध केन्द्र भी घोषित किया गया। उक्त विश्वविद्यालय में शोध हेतु शोधार्थी अपना पंजीकरण कराकर राज्य संग्रहालय के निदेशक/सहायक निदेशक के सह पर्यवेक्षण में संग्रहालय की कलाकृतियों पर शोध कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।

शैक्षिक कार्यक्रम

राज्य संग्रहालय द्वारा वर्ष पर्यन्त विभिन्न दर्शक समूहों पर केन्द्रित भिन्न–भिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

1. कला अभिरूचि पाठ्यक्रम

छात्रों, शोधार्थियों एवं बुद्धिजीवियों में सांस्कृतिक धरोहर के प्रति उत्सुकता एवं अभिरूचि को विकसित करने के उद्देश्य से संग्रहालय द्वारा प्रतिवर्ष पन्द्रह दिवसीय कला एवं अभिरूचि पाठ्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्वान वक्ता, विषय विशेषज्ञों द्वारा संग्रहालय विधा के विभिन्न विषयों यथा पुरातत्त्व, कला एवं इतिहास, सज्जाकला, कलात्मक वस्तुएँ, पाण्डुलिपि, चित्रकला, मुद्राशास्त्र आदि विषय पर व्याख्यान दिये जाते हैं।

2. राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय दिवस/सप्ताह का आयोजन

संग्रहालय द्वारा विभिन्न दिवसों यथा–विश्व संग्रहालय दिवस 18 मई, विश्व धरोहर दिवस 18 अप्रैल, विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून, भूजल सप्ताह आदि अवसरों पर अस्थाई

प्रदर्शनी, व्याख्यान, विभिन्न प्रकार की शैक्षिक प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया जाता है।

3. संगोष्ठी / कार्यशाला / विचार गोष्ठी

पुरातत्त्व, कला, इतिहास, मुद्राशास्त्र, बौद्धकला, जैन कला, सज्जा कला, मिस्र की सभ्यता, चित्रकला, प्राकृतिक इतिहास आदि विषयों पर संग्रहालय द्वारा आम जन–मानस, शोधार्थियों स्कूली छात्र / छात्राओं के ज्ञानवर्धन हेतु संगोष्ठी / कार्यशाला / विचार गोष्ठी आदि का वर्ष पर्यन्त आयोजन किया जाता है।

4. डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल स्मृति व्याख्यान

मूर्तिकला के क्षेत्र में डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल का एक महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य संग्रहालय, लखनऊ के पुरातत्त्व अनुभाग पर आधारित एक परिचय पुस्तिका वर्ष 1940 में आप द्वारा मुद्रित करायी गयी थी। इसके अतिरिक्त India as known to Panini, Master Pieces of Mathura Sculpture, Indian Art Vol - I & II, Evolution of Hindu Temple, Chakra Dhwaja or Wheel Flame of India आदि महत्वपूर्ण पुस्तकें आपकी कृतियों में से एक हैं। इनकी विद्वत्ता की स्मृति और सम्मान में राज्य संग्रहालय, लखनऊ द्वारा प्रतिवर्ष वासुदेव शरण अग्रवाल स्मृति व्याख्यान आयोजित किया जाता है।

संग्रहालय दर्शक

राज्य संग्रहालय, लखनऊ में देश–विदेश से बड़ी संख्या में दर्शक प्रति वर्ष संग्रहालय भ्रमण हेतु आते हैं। दर्शकों की संख्या मुख्यतः बिक्री काउन्टर की टिकट बिक्री से तथा विद्यालयों के छात्र / छात्राओं के समूहों की संख्या से मापी जाती है। संग्रहालय में स्कूल / कालेज के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक समूह तथा उनके साथ अध्यापकों का प्रवेश निःशुल्क है।

अविस्मरणीय तथ्य

सुविधाएं

- ✓ छात्र समूह तथा उनके साथ अध्यापकों का प्रवेश निःशुल्क ।
- ✓ संग्रहालय भ्रमण पर आये दर्शकों की मांग पर निःशुल्क गाइड सेवा।
- ✓ वर्ष पर्यन्त शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन।
- ✓ संग्रहालय के प्रकाशन, छायाचित्र, अनुकृति के विक्रय हेतु भूतल पर सोविनियर शॉप।
- ✓ वीथिकाओं से सम्बन्धित जानकारी उपलब्ध कराये जाने हेतु निःशुल्क फोल्डर।
- ✓ संग्रहालय से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर आधारित फिल्म शो।
- ✓ संग्रहालय भवन के मुख्य द्वार एवं प्रत्येक वीथिका तक पहुँचने हेतु रैम्प व्यवस्था।
- ✓ दिव्यांग, वृद्ध, तथा छोटे बच्चों के साथ माताओं हेतु लिफ्ट सुविधा।
- ✓ संग्रहालय के सभी तलों पर आराम हेतु कुर्सियाँ।

संग्रहालय पहुँचने का मार्ग

पैदल पथ : संग्रहालय हज़रत गंज चौराहे से 10–15 मिनट की पैदल दूरी पर स्थित है।

रेल द्वारा : लखनऊ शहर के ब्रॉडगेज लाइन का चारबाग एवं ऐशबाग़ रेलवे स्टेशन मात्र 15–20 मिनट की दूरी पर स्थित है।

बस द्वारा : आलमबाग बस स्टैण्ड मात्र 30 मिनट की दूरी पर है तथा चारबाग बस स्टैण्ड मात्र 20 मिनट की दूरी पर स्थित है।

हवाई अड्डा : चौधरी चरण सिंह अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा लगभग 15 किमी की दूरी पर स्थित है।

मेट्रो द्वारा : निकटतम मेट्रो स्टेशन हज़रत गंज है।

संग्रहालय खुलने का समय : मंगलवार – रविवार : पूर्वाह्न 10:30 से अपराह्न 04:30 बजे तक

अवकाश : सोमवार एवं माह के द्वितीय शनिवार के बाद पड़ने वाला रविवार तथा अन्य सभी राजपत्रित अवकाश में संग्रहालय बन्द रहता है।

प्रवेश टिकट : पाँच वर्ष तक निःशुल्क

5–12 वर्ष तक	–	2.00 रु
12 वर्ष के ऊपर	–	5.00 रु
विदेशी पर्यटक	–	50 रु
कैमरा शुल्क	–	20 रु

शैक्षिक भ्रमण पर आये छात्र समूह का प्रवेश निःशुल्क।

पता : राज्य संग्रहालय, लखनऊ बनारसीबाग स्थित नवाब वाजिद अली शाह, प्राणि उद्यान परिसर में हज़रत गंज के निकट स्थित है। अधिक जानकारी हेतु इस पते पर सम्पर्क करें।

निदेशक, राज्य संग्रहालय, लखनऊ, बनारसीबाग, चिड़ियाघर परिसर, लखनऊ–226001, फोन–0522–2206157, फैक्स–0522–2206158

email- statemuseumlucknow@gmail.com

सूची-I
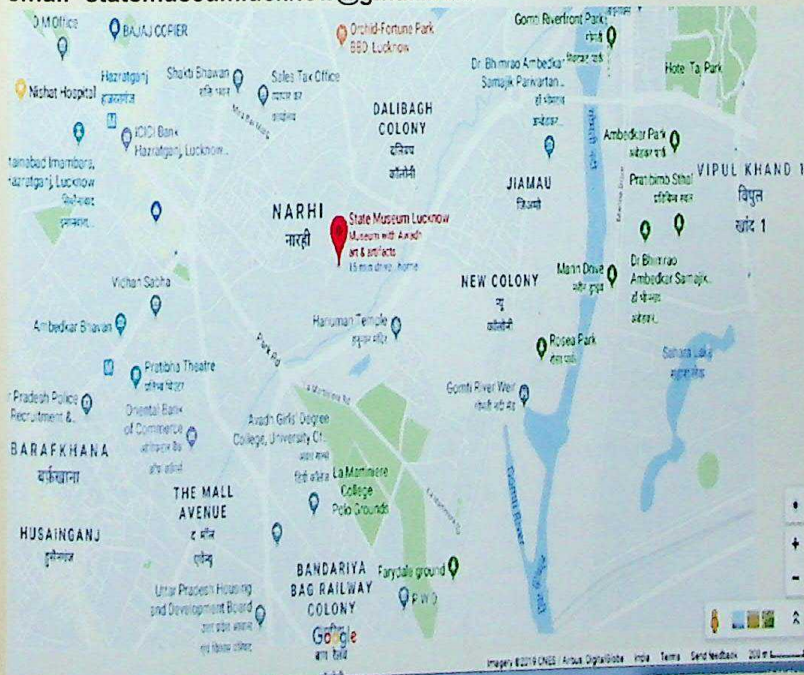
राज्य संग्रहालय, लखनऊ एवं उ0प्र0 संग्रहालय निदेशालय लखनऊ के निदेशक

1. **श्री मदन मोहन नागर,** एम.ए., यू.पी.ई.एस.
   (03 अक्टूबर, 1953 से 28 जुलाई, 1960)
2. **श्री आर. बी. माथुर** — कार्यवाहक
   (29 जुलाई, 1960 से.......)
3. **श्री सत्या शरूआ** — कार्यवाहक
   (.......15 मई, 1968)
4. **डॉ. नीलकंठ पुरूषोत्तम जोशी**
   (16 मई, 1968 से 30 अप्रैल, 1980)
5. **डॉ. रमेश चन्द्र शर्मा**
   (01 मई, 1980 से 30 मई, 1986)
6. **डॉ. शिव दयाल त्रिवेदी**
   (31 मई, 1986 से 10 जनवरी, 1991)
7. **श्री आर. पी. शुक्ला** — कार्यवाहक
   (11 जनवरी 1991 से 03 सितम्बर 1991)
8. **श्री जितेन्द्र कुमार** — कार्यवाहक
   (04 सितम्बर, 1991 से 21 जनवरी, 1993)
9. **डॉ. शिव दयाल त्रिवेदी**
   (22 जनवरी, 1993 से 28 मई, 1996)
10. **डॉ. आनन्द कुमार सिंह** — कार्यवाहक
    (29 मई, 1996 से 30 जून, 1996
11. **डॉ. शिव दयाल त्रिवेदी**
    (01 जुलाई, 1996 से 04 नवम्बर, 1997)
12. **डॉ. राकेश तिवारी** — कार्यवाहक
    (05 नवम्बर, 1997 से 21 मई, 1998)
13. **डॉ. शिव दयाल त्रिवेदी**
    (22 मई, 1998 से 31 अगस्त, 1998)
14. **डॉ. अरविन्द कुमार श्रीवास्तव** — कार्यवाहक
    (01 सितम्बर, 1998 से 29 अगस्त, 2000)
15. **डॉ. अरविन्द कुमार श्रीवास्तव**
    (30 अगस्त, 2000 से 30 जून, 2001)

16. श्री जितेन्द्र कुमार
(01 जुलाई, 2001 से 02 सितम्बर, 2002)

उत्तर प्रदेश संग्रहालय निदेशालय का गठन (2002)

1. श्री जितेन्द्र कुमार
(03 सितम्बर, 2002 से 22 मार्च, 2006)
2. डॉ. राकेश तिवारी — कार्यवाहक
(23 मार्च, 2006 से 15 मई 2006)
3. श्री जितेन्द्र कुमार
(16 मई, 2006 से 30 जून 2008)
4. डॉ. राकेश तिवारी
(01 जुलाई, 2008 से 30 मई, 2009)
5. श्री आर.सी. तिवारी
(31 मई, 2009 से 31 अगस्त, 2009)
6. डॉ. राकेश तिवारी — कार्यवाहक
(01 सितम्बर 2009 से 28 जुलाई, 2010
7. श्री आर.सी. तिवारी
(29 जुलाई, 2010 से 31 जुलाई 2010
8. डॉ. राकेश तिवारी — कार्यवाहक
(01 अगस्त, 2010 से 16 अक्टूबर, 2011)
9. डॉ. ए.के. पाण्डेय — कार्यवाहक
(17 अक्टूबर, 2011 से 31 जुलाई, 2012)
10. डॉ. राकेश तिवारी — कार्यवाहक
(01 अगस्त, 2012 से 12 जून, 2013)
11. डॉ. ए.के. पाण्डेय — कार्यवाहक
(13 जून, 2013 से 17 अप्रैल, 2016)
12. डॉ. आनन्द कुमार सिंह — कार्यवाहक
(18 अप्रैल, 2016 से 24 जून, 2016)
13. श्री मनोज कुमार सिंह — कार्यवाहक
(24 जून, 2016 से 06 सितम्बर, 2016)
14. डॉ. हरि ओम आई.ए.एस. — कार्यवाहक
(07 सितम्बर, 2016 से 29 मई, 2017)
15. डॉ. आनन्द कुमार सिंह — कार्यवाहक
(29 मई, 2017 से 17 अगस्त, 2017)
16. डॉ. आनन्द कुमार सिंह
(18 अगस्त, 2017 से कार्यरत)

सूची-II

प्रान्तीय संग्रहालय, लखनऊ के संग्रहालयाध्यक्ष

1. **डॉ. ए.ए. फ्यूहरर,** एम.ए., पीएच.डी.
   (30 मार्च, 1885 से 20 मार्च, 1905)
2. **श्री बाबू गंगाधर गांगुली**
   (21 मार्च, 1905 से 20 दिसम्बर, 1911)
3. **श्री पण्डित दयाराम साहनी,** एम.ए.
   (21 दिसम्बर, 1911 से 10 मार्च, 1913)
4. **श्री पण्डित हीरानन्द शास्त्री,** एम.ए., एम.ओ.एल.
   (11 मार्च, 1913 से 28 मार्च, 1917)
5. **श्री पण्डित के.एन. दीक्षित,** एम.ए.
   (29 मार्च, 1917 से 06 फरवरी, 1918)
6. **श्री बाबू प्रयाग दयाल**
   (07 फरवरी, 1918 से 27 जनवरी, 1920)
7. **श्री के.एन. दीक्षित,** ईस्क्यू, एम.ए.
   (28 जनवरी, 1920 से 02 अगस्त, 1920)
8. **राय बहादुर बाबू प्रयाग दयाल,** इस्क्यू, एम.आर.ए.एस.
   (03 अगस्त, 1920 से 01 फरवरी, 1940)
9. **डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल,** इस्क्यू, एम.ए., एल.एल.बी., पीएच.डी., डी.लिट.
   (02 फरवरी, 1940 से 22 जुलाई, 1946)
10. **श्री मदन मोहन नागर,** एम.ए., यू.पी.ई.एस.
    (23 जुलाई, 1946 से 30 अगस्त, 1951)
11. **श्री के.डी. बाजपेई,** एम.ए., यू.पी.ई.एस. — कार्यवाहक
    (31 अगस्त, 1951 से 31 दिसम्बर, 1951)
12. **श्री मदन मोहन नागर,** एम.ए., यू.पी.ई.एस.
    (01 जनवरी, 1952 से 02 अक्टूबर, 1953)

सूची-III

प्रान्तीय संग्रहालय, लखनऊ की समिति के अध्यक्ष

1. **श्री एच.वी. लोवेट,** आई.सी.एस., सी.एस.आई.
   (अप्रैल, 1912 से मार्च, 1914)
2. **श्री आर. बर्न,** आई.सी.एस., सी.एस.आई.
   (अप्रैल 1914 से मार्च, 1915)
3. **श्री एच.वी. लोवेट,** आई.सी.एस., सी.एस.आई.
   (अप्रैल, 1915 से मार्च, 1917)
4. **श्री सी.ई. वाईल्ड,**
   (अप्रैल, 1917 से मार्च, 1918)
5. **श्री एल.सी. पोर्टर,** आई.सी.एस.
   (अप्रैल, 1918 से मार्च, 1919)
6. **श्री सी.ए. सिल्बेर्राड,** आई.सी.एस.
   (अप्रैल, 1919 से दिसम्बर, 1919)
7. **श्री एल.सी. पोर्टर,** आई.सी.एस., सी.एस.आई., सी.आई.ई.
   (जनवरी, 1920 से अप्रैल, 1920)
8. **श्री डब्ल्यू.ई.एम. कैम्पबेल,** ईस्क्यू, आई.सी.एस.
   (मई, 1920 से अगस्त, 1920)
9. **श्री एल.एम. जॉपलिंग,** आई.सी.एस.
   (सितम्बर, 1920 से जुलाई, 1921)
10. **श्री डब्ल्यू.ई.एम. कैम्पबेल,** ईस्क्यू, आई.सी.एस.
    (अगस्त, 1921 से अक्टूबर, 1921)
11. **श्री जे.सी. फाउन्थोर्पे,** एम.सी., सी.बी.ई., आई.सी.एस.
    (नवम्बर, 1921 से जून, 1922)
12. **श्री आर. बर्न,** ईस्क्यू, आई.सी.एस., सी.एस.आई.
    (जुलाई, 1922 से अक्टूबर, 1922)

13. **श्री एच. नेलसन राइट,** ईस्क्यू, आई.सी.एस.
(नवम्बर, 1922 से जनवरी, 1923)

14. **श्री आर. बर्न,** ईस्क्यू, आई.सी.एस., सी.एस.आई.
(फरवरी, 1923 से मार्च, 1923)

15. **श्री एल.एम. जॉपलिंग,** आई.सी.एस.
(अप्रैल, 1923 से अगस्त, 1923)

16. **श्री आर. बर्न,** ईस्क्यू, आई.सी.एस., सी.एस.आई.
(सितम्बर 1923 से अगस्त, 1924)

17. **श्री डब्ल्यू.एस. कैसेल्स,** ईस्क्यू, ओ.बी.ई., आई.सी.एस.
(सितम्बर, 1924 से अक्टूबर, 1924)

18. **श्री आर. बर्न,** ईस्क्यू, आई.सी.एस., सी.एस.आई.
(नवम्बर, 1924 से जनवरी, 1925)

19. **श्री डब्ल्यू.एस. कैसेल्स,** ईस्क्यू, ओ.बी.ई., आई.सी.एस.
(फरवरी, 1925 से मई, 1925)

20. **श्री पन्ना लाल,** ईस्क्यू, आई.सी.एस.
(जून, 1925 से अगस्त, 1925)

21. **श्री डब्ल्यू.एस. कैसेल्स** ईस्क्यू, ओ.बी.ई., आई.सी.एस.
(सितम्बर, 1925 से मार्च, 1926)

22. **श्री लाला सीताराम साहिब,** बी.ए., एम.आर.ए.एस.
(अप्रैल, 1926 से जुलाई, 1926)

23. **श्री डब्ल्यू.एस. कासेल्स,** ईस्क्यू, ओ.बी.ई., आई.सी.एस.
(अगस्त, 1926 से मार्च, 1927)

24. **श्री एस.जी.डी.ई. आयरलैण्ड**
(अप्रैल, 1927 से मार्च, 1928)

25. **श्री डब्ल्यू.एस. कैसेल्स,** ईस्क्यू, ओ.बी.ई., आई.सी.एस.
(अप्रैल, 1928 से मार्च, 1929)

26. **श्री एच.एस. क्रॉसवैट,** आई.सी.एस., सी.आई.ई.
(अप्रैल, 1929 से मार्च, 1930)

27. **श्री एच.जी. वाल्टन,** आई.सी.एस.
(अप्रैल, 1930 से मार्च, 1931)

28 **श्री जी.के. डार्लिग,** आई.सी.एस.

(अप्रैल, 1931 से मार्च, 1935)

29. **श्री जे.एफ. सेल** आई.सी.एस.

(अप्रैल, 1935 से मार्च, 1936)

30. **श्री जी.के. डार्लिग,** आई.सी.एस.

(अप्रैल, 1936 से मार्च, 1937)

31. **श्री जी.एम. हार्पर,** आई.सी.एस.

(अप्रैल, 1937 से मार्च, 1939)

32. **श्री टी.बी. डब्ल्यू. बिशप,** आई.सी.एस.

(अप्रैल, 1939 से मार्च, 1941)

सूची-IV

संस्कृति विभाग उ.प्र. के अन्तर्गत उ.प्र. संग्रहालय निदेशालय के नियंत्रणाधीन संग्रहालयों की सूची

1. राज्य संग्रहालय, लखनऊ (1863)
2. राजकीय संग्रहालय, मथुरा (1874)
3. राजकीय संग्रहालय, झांसी (1978)
4. राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर (1988)
5. अन्तर्राष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय एवं आर्ट गैलरी, अयोध्या (1988)
6. लोक कला संग्रहालय, लखनऊ (1989)
7. जनपदीय संग्रहालय, सुलतानपुर (1989)
8. राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर (1995)
9. राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ (1996)
10. राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, कन्नौज (1996)
11. राजकीय बौद्ध संग्रहालय, पिपरहवा–सिद्धार्थनगर (1997)
12. राजकीय जैन संग्रहालय, मथुरा (2003)
13. डॉ. भीमराव अम्बेडकर संग्रहालय एवं पुस्तकालय, रामपुर (2004)
14. पं. बिरजू महाराज कालका बिन्दादीन ड्योढ़ी व कथक संग्रहालय, लखनऊ (2016)
15. स्व. लाल बहादुर शास्त्री स्मृति भवन संग्रहालय, रामनगर, वाराणसी (2018)
16. बाल संग्रहालय, कन्नौज (निर्माणाधीन)
17. थारू जनजाति सस्ंकृति संग्रहालय, बलरामपुर (निर्माणाधीन)
18. राजकीय पुरातत्त्व संग्रहालय, फर्रूखाबाद (निर्माणाधीन)

मिस्र की ममी

राज्य संग्रहालय, लखनऊ

राज्य संग्रहालय, लखनऊ
बनारसी बाग, हज़रतगंज, लखनऊ–226001
फोन : 0522–2206157, फैक्स : 2206158
ईमेल : statemuseumlucknow@gmail.com